R.S.

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मैः श्री गुरूवे नमः ।।

शिव

वर्ष १३ | आषाढ़ सं० २०२४ वि० जून १९६७ई० | तरंग ४

प्रार्थना

१—धन्य धन्य तू परम सनेही ! धन्य दीन हितकारी !
धन्य कृपाला, सहज दयाला, भव भव मेटन हारी ! ।।१।।
२—लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत क्या कोइ जाने !
ऋषि मुनि योगी पार न पावें, ज्ञानी नहिं पहिचाने ।।२।।
३—अगुन सगुन के मध्य विराजै, नहीं ब्रह्म नहीं माया ।
रूप अरूप के वरे परे तुम, नहीं आकाश नहीं छाया ।।३।।
४—सब में व्याप तुम्हारी सत्ता, सत् असत्य के पारा ।
मन बानी की गम नहीं तुम में, सब में सब से न्यारा ।।४।।
५—क्या कह करूं तुम्हारी स्तुति ! अजर अमर अविनाशी ।
निरालम्ब सब के आधारा ! चेतन घन सुख रासी ! ।।५।।
६—गों गोचर जहाँ लग मन जाई, सो नहिं देश तुम्हारा ।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोइ बरने पारा ।।६।।
७—तत्व अतत्व सार असार नहिं, शब्द सुरत नहीं होई ।
संत कहें तुम शब्द रूप हो, और अशब्द गति सोई ।।७।।
८—ऊँची दृष्टि करे जब प्राणी, सार भेद कुछ पावे ।
भेद पाय सरनागत आवे, आवागवन मिटावे ।।८।।
९—दया करो ! करुना चित लाओ ! बख्शो भक्ति विवेका ।
सतगुरु चरन शरन बलिहारी, रहूँ शब्द मिल एका ।।९।।

—❀—

❀ प्राक्कथन ❀

यह नावेल [उपन्यास] कहने के लिये फर्जी और मनगढ़त मान लिया जाय लेकिन यह एकदम फर्जी नहीं है। नाम का उलट फेर जान बूझकर किया गया है मगर बातें सब ठीक हैं।

३०-६-२८

शिवव्रत लाल

यह ऊपर का नोट महर्षि जी महाराज की कलम का भूमिका के रूप में है। इसमें कोई संदेह नहीं कि महर्षि जी ने कुछ घटनाओं को लेकर उन्हें बड़े रोचक ढङ्ग पर उपन्यास का रूप दिया है। प्रेम की छाप जब दिल पर जम जाती है तो वह किस प्रकार अपना काम करती है इसका विवरण पूर्ण रूप से इसमें मिलेगा। विचार का क्या प्रभाव होता है, मां बाप के विचारों का सन्तान पर क्या प्रभाव पड़ता है, संतान क्यों बुरी और अच्छी होती हैं, जातियों का जन्म और कर्म से क्या सम्बन्ध है, दूसरे के धन के अपहरण का मनुष्य के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है आदि आदि बातों पर विचार करने और समझने सोचने की पूरी सामिग्री इस उपन्यास में आपको मिलेगी। इस दृष्टि से यह पुस्तक **उपन्यास** होने के साथ साथ अमूल्य शिक्षाप्रद भी है और संतान सुधार, योग्य संतान उत्पन्न करने के लिये बहुत लाभदायक सिद्ध होगी। आशा है पाठक इससे समुचित लाभ उठायेंगे।

देवीचरन मीतल

❀ ❀

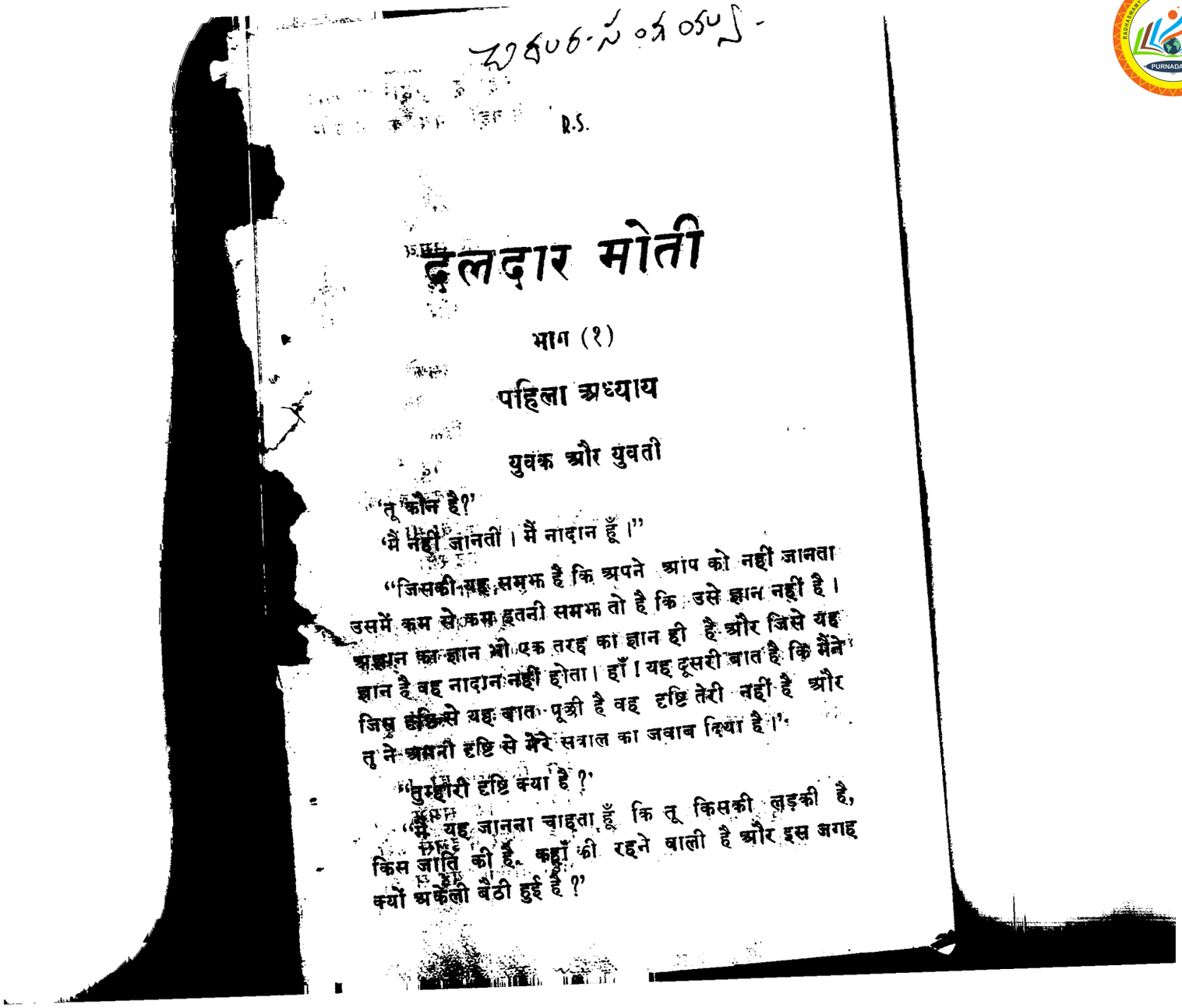

R.S.

दुलदार मोती

भाग (१)

पहिला अध्याय

युवक और युवती

'तू कौन है?'

'मैं नहीं जानती। मैं नादान हूँ।"

"जिसकी यह समझ है कि अपने आप को नहीं जानता उसमें कम से कम इतनी समझ तो है कि उसे ज्ञान नहीं है। अज्ञान का ज्ञान भी एक तरह का ज्ञान ही है और जिसे यह ज्ञान है वह नादान नहीं होता। हाँ! यह दूसरी बात है कि मैंने जिस दृष्टि से यह बात पूछी है वह दृष्टि तेरी नहीं है और तू ने अपनी दृष्टि से मेरे सवाल का जवाब दिया है।"

'तुम्हारी दृष्टि क्या है?'

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि तू किसकी लड़की है, किस जाति की है, कहाँ की रहने वाली है और इस जगह क्यों अकेली बैठी हुई है?'

"यही बातें हैं जिनका मुझे पता नहीं हैं। तुम्हारे आखिरी सवाल का जवाब दे सकती हूँ। मैं यहाँ समय काटने और दिल बहलाने के लिए बैठी हूँ।"

"क्या तू दुःखी है ?'

"नहीं ! तुमने यह नतीजा कैसे निकाला ?'

"तू ने कहा कि यहाँ दिल बहलाने और समय काटने के लिये बैठी हूं। मैंने इन शब्दों को सुन कर यह समझा कि तेरा दिल बहला हुआ नहीं है, तू दुखी है और तेरा समय नहीं कट रहा है।'

"आदमी भी खूब है ! दिल का बहलाना उसको एक राह पर लगाना है। मेरे सर के बाल बिखरे हुये हैं। उनको गुथ-कर जूड़े की सूरत में बाँध लिया। इसी तरह दिल इधर उधर सोचा करता था ! इसे एक ओर लगा दिया। यह दिल का बहलाना है। इसमें मुसीबत या दुःख क्या है ? दिल को कोई काम धन्धा नहीं था। समय काटे हुए नहीं कटता था। यहाँ आई प्राकृतिक दृश्य देखने लगी। अब समय कट रहा है। इस समय के न कटने को कोई दुःख कैसे कह सकता है।'

"तू तो बड़ी समझदार है। अच्छी सूझ बूझ पाई है। मैं ने आज तक इस तरह बात करते हुए किसी को नहीं सुना। फिर तू कैसे कहती है कि तुझे समझ नहीं है !'

"मैं ने तुम से कब कहा कि समझ बूझ से खाली हूँ ! तुमने मुझसे पूछा—'तू कौन है ?' मैं ने जवाब दिया—'मैं नहीं जानती।' इससे यह नतीजा कैसे निकालते हो कि मैं समझ बूझ से खाली हूं ! मेरा तो विचार है कि समझ बूझ से खाली सृष्टि में कोई भी चीज नहीं है। फिर मैं इससे कैसे खाली रहती। हाँ ! मैं अपने आप को नहीं जानती। यह सच्ची

बात है और क्या आश्चर्य है कि मेरी तरह औरों को भी यह ज्ञान न हो !"

"तू ऐसी बातें कह रही है जिन की मुझे समझ नहीं है।"

"ऐसा ही होगा। समय की बात है। आदमी की जैसी दृष्टि होती है वह वैसा ही समझता है। तुमने अनसमझी की नजर बनाई। अब वैसे ही दृश्य देखने लगे। जैसा जिस समय जिसका खयाल उस समय उसका वैसा हाल ! इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यह दृष्टि सृष्टि का भेद है आप यह बात मुझसे कही थी।"

"सच है ! मैंने ऐसा कहा था।"

"फिर उस समय तुम्हारी नजर क्या थी ?"

"मैं यहां अकेला आया। तुझे अकेले बैठी हुई पाया। पूछा तू कौन है और तूने कहा—'मैं नहीं जानती।"

"यह जवाब ठीक नहीं है। अकेले तुम आये। मैं भी अकेली हूँ। यह सच है। आदमी दुनिया में अकेले आता है अकेले जाता है, यह मामूली बात है लेकिन अब तो न तुम अकेले हो और न मैं अकेली रही। एक थे।-एक से दो हो गये और जब दो हैं तो कोई किसी को अकेला कैसे कह सकता है ! अकेलापन तो उसी वक्त जाता रहा था। अब दुकेलापन है और तुम्हारा पूछना गछना दुकेलेपन की वजह से है। अकेलेपन में कौन किस से क्या पूछे और क्या सुने। किसे जाने और किसे न जाने। यहाँ तक तो तुम ठीक हो। दो के होते ही बात होने लगी लेकिन तुमने यह नहीं बताया कि तुम्हारी नजर क्या थी और किस नजर से यह सवाल किया गया था ! वह सवाल अब तक ज्यों का त्यों है।"

"तेरी समझ अजीब है। मैं तेरी जाति, तेरा घर और तेरे

माँ बाप का पता जानना चाहता था और यह कि तू क्या कर रही है ?"

"आखिरी सवाल का तो मैंने जवाब दे दिया कि दिल बहला रही हूँ। मैं किस जाति की हूँ यह नहीं जानती। मैं किसकी लड़की हूं इसका भी मुझे पता नहीं है। इन दो सवालों का जवाब मैं तमको नहीं दे सकती। घर द्वार के लिये इतना कह सकती हूँ कि यहां से थोड़ी दूर पर एक फूस का झोंपड़ा है, मैं उसमें रहती हूँ। इतना ही मैं जानती हूँ। क्या इससे तुम्हारी तसल्ली हुई या नहीं ?"

"नहीं !"

"मैं और भी कुछ जानना चाहता हूं ?"

"तो फिर जानो। रोका किसने है।"

"मैं और भी कुछ पूछना चाहता हूँ।"

"पूछो, जो मैं जानती हूं तुमसे कहूंगी। जो नहीं जानती उसका जवाब नहीं दूँगी।"

'झोंपड़े में तेरे साथ और भी कोई रहता है या तू अकेली है ?"

"मेरे साथ एक बुढ़िया माई है।"

"क्या वह तेरी मां है ?"

"नहीं। वह एक नजर से मेरी मां भी है। उसी ने मुझे पाला पोसा है। दूसरी नजर से वह मेरी माँ नहीं हैं। मैं उसके पेट से पैदा नहीं हुई"

"उसने तुझे बताया होगा कि तू कौन है।"

"उसने मुझे यह बात नहीं बताई।"

"आश्चर्य की बात है।"

"अश्चर्य क्या है ! सभी अपने भेद को छुपाते हैं। उसने

भी छुपा रक्खा है। मैंने दो एक बार पूछा, उसने जवाब नहीं दिया, चुप हो रही। मैंने हठ करना ठीक नहीं समझा।"

"तू बड़ी समझदार है।"

"किस तरह ?"

"छेड़ छाड़ नहीं करती। जो हालत है उसी में खुश रहती हूँ।"

"क्या यह अच्छी हालत है ?"

"मैं नहीं कह सकता। तेरी जगह मैं होता तो पूछ गछ किये बिना कभी न मानता।"

"इस से लाभ क्या होता ?"

"कुछ नहीं।"

"यही समझ कर मैं चुप हो रही। व्यर्थ बातों में कोई क्यों पड़े।"

"तभी तो मैंने तुझे समझदार कहा है।"

"यह तुमने कई बार कहा है। अभी मुझसे मिले हुये या मेरे पास आये तुमको बहुत देर नहीं हुई। दस मिनट से अधिक नहीं हुये हैं और तुमने कई बार मुझे समझदार बताया और मैं सुनकर खुश हो गई। अपनी तारीफ सबको अच्छी लगती है।"

"तू उस बुढ़िया को क्या कहती है ?"

"मैं उसे माई कहती हूं और ऐसा ही समझती हूँ। कहीं वह मेरी माँ होती तो अच्छा होता।"

"इससे पता लगता है कि तू दुःखी है।"

"मैं दुखी नहीं हूँ। यहाँ तुम भूल पर हो। जानना अच्छा है। अज्ञान बुरा है। इस दृष्टि से मैं ने कहा है कि अगर वह मेरी मां होती तो अच्छा होता! लेकिन अगर उसने किसी कारण से नहीं बताया तो उसकी खुशी। मैं उसे नाखुश करना

नहीं चाहती। वह मुझे प्यार करती है और यह मेरे खुश रहने के लिये काफी है। प्रेम और प्यार से बढ़कर खुशी किसी बात में नहीं है। यह दुनियाँ में सबसे कीमती चीज है। मैं इससे बढ़कर किसी बात को नहीं समझती ?'

"तू बड़ी समझदार है।"

"यह तो बताओ तम यह सवाल मुझसे क्यों करते हो।"

"इस समय मैं यहाँ आया। मैं भी अकेला था। तू भी अकेली थी। मुझे आश्चर्य हुआ। बात चीत करना मनुष्य का स्वभाव है। बात छिड़ गई। इसके सिवा और कोई बात नहीं है।"

"ठीक है लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि तुम भी अकेले हो। तुमको अपने अकेले होने पर आश्चर्य नहीं होता। मेरे अकेले रहने से तुम चकित हो रहे हो। इस से बढ़ कर अजीब क्या बात हो सकती है।"

"तू बड़ी समझदार है।"

"क्या तुम समझदार नहीं हो ?"

"क्यों नहीं ! समझ बूझ मुझ में भी है। समझ बूझ से खाली मैं भी नहीं हूँ। समझ बूझ न होती तो मैं क्यों यह पूछा पेखी करता"

"सच है। अच्छा होता कि तुम इसी तरह अपने लिये भी सवाल जवाब करते। मुझे जानो तो क्या और नहीं जानो तो क्या। तुम आप कौन हो। यह सवाल सब से जरूरी है। दूसरों के जानने से अपना जानना अच्छा है।"

"मैं जानता हूँ कि मैं कौन हूँ, किस जाति का हूँ, किसका लड़का हूं। ऐसी दशा में किसी से क्या पूछूँ और क्यों पूछूँ।"

"तुम ने मुझे तो नहीं बताया।"

"तू ने इसका सवाल ही नहीं छेड़ा। फिर मैं तुझे कैसे बताता? पूछते तो जवाब देता।'

"सच है। मेरी दृष्टि अपने ऊपर रहती है। मैं यहां आकर सोचती हूं कि मैं कौन हूँ। मैं दूसरों की ओर ध्यान नहीं देती।"

"तब तू दुखी है।'

"नहीं! मुझे कोई दुख नहीं है। जितना मैंने अब तक समझ लिया है वह पर्याप्त तो नहीं है लेकिन उससे मुझे कोई दुःख नहीं है। मैं जिस हाल में हूं उस में खुश हूँ। समय आयेगा जब मुझे अपना हाल मालुम हो जायगा। मैं खुशी से उसका इन्तजार कर रही हूँ।'

"तू बड़ी समझदार है।'

"तो अब बताओ तुम कौन हो?'

"मैं जाति का ब्राह्मण हूं। मेरे बाप बहुत बड़े इलाकेदार हैं। मेरा घर मिरजापुर शहर में है। मैं उनके साथ राधा-**स्वामी धाम** में सत्संग के लिये आया हूं। वह धाम में हैं। मैं सैर के लिये इधर आ निकला। तुझे अकेली पाया। चकित हुआ। लड़कियाँ अकेली नहीं रहतीं और बात चीत का सिलसिला चल निकला।'

"तुम्हारा नाम?'

"सोमदत्त।'

"बाप का नाम?'

"रविदत्त।'

"मैं ने रविदत्त का नाम ... सुना था।'

दूसरा अध्याय

फूस का झोपड़ा, बुढ़िया माई

"तेरा नाम क्या है ?"

"मनोरमा।"

सोमदत्त—"बड़ा ही अच्छा नाम है।"

मनोरमा—"नाम अच्छा हुआ तो क्या हुआ। बात तो तब है जब काम भी अच्छा हो।"

सोमदत्त—"तेरा रंग रूप भी तो बहुत अच्छा और सुन्दर है। केवल नाम ही सुन्दर नहीं है, रूप में भी सुन्दरता है।"

मनोरमा—"रूप सुन्दर हुआ तो क्या! आदत भी सुन्दर हो तब तो बात है। सूरत शक्ल, काम काज, चाल चलन भी सुन्दर हों तब तो तारीफ है। यों कोई क्यों किसी की तारीफ़ करे! नाम और रूप दोनों धोखे की टट्टी हैं। मेरी दृष्टि इनकी ओर नहीं रहती।"

सोमदत्त—"तू समझदार है।"

मनोरमा—"तुम ऐसा कहते हो। माई ऐसा नहीं कहती। वह कहती तो मुझे विश्वास होता। घर के लोग तारीफ करें तो खुशी मिलती है। गैरों की तारीफ क्या है? कुछ नहीं। दूसरों को पूरा पूरा पता क्या रहता है। इनका कहना ...ना व्यर्थ ... है। तुम मुझे क्या जान सकते हो। पन्द्रह ... और वह भी निष्काम। इस ... इसी तरह अगर मैं तुम्हारी ...गी। ... है।"

मनोरमा हँसी— 'म ने तो तारीफ़ के पुल बाँध दिये। मैंने तुम्हारी अब तक कोई तारीफ नहीं की और उस वक्त तक कुछ न कहूँगी जब तक तुम्हारे हालात न मालूम हो जायेंगे।"

सोमदत्त—"इसी लिये मैं तुझे समझदार कहता हूं।"

मनोरमा—"तुम्हारी राय। मैं क्या कह सकती हूँ।"

सोमदत्त—"क्या मैं तेरी माई को देख सकता हूं?"

मनोरमा—"किस लिये?"

सोमदत्त लज्जित हुआ—"यों ही कह रहा था। जैसे तुझ से बिना किसी गरज़ के बात चीत कर रहा हूँ वैसे ही उसको देखूँगा।"

मनोरमा—"पता नहीं। मैं तुमको क्या कहूं। मैं अगर तुम्हारी जगह होती तो कभी ऐसा विचार न करती। दुनिया गरज़ की है और दुनिया को गरज़ है। न बिना गरज़ के कोई कहीं जाना आता है न कुछ करना चाहता है। मेरी समझ में तो दुनिया किसी गरज़ से ही बनाई गई है।"

सोमदत्त—"तो ईश्वर ने हमको किसी गरज़ से पैदा किया होगा?"

मनोरमा—"गरज होगी तब ही तो पैदा किया। बेगरज़ कौन काम करने लगा। जब हमारे तुम्हारे दिलों में गरज का सवाल रहता है तो सृष्टि के हर काम में वही नियम काम करता रहेगा। अगर किसी एक में गरज़ है तो फिर सब में गरज़ होगी!"

सोमदत्त—"क्या इस समय जो तू मेरे साथ बात चीत कर रही है इसको भी कोई गरज़ है?"

मनोरमा—"क्यों नहीं! जब सब में गरज़ है तो इस बात में क्यों गरज़ न होगी!"

सोमदत्त—'तू किस गरज से मुझ से बातें कर रही है ?'

मनोरमा—'मैंने तुमको पहिले ही कह दिया था कि मैं दिल बहलाने के लिये यहां आई हुई हूँ और तुम्हारी बातों से मेरा दिल बहल रहा है। यह गरज है।'

सोमदत्त—'मैं ने तुझ से अभी कहा है कि मेरी इस बात चीत में कोई अपनी गरज नहीं है। तू ने मुझ से यह सवाल नहीं किया कि मैं बेगरज हूँ या नहीं हूँ।'

मनोरमा—'मुझे अपनी गरज से गरज है। दूसरे की गरज जानने की कोई गरज नहीं है और जब मेरी कोई गरज ही नहीं है तो तुमसे क्यों पूछूँ !'

सोमदत्त—'मेरी क्या गरज हो सकती है ?'

मनोरमा—'इसका ज्ञान तो तुमको हो सकता है। जब इधर मेरा ध्यान ही नहीं है तो फिर मैं क्यों तुम से सवाल करूँ ! और तुम्हारी गरज को पूछूँ ! इस से मुझे लाभ क्या होगा ! तुम अपनी गरज के आप जानने वाले हो। तुम वह जानते होगे। मैं क्या जानूँ !'

सोमदत्त—'तू बड़ी समझदार है।'

मनोरमा—'यह तो तुम ने बार बार कहा।'

सोमदत्त—'क्या इस कहने में भी तू कोई गरज समझती है ?'

मनोरमा—'तुम अपनी गरज आप जानो। मुझे इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।'

सोमदत्त—'तो तेरी यह राय है कि मैं माई से न मिलूँ।'

मनोरमा—'बिना गरज के किसी के साथ मिलना जुलना, उठना बैठना, बोलना चालना सब व्यर्थ हैं। तुम मिलो या न

मिलो, तुमको अधिकार है। मेरी समझ में जो आया वह कह दिया।'

सोमदत्त—'माई का क्या नाम है ?'

मनोरमा—'मैं तो उसे माई कहती हूँ। और लोग उसे श्यामा कहते हैं।'

सोमदत्त—'यह किस जाति की है ?'

मनोरमा—'वह अहीरनी है।'

अहीरनी का नाम सुन कर सोमदत्त घबराया। वह हिन्दुओं में अहीरों को सभ्य जाति नहीं समझता था। उसने मनोरमा को ब्राह्मणी या कायस्थ की लड़की समझा था। इसका ख्याली किला टूट गया और वह देर तक सोचता रहा।

सोमदत्त—'क्या तू भी अहीरनी है ?'

मनोरमा—'मैं नहीं जानती।'

सोमदत्त—'आखिर तुझे कुछ तो पता होगा ?'

मनोरमा—'मुझे कुछ पता नहीं और न इसके जानने की मुझे इच्छा है।'

सोमदत्त—'अहीरनी होने में तू खुश है ?'

मनोरमा—'सृष्टि में जो जिस जगह और जहां पैदा हुआ उसी जगह और वहां ही उसकी खूब सूरती है। नाखुन की जगह नाखुन और बालों की जगह बाल अच्छे लगते हैं। अगर यह अपनी जगह से अलग हो जायें तो इनकी खूबसूरती जाती रहती है और हैसियत बिगड़ जाती है। जंगल में हिरन और पानी में मछलियों की जगह है।'

सोमदत्त—'तू बड़ी समझदार है।'

मनोरमा हँसी—'यह जुमला तुम्हारी रागिनी का सम है।'

सोमदत्त—'सम तू किसे कहती है ?'

मनोरमा—'राग में सम और ताल होते हैं। गाने वाले सम ही पर आकर बराबर ठहरते हैं। तुम ने इस जुमले को अपनी बात चीत के सिलसिले का सम बना रक्खा है। जब देखो उलटफेर करके उसी पर आकर टिकते हो।'

सोमदत्त हँस पड़ा—'यह बात सच्ची है।'

मनोरम—'लो अब मैं जाती हूं। तुम मिल गये, बात चीत हो गई, दिल बहल गया। अब बहुत देर तक ठहरना ठीक नहीं है। माई राह देखती होगी।'

मनोरमा उठी, गांव की ओर जाने लगी। यह दोनों उस नाले के पास बैठे हुये थे जो राधास्वामी धाम के पूर्व और दक्षिण की ओर बहा हुआ है। सोमदत्त और मनोरमा दोनों साथ साथ छतमी गाँव की ओर चले जो धाम से थोड़ी दूर पर है।

सोमदत्त—'सुन्दरी ! तू ने मुझे अपने दिल बहलाव का सामान बना रक्खा था।'

सुन्दरी का शब्द सुन कर मनोरमा चौंक पड़ी। 'मैं सुन्दरी नहीं हूं। मेरा नाम मनोरमा है। तुम मेरा नाम भी इतनी जल्दी भूल गये। हाँ ! मैं ने तुम से और तुम्हारी बात चीत से अपना दिल बहला लिया। मेरी गरज इतनी ही थी और इसी को मैं सब कुछ समझती हूं।'

सोमदत्त—'तू बड़ी खुद गरज (स्वार्थी) है।'

मनोरमा—'और तुम क्या हो ? तुम भी तो खुदगरज हो। सारी दुनिया ही खुदगरज है। फिर मैं दुनिया में रहती हुई इससे बच कैसे सकती हूँ !'

सोमदत्त—'दुनिया खुदगरज है ?'

मनोरमा—'खुदगरज नहीं तो और क्या है ?'

सुर नर मुनि की यहि रीती। स्वारथ लाग करैं सब प्रीती॥

यहाँ खुदगरजी के सिवा और कुछ नहीं है।

सोमदत्त—तू भूल रही है। भक्त जो ईश्वर की भक्ति करते हैं बेगरज होते हैं। भक्ति निष्काम होती है।'

मनोरमा—'तुम झूठ कहते हो। भक्ति दुनिया में सब से बढ़ कर खुदगरजी की आदत है। भक्त के ऐसा कोई खुदगरज नहीं होता। इसका पेट सब से बड़ा होता है। और लोग तो थोड़ी थोड़ी चीज पाकर खुश हो जाते हैं। यह इतना लालची होता है कि ईश्वर को अपना बनाना चाहता है। इसकी खुदगरजी की हद ही नहीं है।'

सोमदत्त ने कहा- हम राधास्वामी धाम में आये हैं। क्या हम भी खुदगरज हैं?'

मनोरमा—'तुम अपने दिल में सोचो तो सही! तुम धाम में किसी गरज को लेकर आये हो या बिना गरज के आये हो। माना कि तुम सत्संग करने आये हो। यह सत्संग करना भी गरज नहीं तो क्या है। तुम यहां योग सीखने आये हो। यह योग सीखना भी गरज से खाली नहीं है। यहाँ गरज से खाली कोई जगह नहीं दिखलाई देती। गरज न हो तो कोई न पूजा पाठ करे न कर्म धर्म का ध्यान रक्खे, न वेद शास्त्र पढ़े, न नौकरी खेती और वणिज व्यौपार करे। यह तो ऐसी साधारण बात है जिसे एक बच्चा भी समझ सकता है। तुम तो पढ़े-लिखे आदमी हो।'

इतने में दोनों फूस के झोंपड़े के पास आ गये। श्यामा अहीरनी मनोरमा की राह देख रही थी। उसे एक नवजवान लड़के के साथ देख कर बिगड़ खड़ी हुई और क्रोध से बोली—'जन्म जली! तू कहाँ गई हुई थी! इतनी देर क्यों लगाई? और यह तेरे साथ कौन है?'

मनोरमा ने कहा—'मैं धाम में पूछने गई थी कि कल कितना दूध दही चाहिये जिसे मैं तुमसे कह रक्खूं। जब धाम में हमारे ही यहां से दूध दही जाता है तो हमको चाहिये कि उन लोगों को तकलीफ न होने पाये। थकी माँदी थी। दम लेने के लिये राधास्वामी स्कूल के सामने नाले पर बैठ गई। यह धाम में आये हुये है। मुझ से बात चीत की और तेरे देखने के लिये यहां चले आये।'

श्यामा का क्रोध ठण्डा हुआ। धाम का नाम सुनते ही उसकी हालत बदल गई क्योंकि वह वहां दूध दही पहुंचाने बराबर जाया करती थी और वहाँ के लोगों को अच्छी तरह जानती थी।

तीसरा अध्याय

श्यामा—सोमदत्त

झोंपड़ा छोटा सा था। उस पर पीपल के वृक्ष की घनी छाया थी। यह वही जगह थी जहां अब गांव का प्राइमरी स्कूल बना हुआ है। श्यामा गरीब अहीरनी थी। इसकी देख भाल एक लँगड़ा अहीर करता रहता था। वह मर चुका था। उसके मरते ही उसका अपना कुटुम्ब तीन तेरह हो गया और वहाँ श्यामा ही श्यामा रह गई। उसने दो गायें रख छोड़ी थीं। इनका दूध दही बेचा करती और सुबह शाम गांव के मुखिया के घर पानी भर आती। इसी से उसका खाना कपड़ा चलता था। श्यामा का पति वर्षों पहले मर चुका था। उसने फिर अपना विवाह नहीं किया। गाँव वाले ऐसा कहते हैं कि उसकी अपनी कोई औलाद न थी। मनोरमा ने सच

कहा था। वह उसकी लड़की नहीं थी। उसने उसे बचपन से पाला था। लड़की उससे हिली मिली थी और गाँव के लोग भी उसे श्यामा की लड़की समझते थे। श्यामा एक बात का बहुत ध्यान रखती थी। मनोरमा जब तक बहुत छोटी थी वह श्यामा के साथ औरों के घरों में जाती थी लेकिन श्यामा उससे न अपनी सेवा लेती थी न और किसी की सेवा उसे करने देती थी। जब से राधास्वामी धाम बना और जगह जगह के यात्री और सत्संगी वहाँ सत्संग और यात्रा के लिये आने लगे मनोरमा उनको दूध दही पहुंचाती रहता था। इसमें श्यामा ने कोई बुराई नहीं देखी। बाकी और बातों में वह मनोरमा के साथ इस तरह सलूक करती थी मानो वह किसी ऊँची जाति और बड़े घराने की लड़की है।

श्यामा ने सोमदत्त को सर से पाँव तक देखकर देहाती भाषा में पूछा—'महाराज! मैं गरीब बेवा हूँ। सिवा इस लड़की के और कोई मेरा नहीं है। आप ने कैसे इस झोंपड़े में पाँव रक्खा। यहाँ तो दहा के सिवा धाम का कोई भी आदमी नहीं आता।"

लाला माता बदल दहा अस्सी वर्ष के बूढ़े आदमी हैं जो अब भी जवानों की तरह उत्साही और पुरुषार्थी हैं। यह धाम की ओर से यात्रियों की सेवा का काम करते रहते हैं।

सोमदत्त ने जवाब दिया—इस तेरी लड़की के साथ बात चीत करते हुये मेरे दिल पर ऐसा असर पड़ा कि मैं तेरे देखने के लिये दौड़ा चला आया। यह बड़ी समझदार लड़की है। मालिक ने ऐसी अच्छी बुद्धि इसे दे रक्खी है कि बड़े बड़े पंडित इसकी बात सुन कर दंग हो जाते होंगे। मैंने दिल में सोचा कि जिस स्त्री ने इसे शिक्षा दी होगी वह भी बड़ी समझदार होगी। यह मेरे आने की वजह है। क्या यह तेरी

ही लड़की है ?'

श्यामा मनोरमा की तारीफ सुनकर खुश हो गई। उसने जवाब दिया—'महाराज ! मैं गंवार अहीरनी हूँ। काला अक्षर भैंस बराबर। न मैं पढ़ी लिखी हूं न यहाँ अहीरों के लड़के ही पढ़ते लिखते हैं। जब से यह धाम बना है धाम वाले अहीर केवट काछी मुसहर के लड़कों को जबरदस्ती पकड़ २ कर पढ़ने के लिये मजबूर करते हैं। आशा है आगे चल कर हम में कुछ तालीम की चर्चा फैल जाय। मैं ने मनोरमा को कुछ लिखाया पढ़ाया नहीं। यह स्वयं सिद्ध, स्वयं ज्ञानी और स्वयं समझदार है। यह मेरी अपनी लड़की नहीं है।'

सोमदत्त—'बड़े आश्चर्य की बात है। क्या यह कुछ भी पढ़ी लिखी नहीं है ?'

श्यामा—'यह बेचारी पढ़ना लिखना क्या जाने ! इसने कई बार हिन्दी पढ़ने की इच्छा प्रकट की लेकिन मैं बराबर मना करती चली आई। मैं इसे अपनी आंख की ओट नहीं रखना चाहती। धाम में अच्छे लोग आते हैं। इस लिये मैं ने मनोरमा को वहाँ जाने की इजाजत दे रक्खी है।'

सोमदत्त—'फिर यह इतनी जानकार कैसे हो गई ?'

श्यामा—'जब भंडारे के दिनों में सत्संगी चारों ओर से आते हैं मनोरमा बराबर सत्संग में रहती है। इसे जो कुछ ज्ञान है वह सत्संग की बदौलत है। मैं इतना कह सकती हूं।'

सोमदत्त—'मैं समझ गया। सत्संग की महिमा अपार है। यह तेरी लड़की नहीं है। फिर यह किसकी लड़की है ?'

श्यामा—'यह ऐसा रहस्य है जो मैं किसी को नहीं बताना चाहती। वह समय आयेगा जब मैं इस भेद को खोलूँगी। मैं उसका इन्तजार कर रही हूँ। लड़की कुछ

मयानी हो जाय फिर सारी बातें खोल दूँगी। इस समय कहने सुनने में नुकसान हो जाने का डर है।"

सोमदत्त—"क्या तू इतना भी नहीं बता सकती कि यह किस जाति की है?"

श्यामा—"देखो महाराज! मैं औरत हूं और औरत भी कैसी, गरीब बेवा और अहीरनी। न आगे नाथ न पीछे पगहा। मेरा दुनिया में कोई वली वारिस नहीं है। औरतें बातूनी कहलाती हैं। मैंने सालों से इस भेद को छुपा रक्खा है। मनोरमा से तो मैं ने एक बार कह दिया था कि तु अहीर की लड़की नहीं है। बाकी इस गाँव में आज तक किसी को इस बात का पता नहीं कि यह कौन है। किसी ने मुझ से यह सवाल भी नहीं किया। सब यही जानते हैं कि यह अहीर की लड़की है। मैं न तो इसे किसी के घर जाने देती हूं और न छोटी मोटी सेवा टहल के काम में लगाती हूं। मेरे इस बर्त्ताव को लोग माँ की ममता समझते हैं। तुमने पूछा यह कौन है? मैं ने कह दिया कि यह अहीरनी नहीं है। इतना जवाब तो मैं दे सकती हूँ। बाकी और कुछ कहना नहीं चाहती। उसके लिये न मुझे मजबूरी है न कोई मजबूर कर सकता है।"

सोमदत्त—"जैसे तू ने यह बताया वैसे ही अगर कोई हर्ज न हो तो यह भी बता दे कि यह किस जाति की है?"

श्यामा ने फिर सोमदत्त को गहरी दृष्टि से देखा—"हैं! तुम कौन हो? तुम यों ही नहीं पूछ रहे होगे। जब मुझे इन सवालों का ठीक-ठीक जवाब मिल जायगा तब मैं सोचूँगी कि तुम पर विश्वास किया जा सकता है या नहीं।"

सोमदत्त—"मैं तेरे भाव का आदर करता हूँ। मैं यों ही नहीं पूछता। जब मैं ने मनोरमा को देखा, उसकी बातें सुनी,

मुझे विश्वास होगया कि यह किसी अच्छे घर और ऊँची जाति की लड़की है।"

श्यामा—"तुमने अभी मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। तुम भी बतलाओ कि तुम कौन हो ?"

सोमदत्त—"माई ! मैं जाति का ब्राह्मण हूँ। पढ़ा लिखा आदमी हूँ। मेरे बाप रविदत्त मिरजापुर के बहुत बड़े रईस और इलाकेदार हैं और धाम में अपने कुटुम्ब के साथ सत्संग और यात्रा के लिए आये हैं। यह तेरे सवाल का जवाब है। दूसरे सवाल का जवाब यह है कि अगर इस लड़की की कोई सेवा मुझसे हो सकेगी तो उसके लिये मैं खुशी से तैयार हूँ।"

श्यामा—"मैं ने तुम्हारे बाप का नाम सुन रक्खा है। बड़ी खुशी की बात है कि तुम यहाँ आये हो। यह ठीक है। इधर से मेरा इतमीनान होगया। अब इस बात पर सोचना है कि आप मनोरमा की क्या मदद कर सकते हैं ? क्यों करेंगे और किस तरह करेंगे ?"

सोमदत्त—"इस सवाल का जवाब अभी तक मैं नहीं दे सकता क्योंकि मनोरमा का हाल नहीं जानता ?"

श्यामा—"मैं मामूली समझ की बूढ़ी औरत हूँ। मनोरमा किसी की मदद की मुहताज नहीं है। आप मेरी बाहरी हालत पर न जावें। मैं गरीब हूँ। मनोरमा गरीब नहीं है। पता नहीं मालिक ने हमारा इसका मेल क्यों कर दिया है। मैं इसे खाने पिलाने पहिनाने में कमी नहीं करती। गाँव का मामला है। यहाँ सादा जीवन व्यतीत करना ठीक है। यही कारण है कि मनोरमा सादा तौर पर रहती है। मैं ने बिना सोचे समझे बहुत कुछ तुमसे कह दिया जो मुझे कहना नहीं चाहिये था। अब यह सयानी हो चली है। जिस समय का मैं इन्तजार

करती चली आ रही थी वह लगभग आगया है। अगर यह बातें मैंने आपसे कहीं हैं और लोगों को मालूम हो जांय तो मुझे अफसोस भी न होगा।"

सोमदत्त—"माई! तू ने गलत नतीजा निकाला। मैं इसके खाने पीने की मदद करने के विचार से यह सवाल जवाब नहीं करता?"

श्यामा—"मुझे भी तो पता लगे कि तुम क्यों उसकी मदद करना चाहते हो? तब मैं और कहूं।"

सोमदत्त—"माई। मुझसे भूल हुई। अभी मैंने दुनिया नहीं देखी है। आखिर लड़का तो हूं। आज ही मैंने मनोरमा को देखा। देखे हुये अभी एक घंटा भी नहीं हुआ। मुझे ऐसी नाजुक बात चीत करने से बचना चाहिए था।"

श्यामा—"तुम सच कहते हो। किसी अजनबी जवान आदमी के लिये एक नवजवान लड़की को मदद करने का ख्याल बिना किसी बजह के बहुत बुरा समझा जाता है लेकिन मैं जानती हूँ कि तुमने सुन लिया होगा कि मैं गँवार अहीरनी हूँ और यह समझा होगा कि देहाती अज्ञान औरत से हर तरह की बात चीत बिना कुछ समझे बूझे की जा सकती है। इसीलिये तुम्हें साहस हुआ है। खैर! कुछ हर्ज नहीं। तुम यहाँ कब तक रहोगे?"

सोमदत्त अहीरनी की जँची तुली बातें सुनकर दंग रह गया। बात भी ऐसी ही थी। उसने ऐसा ही समझा था जैसा कि श्यामा ने कह सुनाया। वह लज्जा से पानी-पानी होगया। वह क्यों मनोरमा के साथ-साथ अहीरनी के झोंपड़े तक चला आया इसकी भी समझ उसे नहीं थी। यह भी तो वह नहीं जानता था न समझता था कि आया वह आप आया या कोई और ही ताकत उसे खींच ले लाई या उसका मनोरमा

के रूप रंग के साथ कोई दिली लगाव हो गया। श्यामा समझदार थी। वह सोचने लगी। उसे भी पता नहीं लगा कि वह क्यों बेधड़क उसके पास चला आया। पढ़ा लिखा आदमी था। एक नवजवान लड़की के साथ उसका अहीरनी के घर आना उचित नहीं था।

सोमदत्त ने सोचकर कहा—'बसन्त पञ्चमी के दिन राधास्वामी धाम में भण्डारा है उस समय तक तो यहां जरूर ही रहना होगा। शिवरात्रि और होली के दिन भी खास तौर पर भण्डारा होता है। आशा की जाती है कि पिता जी उस समय तक बराबर रहें और मैं भी उनके साथ रहूंगा। दिसम्बर में बड़ा भण्डारा हुआ करता है। इसमें पंजाब, कश्मीर वर्मा, राजपूताना, रामेश्वर और बुगदाद बसरा तक के सत्संगी सत्संग से लाभ उठाने के लिये आते रहते हैं। इस अवसर पर भी हम लोग बराबर आया करते हैं।'

श्यामा—'तुमको पूछने गछने और अपनी मदद की नीयत पर विचार करने के लिये बहुत समय है। जब तुम मुझसे मिलोगे तो सम्भव है मैं और भी कुछ बातें तुमसे कहूँ। एक बात तुम से कहे देती हूँ कि अब कभी तुम मेरे झोंपड़े में न आना। इसमें हमारी तुम्हारी और मनोरमा की बेइज्जती है। मैं गरीब औरत हूँ। कौन जाने कोई क्या सोचे!'

सोमदत्त—'मैं ने बहुत बड़ी भूल की। मुझे इस तरह नहीं आना चाहिये था लेकिन इसमे मेरी कोई बदनीयती नहीं थी।'

श्यामा—'मैं समझती हूँ। न तुम्हारी नीयत खराब है और न मेरी लड़की तुमको यहाँ लाई। तुमको तो मैंने आज ही देखा है। मनोरमा को बचपन से पाला है। मैं उसके रग-रग और रेशे रेशे का हाल जानती हूँ। वह ऐसी सीधी साधा

है जैसे अभी माँ के पेट से पैदा हुई है। इसपर अभी माया ने अपना जादू नहीं डाला है। ज्ञानियों की तरह बात चीत करती है। यह उसके पहिले जन्म की कमाई है।'

सोमदत्त—तो क्या मैं मनोरमा से भी कभी बात चीत न करूँ ?

श्यामा—'चाहिये तो ऐसा ही। मैं आप धाम पर आऊँगी जो कुछ कहना है वह मुझसे कहना। मैं जो समझूँगी उसका जवाब दूँगी।'

सोमदत्त—'और कुछ नहीं। मुझे इतना ही जानना था कि वह किस जाति की लड़की है। मैं क्यों इसे जानना चाहता हूँ इसका पता मुझे आप नहीं है।'

श्यामा ने तीसरी बार उसे फिर गहरी दृष्टि से देखा। कौन जाने उसके मन में क्या क्या भाव उत्पन्न हुये होंगे। वह सोचकर बोली—'मनोरमा ब्राह्मण की लड़की है। मै इसी के साबित करने का समय देख रही हूं। जैसे तुम विवश होकर इस बात को पूछ रहे हो वैसे ही मैंने भी विवश होकर उसके ब्राह्मण की लड़की होने का हाल कह सुनाया। आज तक मैने यह बात किसी से नहीं कही है। मनोरमा भी इसे नहीं जानती। वह इतना ही जानती है कि वह मेरी लड़की नहीं है, किसी ऊँचे कुल की लड़की है। इस गाँव के रहने वाले भी इसका हाल नहीं जानते। वह समझते हैं कि यह मेरे किसी सम्बन्धी की लड़की है और औलाद न होने की वजह से मैंने उसे पाला है।'

सोमदत्त को खुशी हुई—'मैं ने भी ऐसा ही नतीजा निकाला था।'

श्यामा—'तुम्हारा अनुमान ठीक है।'

सोमदत्त—'एक बात मैं तुमसे और पूछता हूँ। मेरे पिता

रविदत्त जी बहुत अच्छे आदमी हैं। उनसे कहने में तो कोई हर्ज नहीं है। सम्भव है वह भी मेरी तरह तेरी और उसकी सहायता कर सकें।'

श्यामा—'तुमने अभी दुनियां नहीं देखी है। तुम्हें पता नहीं कि लड़के जवान और बूढ़ों के भाव में कितना भेद होता है। इस लिये जब तक मैं आज्ञा न दूँ तुम उनसे कुछ न कहना।'

सोमदत्त—'स्वीकार है।'

वह दोनों से बिदा होकर धाम में लौट आया।

—:o:—

चौथा अध्याय

श्यामा और मनोरमा

रात को माँ बेटी बात चीत करने लगीं।

मनोरमा—'माई! मैं ब्राह्मण की लड़की हूँ?'

श्याम—'हां! तू ब्राह्मणी है।'

मनोरमा—'अब तक तू ने मुझसे यह बात क्यों छुपा रक्खी थी?'

श्यामा हँसी—'नादान! इसमें मैं ने तेरी भलाई समझ रक्खी थी। क्या तू इस बात के छुपा रखने से नाराज़ है?'

मनोरमा—'नहीं! तू ने जो कुछ किया होगा सोच समझ कर किया होगा लेकिन तू अगर यह कहती कि मैं तेरी लड़की हूँ तो मैं बहुत खुश रहती। ब्राह्मण की लड़की कहलाने से मुझे क्या मिला! जब तक तू ने मुझसे कुछ नहीं कही थी मैं बहुत खुश थी। जिस दिन से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं गैर की लड़की हूँ मेरे दिल को ठेस लग गई।'

श्यामा—"क्या ब्राह्मणी होने से तू मेरी लड़की नहीं रही ?"

मनोरमा—"लड़की तो मैं हूं और जिन्दगी भर ऐसा ही समझती रहूँगी लेकिन इस बात के जानने से मुझे कोई खुशी नहीं मिली। यह सच्ची बात है। कभी-कभी अज्ञान भी ज्ञान से अच्छा होता है।'

श्यामा—"सच है। जब तक तू बच्चा थी तब तक तुझसे न बतलाना ही अच्छा था। अब तू समझ बूझ और सोच विचार वाली होगई, इसलिये मेरी समझ में अब इसका छुपा रखना उचित नहीं है। धीरे धीरे मैं तुझे बताती चलूँगी कि तू कौन है। पहिले तू जानती थी कि मेरी लड़की है। कुछ दिन से पता लगा कि तू मेरी लड़की नहीं है। मैं ने तुझे पाला पोसा है। अब तुझे अपनी असलियत जानने की इच्छा हुई। सोमदत्त के आने की वजह से तू जान गई कि तू ब्राह्मणी है। यह तेरे ज्ञान का दूसरा दरजा है। अब आगे चलकर तुझे पता चलेगा कि तू ब्राह्मणी होकर किस तरह अहीरनी बन गई थी यह तीसरा दरजा होगा। अब तेरी विवेक शक्ति बढ़ेगी और सोच विचार पैदा होगा। फिर तू इस धुन में लगेगी कि अहीरनी से फिर किस तरह सच्ची ब्राह्मण बन सकेगी। यह धुन तुझे ब्राह्मणी बनाने लगेगी और ब्राह्मण होने के संस्कार उभार पर आयेंगे। यह उसका चौथा दरजा है। फिर तू कोशिश करके ब्राह्मणों में मिल जायगी। यह पाँचवीं मंजिल होगी। ब्राह्मणी होजाने पर तू खुश रहेगी। यह खुशी ज्ञान की छटवीं मंजिल कहलायेगी और इस की मदद से जब तू पूरी-पूरी ब्राह्मणी हो रहेगी उस समय फिर आप ही आप यह ख्याल न रहेगा कि ब्राह्मणी होना क्या होता है। मामूली सी बात होजायेगी। यह ज्ञान की सातवीं

[illegible]

मनोरमा—"माई ! तू ने मुझ पर बड़ा अहसान किया, तू ने मुझे न पाला होता तो मेरा क्या हाल हुआ होता !"

श्यामा—"बावली ! पालन पोषण तो होना ही था। मैं ने तुझे न पाला होता तो और किसी ने पाला होता। अच्छा हुआ कि तू मेरे हाथ पड़ गई। तेरे पालने से मुझे भी लाभ हुआ। मेरी अपनी कोई औलाद नहीं थी। तू न होती तो मेरा क्या हाल होता। अकेली पड़ी रहती। आदमी अकेला रहना पसन्द नहीं करता। अगर और कोई नहीं है तो आदमी तोता मैना पाल कर उन्हीं से अपना जी बहलाता रहता है। यह आदमी का स्वभाव है। ऐसा तो होना ही था। आदमी दाना पानी और अपनी किस्मत साथ लाता है। यह किस्मत सब के साथ है। लोग कहते हैं कि जब तक रोज़ी है तब तक कोई नहीं मरता। मैं कहती हूँ कि जब तक आदमी अपने कर्म नहीं भोग लेता तब तक नहीं मरता। दोनों सही और सच्ची बातें हैं। यहाँ न कोई किसी का मुहताज है न किसी के आधीन है। जो कुछ होता है उसकी किस्मत से होता है। किस्मत का कानून अटल है।"

मनोरमा—"माई तू ज्ञानी है।"

श्यामा मुसकराई—"आज तू ने यह बात कही है। पहिले जन्म के संस्कार इस जन्म में फुरते हैं और जब तक वह खुलकर नहीं खेल लेते तब तक कोई नहीं मरता। हीले मौत बहाने रोज़ी ! और यह हीला बहाना भी किस्मत के मातहत है। अब तू समझ बूझ वाली होगई। हम दोनों यों ही राधा-स्वामी धाम के पास नहीं हैं ! इसमें भी रहस्य है और यह बात मालिक की मौज या ईश्वर के नियम के आधीन है।

यही वजह है कि वहां जाने से नई नई बातें समझ में आती हैं और आदमियों को अपने विषय में सोचने विचारने का अवसर मिलता है। मैं ने तो इससे लाभ उठा लिया। अब तेरी बारी है और मैं देखती हूँ कि तू भी बिना कहे सुने सोच समझ वाली बन रही है। संगत का प्रभाव पड़ता ही है। अच्छों की संगत से आदमी कुछ का कुछ बन जाता है।'

मनोरमा—'अहीरनी हुई तो क्या और ब्राह्मणी हुई तो क्या! दोनों एक जैसी बात हैं।'

श्यामा—'एक तरह पर तू सच कहती है। दूसरे ढंग से तू भूल पर है। हर जाति के लिये खास खास बातें होती हैं। जो लाभ ब्राह्मणों को हैं वह अहीरों को नहीं हैं। यह तू समझ सकती है लेकिन यह व्यवहार की बात है। असलियत में कोई फर्क नहीं है।'

मनोरमा—'तो तेरी बातों से यह नतीजा निकलता है कि ब्राह्मण अहीर हो सकता है और अहीर ब्राह्मण बन सकता है।'

श्यामा—'इस में शक क्या है! क्या तू नहीं देखती कि नाम के कितने अहीर समझ बूझ वाले होकर ज्ञानी हो जाते हैं। इससे पता लगता है कि आदमी की हालत बनना उसके कर्म, उत्साह, पुरुषार्थ और युक्ति के अधीन है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम इस जगह पैदा हुये। यहाँ सनातन से ऐसी घटनायें होती रही हैं जिनसे कर्म, संस्कार और भाव के दृश्य खुली आँखों देखने में आये हैं।"

मनोरमा—'मैं ने ऐसी घटना न कभी देखी न सुनी।'

श्यामा—'अभी तेरी उम्र ही क्या है! धीरे धीरे तुझमें समझ आती जायगी। जब तक आदमी को अपना निज

अनुभव नहीं होता तब तक वह इन बातों को समझाने से भी नहीं समझता। जब उसे अनुभव हो जाता है तब फिर समझने की जरूरत नहीं रहती। तू देखती चल कि किस तरह अहीरनी से ब्राह्मणी हुई जाती है और अगर मेरी जान में जान है तो मैं किसी समय तुझे सच्ची ब्राह्मणी बना कर दिखाऊँगी। उस समय तू आप समझ जायगी।"

मनोरमा—'तो क्या मैं सच्ची ब्राह्मणी नहीं हूँ?"

श्यामा—"होने को तो तू सच्ची ब्राह्मणी है। झूटी ब्राह्मणी नहीं है। झूठी ब्राह्मणी कभी सच्ची ब्राह्मणी नहीं होसकती लेकिन अहीरनी के घर में पाले जाने से तू यों ही अहीरनी मशहूर है। समय आयेगा तब तेरा हाल खुलेगा। सबूत पेश होंगे। उस समय दुनिया जान जायगी कि तू ब्राह्मणी थी और ब्राह्मणी है।"

मनोरमा—"यह तो तू कर दिखायेगी। मुझे पूरा विश्वास है लेकिन यहाँ की घटना तू ने नहीं सुनाई।"

श्यामा—"तो अब सुन! मैं तुझे सुनाती हूं। यह बात इतिहास में नहीं पाई जातीं लेकिन कहने सुनने में अबतक चली आती है:—

कई सौ वर्ष हुए एक राजा हुआ है जिसका नाम जयचन्द था। उसके दरबार में जाति के नाम पर डींग मारने वाले कई ब्राह्मण रहते थे। वह क्षत्रियों को अपने से नीचा समझते थे। राजा को इनका अहंकार बुरा लगा। उसने इन्हें समझाया कि हर जाति का आदमी ब्राह्मण हो सकता है लेकिन ब्राह्मण इस बात को कब मानने लगे थे! राजा ने प्रतिज्ञा की कि मैं एक दिन में सवा लाख ब्राह्मण बनाकर दिखा दूँगा और उसने अपने ब्राह्मण दीवान को हुक्म दिया कि कल इस तरह के सवा लाख आदमी यहाँ सुबह को मौजूद रहें जिनको ऊँची जाति वाले हिन्दू नहीं छूते और उनके हाथ का छुआ हुआ

पानी तक नहीं पीते। मैं इन सब को ब्राह्मण बनाऊँगा। दीवान को इस सख्ती के साथ हुक्म दिया गया कि वह डर गया और दूसरी सुबह चमार पासी भील धोबी बढ़ई लोहार कुंजड़े इत्यादि जो राजा की प्रजा थे जबरदस्ती बुलाये गये। राजा ने उनको स्नान कराया, नये कपड़े पहिनाये, गले में जनेऊ डालकर उन से कह दिया—'आज से तुम ब्राह्मण हो। और वह सब के सब उसी दिन से ब्राह्मण बन गये और अब तक सवालखी ब्राह्मण कहलाते हैं। उस समय तो यह सवा लाख थे। अब इनकी संख्या करोड़ों तक पहुँच गई। इनकी औलाद बनारस मिरजापुर गोरखपुर और इस सूबे में अधिकता के साथ अब तक मौजूद है और वह ब्राह्मण समझे जाते हैं। उसी समय से ब्राह्मणों के साथ इनका मेल जोल और शादी ब्याह है। यह सच्ची घटना है जिसे यहाँ बच्चा बच्चा जानता है।"

मनोरमा—"हमारे जिले में ऐसे ब्राह्मण सुने तो जाते हैं लेकिन वह अपने आप को सवा लक्खी नहीं कहते।"

श्यामा—"वह शरमाते हैं लेकिन उन सब को अपनी असलियत का पता है। अनजान इन में से एक भी नहीं है। राजा जयचन्द ने एक अजीब बात की थी। इन सब का नाम करण संस्कार कुछ ऐसे ढंग पर किया गया था कि उनके पहिले पेशे का नाम इनके नामों के साथ मिला दिया गया जिसमें बराबर पता चलता रहे और वह भोंड़ी सूरत में अब तक वैसे ही चले आते हैं जैसे धोबी का नाम पिछौरा (चादर) लोहार का नाम (मचियान) अहीर का नाम बनगैया (जंगली गाय) इत्यादि रख दिया। इन शब्दों पर विचार करने से उनकी असलियत का पता आसानी से लग सकता है। इन में से किसी एक का नाम भी संस्कृत नहीं है।

मनोरमा—'यह विचित्र बात है।'

श्यामा--तुम क्यों ऐसा कहती हो। यह तो मामूली सी बात है। जब जरूरत होती है जातियाँ इसी तरह बनाई जाती हैं और बनती हैं। कहीं कहीं जातियां पेशों के नाम से बनती हैं जैसे अग्रवाल, ओसवाल सूर्य वंशी क्षत्रिय थे। वणिज व्यौपार करने से बनिये कहलाने लगे और बहुत सी ऊँची जाति वाले छोटे काम करने से धोबी और चमार हो गये। जो हलवाई का काम करे वह हलवाई। जो और पेशा करे उसकी जाति उसी पेशा की कहलाने लगती है। इस देश में ब्राह्मण नहीं रहते थे। इस लिये जयचन्द ने नीची जाति वालों को लेकर इन्हें ब्राह्मण बना दिया। राजपूताने में क्षत्रियों की कमी देखकर कितनी नई जातियां बनाई गई जो क्षत्रिय कहलाती हैं। दो ढाई सौ वर्ष हुये पंजाब के गुरु गोविन्दसिंह ने नये क्षत्रिय बनाकर उनको सिपाहीगीरी का काम सौंपा। यह कोई नई बात नहीं है।'

मनोरमा—'वर्ण व्यवस्था कर्म से है जन्म से नहीं है, यह मैं समझ गई लेकिन मैं तो जन्म से ब्राह्मणी हूँ।

श्यामा हँसी—'नादान तूने अब तक नहीं समझा। जन्म से कोई ब्राह्मण या क्षत्रिय नहीं बनता। संस्कार और कर्म से बनता है। तेरे कर्म और संस्कार ब्राह्मणों की तरह हैं। ब्राह्मण के घर में तेरा जन्म जरूर हुआ लेकिन अगर ब्राह्मणों के से कर्म न होते तो फिर तेरा ब्राह्मणी होना महा कठिन काम था। सुनः—

जन्मना जायते शूद्रा, संस्कारद्भवे द्विजः।
वेदपाठी भवेद्विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

इसका अर्थ यह है कि जन्म से सब शूद्र हैं। संस्कार से

द्विजन्मे, वेद पढ़ने से विप्र और ब्रह्म के जान लेने से आदमी ब्राह्मण होता है। यह एक दम सच्ची सच्ची बातें हैं। बाकी सब भ्रम और पाखंड है।"

मनोरमा—मेरा तो संस्कार भी नहीं हुआ। इस लिये मैं द्विजन्मी भी नहीं हूं।'

श्यामा हँसी—'बावली! लड़कियों का कहीं ऐसा संस्कार नहीं किया जाता। तूने किस ब्राह्मणी को जनेऊ पहिने हुये देखा है? स्त्रियों का संस्कार उनकी समझ बूझ पर निर्भर है। यह उनकी जायदाद है। तू अब समझ बूझ वाली होगई। इस लिये जन्म कर्म और बुद्धि की दृष्टि से तू ब्राह्मणी है।'

—❁—

पांचवाँ अध्याय

सोमदत्त और स्वामी दास

खुशी और नाखुशी की समझ तो सबको होती है लेकिन इन दोनों के दरमियान एक बिचली अवस्था है जो हर एक आदमी में होती है। इसकी समझ किसी किसी को आती है। सुख है और दुख है। इन दोनों को आदमी जानता है लेकिन सुख और दुख के बीच की हालत की समझ किसे है! यही असली चीज है और यही सब का आधार है। यह अधिकता के साथ रहती है। खुशी नाखुशी दुख सुख कमी के साथ रहते हैं। वह न हो तो कुछ भी न हो। सोमदत्त की ऐसी ही दशा थी।

वह क्या है? संस्कृत में उसे 'आनन्द' और 'शान्ति' कहते हैं। अरबी जबान में इसीको 'सुकून' और 'करार' बोलते हैं।

वह न खुशी है न नाखुशी है। न सुख है न दुख है। वेदों की ऋचाओं में इसी की प्रार्थना की गई है। यही जीवन का आदि और अन्त है जैसे तराजू के दो पल्ले बराबर रहते समय वह ठिकाने आजाता है तब यह दशा प्राप्त होती है।

यह न्याय है यही इनसाफ है जिसके लिए अदालतों में वकील और बैरिस्टर जजों के सामने लड़ते झगड़ते रहते हैं। यह तन्दुरुस्ती है जिसके लिए हकीम और डाक्टरों ने अस्पताल और दवा घर खोल रक्खे हैं। यह सुन्दरता है जिसका दृश्य चित्रकार अपनी तसवीर के बनाव और निखार में दिखाना चाहता है। वह समता है जिसका साधन योगी और सूफी सिखाया करते हैं। यह ज्ञान है जिसके समझने बुझाने के लिए वेदान्त ने इतने बड़े बड़े ग्रन्थ लिख डाले हैं।

यह और क्या है ? यही हमारी जात (आत्मा) है। सूफी इसी को हक (सत्) कहता है। हक का शब्द अदालत विरासत और आजादी के मामलों में तुमने सुन रक्खा है। यही निज रूप है, असलियत है, सच्चाई है, ज्ञान है, एकत्व और अद्वैतवाद है।

यह किस में नहीं है ? सब में है लेकिन किसको इसका पता है ! पढ़े लिखे बड़े बड़े विद्वान् और बुद्धिमान इसे रखते हुये भी अपने आप को उससे खाली समझते हैं। यह न हो तो न खुशी हो न रंज हो, न दुख हो न दर्द हो। यह सब का आधार और अधिष्ठान है।

जो सत् और चित् के दरमियान है वह आनन्द है।

अब हमारे पढ़ने वालों ने कुछ कुछ इसे समझ लिया होगा लेकिन यह समझ कुछ ही कुछ होगी। जो समझा हुआ अनसमझा है जो न जाना हुआ जाना हुआ है वह यही है।

यह आधार, अधिष्ठान, कूटस्थ, आसरा और सहारा है। यह समझ में आजाय तो फिर सब कुछ समझ में आने लगता है। यह न हो तो फिर कुछ न रहे। खुशी और नाखुशी दोनों से ऊँची चीज यह आनन्द है। यह गानेवालों का सम, दीन दुनिया का आदर्श और जीवन का लक्ष है।

अधिक क्या कहें! अगर और कहते हैं तो फिर इसका समझना कठिन होजायगा। अभी तक तो कुछ न कुछ समझ है। अधिक कहने सुनने से जहाँ शब्द जाल का ताना बना फैला फिर झमेला मच जायगा। यह थोड़ी सी समझ जो है यह भी जाती रहेगी।

सोमदत्त का दिल इसी हालत में था। उसे न खुशी थी न ना खुशी थी, न सुख था न दुख था। उसे आनन्द प्राप्त था जिसपर जुबानी जमाखर्च वाले ज्ञानी दित रात बहस करते रहते हैं।

मनोरमा और श्यामा से मिलकर वह धाम की ओर लौट आया। स्वामीदास साधू अपनी फुलवारी सींच रहे थे। वह चुनार के मँगरहा गांव से आये थे। फुलवारी या फूलों के लगाने, सजाने और सींचने का इन्हें बहुत शौक है। सोमदत्त को आते हुए देखा। बात चीत का सिलसिला यों चल निकला।

स्वामीदास—"तुम कहाँ गये थे?"

सोमदत्त—"जहाँ कोई नहीं जाता।"

स्वामीदास—"खूब! अच्छा जवाब दिया।"

सोमदत्त—"तुम्हारा सवाल भी तो अच्छा था। जैसा सवाल वैसा जवाब।"

दोनों लगभग एक उम्र के थे। स्वामीदास बीस बाइस वर्ष के थे। इनका विवाह हो चुका था। गृहस्थ आश्रम के झमेलों से घबराकर शान्ति की खोज में धाम में आये थे। सोमदत्त अठारह उन्नीस साल का रहा होगा। उसका विवाह नहीं हुआ था। कारण यह था कि वह अभी अभी कालेज से निकला था।

स्वामीदास—'तुम पढ़े लिखे आदमी हो। पढ़े लिखे आदमी ऐसा ही बेतुका जवाब देते हैं न जिसका सर न जिसका पैर !'

सोमदत्त—'तुम पढ़े लिखे आदमी नहीं हो। अनपढ़ आदमी ऐसा ही सवाल करते हैं कि जिसका न सर है न पैर !'

स्वामीदास हँसे—'तुम मुझे अनपढ़ कहते हो ' यह सच है कि मैंने मदरसों का इम्तहान पास नहीं किया लेकिन तुम तो पढ़े लिखे हो।'

सोमदत्त—'तुम मुझे पढ़ा लिखा कहते हो। यह सच है कि मैंने बी० ए० पास कर लिया है लेकिन मेरी तालीम अभी पूरी नहीं हुई। इम्तहान पास कर लिया तो क्या हुआ! आगे चलकर जब मुझे दुनियाँ का तजरुबा हो जायगा तब तुम पढ़ा लिखा कह लेना। अभी तक तो मेरी हैसियत विद्यार्थी की है। अभी मैं पहले दर्जे पर हूँ। आखिरी दर्जे पर नहीं पहुँचा।'

स्वामीदास—'मेरी दृष्टि में आदि और अन्त एक है। जो आदि है वही अन्त है, जो अन्त है वही आदि है।'

सोमदत्त—'देखो ! तुमको तो यह भी समझ है। मुझे यह समझ नहीं है। यह समझ में आजाय तब हमारा तुम्हारा मेल मिले।'

स्वामीदास—'इसकी समझ आप ही आप आयेगी। यह

किसी के समझाने बुझाने की बात नहीं है। तुम यह क्यों नहीं बताते कि ! कहां गये थे ?'

सोमदत्त—'सुनो भाई ! धाम में एक अहीर की लड़की दूध देने आती है। मैंने उससे दो चार बातें की, खुश होगया और उसके घर चला गया। तुमसे छुपाता नहीं।'

स्वामीदास हँसे—'लड़की बहुत समझदार और बुद्धि विचार वाली है। साथ ही सुशील भी है और सभ्यता का बहुत ध्यान रखती है। वह किसी से कम बात चीत करती है। तुमने कैसे उससे बात करलीं ?

सोमदत्त—'उसने बात नहीं की। पहिले तो मैं ने सिल-सिले को छेड़ा।'

स्वामीदास—'और उस सिलसिले को उसके घर तक पहुँचा दिया। इसी लिये मैं ने कहा था कि आदि और अन्त में भेद नहीं है।'

सोमदत्त—'ऐसे ऊँचे विचार की लड़की मैं ने आज तक नही देखी थी। बड़े आश्चर्य की बात यह है कि वह अही-रनी है।'

स्वामीदास—'इस में आश्चर्य की क्या बात है ! गुदड़ी में लाल छुपे रहते हैं। कीचड़ में कमल पैदा होता है। समझ बूझ का भंडार सबके लिये खुला हुआ है। यह छोटे बड़े सब में मौजूद है। तुम ब्राह्मण हो, नीचो जाति वालों को नीची दृष्टि से देखते हो। इस लिये ऐसा कह रहे हो।'

स्वामीदास ब्राह्मण नहीं थे। इस लिये उन्होंने ऐसा कहा था।

सोमदत्त—'मैं ने अँग्रेजी तालीम पाई है। जाति पाँत और छूत छात को नहीं मानता।'

स्वामीदास—'तो समझलो तुमको किसी हद तक अज्ञान और भ्रम के बन्धन से मुक्ति मिल गई ।'

सोमदत्त—'इस में सन्देह ही क्या है ! यह गुरु की दया है ।'

स्वामीदास—'उससे क्या बातें हुईं ?'

सोमदत्त—'मैं ने पूछा तू कौन है । उसके जवाब को सुन कर मैने दाँतों तले उँगली दबाई । मैं उसकी बातों पर लट्टू हो गया । मुझे शक हुआ कि वह अहीरनी नहीं है । गँवार देहाती और फिर अहीर की लड़की ! ऐसी समझ बूझ मैं ने किसी अहीर में नहीं देखी । उसके घर चला गया । उसकी माँ से मिला और इसी बात को पूछा ।'

स्वामीदास—आखिर ब्राह्मणपने का अहंकार कहाँ जाय ! फिर क्या हुआ । कुछ पता लगा ?'

सोमदत्त—'पता क्या लगना था ! वह श्यामा अहीरनी की लड़की है । मैं ने श्यामा से बहुत बातें कीं । अभी कुछ और पूछना है ।'

स्वामीदास—'जो किया अच्छा किया । देखना कहीं माया जाल में न फँस जाना । आज तुम्हारी सूरत बदली हुई है ।'

सोमदत्त हँसा और अपने माँ बाप के पास चला गया ।

❁

दूसरा भाग

पहिला अध्याय

रविदत्त—सोमदत्त

सोमदत्त धाम छोड़कर दूसरी जगह कम जाता था। उसके बाप का हुक्म भी ऐसा ही था। वह बड़ा ही आज्ञाकारी सुशील और नेक लड़का था। उसके बाप ने उसे आज़ाद रख छोड़ा था लेकिन उसने कभी उससे अनुचित लाभ नहीं उठाया। उसके माँ बाप को इधर से इतमीनान था। धाम में आने से उसके माँ बाप ने ऐसा हुक्म दे रक्खा था वरन इसकी जरूरत भी न पड़ती। धाम में यह सत्संग से लाभ उठाने आये हुये थे। इस लिये घूमने फिरने में समय खराब करना अच्छा नहीं था।

सोमदत्त दो ढाई घंटा माँ बाप की आँखों से दूर रहा था किसी काम के लिये उसकी खोज भी हुई। रविदत्त ने पूछा—"वह कहाँ चला गया?" किसी को पता नहीं था। इस लिये कोई ठीक जवाब न दे सका। वह चुप हो रहा। जब लड़का वापिस आया बाप का पहिला सवाल यही था—"तू कहाँ चला गया था?" उसने जवाब दिया—'बैठे बैठे जी उकता गया था। दिल बहलाने के लिये एक गाँव में घूमते फिरते चला गया जो यहां से दो फरलाँग की दूरी पर है।"

जवाब ठीक था। सयाने लड़के घरे बाँधे नहीं रहते। अगर घूमने और टहलने के लिये चला गया तो क्या हुआ!

यह मामूली बात थी। इसलिए बात आई और गई। बाप बेटे दोनों समय पर सत्संग करने गये। खाना खाया कमरे में पड़कर सो रहे।

मनोरमा और सोमदत्त का मिलाप कहने के लिए चाहे साधारण घटना कह ली जाय लेकिन वह साधारण नहीं थी। आदमी की जिन्दगी अजीब तरह की है। कभी-कभी वह साधारण घटना से ऐसी पलट जाती है जिसका किसी को ध्यान तक नहीं रहता। फिर भी हम इस घटना को असाधारण कहते हैं।

सोमदत्त सभ्यता की तसवीर था। न वह माँ बाप से अधिक बात चीत करता था और न वह उससे बहुत बात करते थे। यह देखने में आता है, जो जिसका अदब करता है, दूसरे को भी उसके अदब का ख्याल रखना पड़ता है। "राखपत रखावपत" की बात है।"

यह सब कुछ था लेकिन माँ बाप अपनी औलाद को एक दम आजाद नहीं छोड़ते। ऐसा होना भी चाहिए। यह माँ बाप का धर्म हैं। अगर वह ऐसा न करें तो बुरे समझे जाँय। उनको अपनी औलाद की भलाई के लिए ऐसा करना पड़ता है।

सोमदत्त जिस दिन मनोरमा से मिला उसकी दिली हालत बदल गई और दिनों दिन बदलती गई। बाहरी तौर पर यह अच्छी नहीं थी। वह मनोरमा के साथ क्या सम्बन्ध रखना चाहता था इसका उसे पता नहीं था लेकिन सम्बन्ध था। उसकी आँखे धाम में मनोरमा को बराबर ढूँढती रहती थीं। उस दिन के बाद वह कई दिनों तक धाम में नहीं आई। सम्भव है श्यामा ने उसे रोक रक्खा हो या कोई और ही बात रही हो। यह भी फिर छतमी नहीं गया। इसका न जाना ही

अच्छा था। बड़े घरानों की इज्जत आबरू वाले आदमी छोटे मोटे लोगों के घर नहीं जाते। यह दस्तूर है। दिन की जागृत अवस्था में तो इनका मिलना जुलना असम्भव होगया लेकिन रात के स्वप्न में कौन किसे रोक सकता है! मालूम होता है कि यह बन्धन की दशा जागृत अवस्था में शरीर ही तक है। स्वप्न या मन के मण्डल में बहुत आजादी रहती है। वहाँ रोक थाम का इतना प्रबन्ध नहीं है। वह नित्य ही मनोरमा का स्वप्न देखता रहता था। स्वप्न में उसके साथ बातें हुआ करती थी। यह उसका नित्य नियम होगया। स्वप्न तो स्वप्न है जागृत अवस्था में भी वह इसी उधेड़ बुन में पड़ा रहता था लेकिन आजादी नहीं थी।

कई दिन पीछे मनोरमा धाम में दूधबेचेने आई। सोमदत्त ने उसे देख लिया। दूध देते समय तो वह उससे कुछ नहीं बोला। जब दाम लेकर वह चली गई, यह भी बहाना बहाना खिसका। दोनों नाले पर मिले।

सोमदत्त ने पूछा—"सुन्दरी! तू कई दिन से आई क्यों नहीं?'

मनोरमा—"मैं क्यों आती! एक तो आना जाना किसी काम से हुआ करता है। मेरा अपना कोई काम नहीं। माँ की छुट्टी थी। वह आई और दूध देगई। दूसरे माँ ने मुझे यहाँ रोज आने से रोक रक्खा है। वह कहती है कि सयानी लड़की का देर तक घर से बाहर रहना या घर से बाहर निकलना अच्छा नहीं है और बात सच्ची है। यह कारण है कि मैं यहाँ नहीं आई। आज उसे छुट्टी नहीं मिली। ठाकुरों के घर काम काज था। मुझे उसने दूध पहुंचाने को कहा। तब मैं आई।"

सोमदत्त—"मैं तुझे से बात चीत करना चाहता हूँ।"

मनोरमा—'वह क्या बात है ? माँ ने बात चीत करने से रोक रक्खा है। एक तो मैं आप बचती रहती हूँ। दूसरे मैं माई की आज्ञा के विरुद्ध कुछ नहीं कहना चाहती।

सोमदत्त—"मैं तेरा हाल जानना चाहता हूँ।"

मनोरमा—"क्यों ? इससे क्या लाभ है ? हम में तुम में जमीन आसमान का फर्क है। तुम बड़े आदमी हो। मैं छोटी हैसियत की लड़की हूं। तुम इज्जत वाले हो। मेरी दुनियां में कोई इज्जत नहीं। मेरा और तुम्हारा मेल कैसा ! मुझ से कुछ न पूछो क्योंकि मैं अपना हाल कुछ नहीं जानती। जो कुछ पूछना हो माई से पूछो। अब मै जाती हूँ। बहुत देर तक तुम्हारे साथ बात चीत नहीं कर सकती हूं।"

वह यह कहकर उसी समय अपने घर की ओर चली गई। धाम के दो आदमियों ने उनको देख लिया। इनमें से एक स्वामीदास थे दूसरा रविदत्त सोमदत्त का बाप था। स्वामीदास को तो खयाल भी नहीं था कि सोमदत्त की क्या नीयत है। रविदत्त को खटका हुआ और इसका खटका करना ठीक था। फिर भी वह चुप चाप रहा। थोड़ी देर पीछे सोमदत्त आया।

रविदत्त ने पूछा—'बेटे ! मैं ने तुझे अहीरनी की लड़की से बात चीत करते हुये देखा।'

सोमदत्त—'आप ने झूठ नहीं कहा। मैं ने उसके साथ बात चीत की थी।'

रविदत्त—'इसकी तुझे क्या जरूरत थी ?'

सोमदत्त—'बात यह हुई एक दिन नाले पर यह लड़की मुझ से मिली। मैं ने इससे पूछा कि तू कौन है ?' इस मामूली सवाल के जवाब में उसने ऐसी बातें कीं कि मुझे आश्चर्य

हुआ। यह लड़की बड़ी समझ बूझ वाली है। पहिले तो मेरा यह विचार था कि अहीर की लड़की समझदार नहीं हो सकती, सन्देह हुआ कि यह किसी और की लड़की होगी। फिर क्या था, अपनी धुन में उसके घर तक चला गया। उस की माँ से भी यही सवाल किया।'

रविदत्त—'उसने क्या जवाब दिया ?'

सोमदत्त—'उसका जवाब ठीक नहीं मालूम होता, लेकिन उसकी बात सुनने से इतना पता लगा कि वह उसकी लड़की नहीं है। किसी और की लड़की है। उसने पालन पोषण किया है। मेरा अनुमान ठीक निकला। अब यह जानना है कि वह किसकी लड़की है। आज भी मैं वही सवाल उससे कर रहा था।'

रविदत्त—'और अगर किसी और की लड़की हुई तो तुझे इससे क्या लाभ होगा ?'

सोमदत्त—'ज्ञान अज्ञान से अच्छा है। मैं देखना चाहता हूँ कि मेरा अनुमान ठीक है या नहीं। हम लोग जाति पाँत के बन्धन में जकड़े हुये हैं। ब्राह्मणों को दावा है कि ब्राह्मण ही के घर ब्राह्मण पैदा हो सकते हैं। ब्राह्मण जन्म से होते हैं कर्म से नहीं होते। मेरा विचार इस के विरुद्ध है।'

रविदत्त—'इसमें तू गलत राह पर नहीं है। औरों के घर भी ब्राह्मण पैदा होते और हो सकते हैं। हां सैकड़ों वर्ष से व्यवहारिक अवस्था और तरह की बन गई है। इस लिये जन्म से ब्राह्मण होना सिद्ध माना जा रहा है। यह विचार बहुत ही पक्का हो चला है और अब बुढ़ापे की अवस्था को पहुंच कर टिमटिमाते हुये चिराग की तरह धुँधला और कमजोर बन गया है। इस सिद्धान्त के सच होने में अब ब्राह्मणों को

आप सन्देह हो रहा है। चारों ओर से इसके खिलाफ आवाजें भी सुनने में आ रही हैं जिससे पाया जाता है कि अब हिन्दू जाति की काया पलट दूसरी तरह की होगी।"

सोमदत्त—"तो आप भी हमारे साथ सहमत हैं,?"

रविदत्त हँसा—"जो सही है वह सही है। जो झूठ है झूठ है। अगर ब्राह्मण जन्म से होते तो इस समय ब्राह्मण लोग शूद्रों के काम करते हुये दिखलाई न देते। क्या तू नहीं जानता कि आजकल इनकी क्या हालत और हैसियत है। इससे साबित होता है कि ब्राह्मण जन्म से नहीं बल्कि कर्म से होते हैं।"

सोमदत्त—"ठीक! लेकिन पहिले तो इनसे बढ़कर और श्रेष्ठ कोई नहीं होता था।"

रविदत्त—"किस बात में ?"

सोमदत्त—"ब्रह्म ज्ञान और भक्ति के मामले में तो कम से कम इनसे बढ़चढ़ कर कोई नहीं हुआ।"

रविदत्त—"पुरानी बातें पुरानों से सम्बन्ध रखती हैं। कौन जाने क्या सच है और क्या झूठ है। अगर और पुरानी कथाओं पर विचार किया जाय तो वेदों के उपनिषदों से पता लगता है कि बहुत ऋषि ब्रह्मज्ञान के सीखने के लिये राजाओं के पास आया जाया करते थे। जनक और अजातशत्रु की कहानियां लोगों को अब तक याद हैं। वेदान्त के जगत् विख्यात् आचार्य स्वामी शंकराचार्य ने अपने भाष्य में लिखा है कि क्षत्रिय ज्ञान के और ब्राह्मण कर्म के अधिकारी हैं। पुराने समय में कबीर साहब जुलाहे, पलटू साहब काँदू, रैदास जी चमार और नाभा जी डोम हुये हैं जिनके ज्ञान ध्यान की तारीफ नहीं हो सकती। इस समय भी स्वामी विवेकानन्द जी ऐसे कितने वेदान्त के आचार्य्य हुये

हैं जो ब्राह्मण जाति के नहीं थे। क्या इन सब बातों से साबित नहीं होता कि ज्ञान और भक्ति के लिये ब्राह्मण होना जरूरी नहीं है। इस समय के सच्चे ब्राह्मण महात्मा गाँधी जी हैं जो जाति के बनियां हैं। इसलिये यह कहना कि ज्ञान और भक्ति ब्राह्मणों की मीरास है एक दम झूठ है।"

सोमदत्त—'मैं भी इसी विचार का हूँ लेकिन अभी तक द्विचताई में पड़ा हुआ था फिर भी मैं इसे मानूंगा कि ब्राह्मणों में ब्राह्मण ही अधिकता के साथ उत्पन्न होंगे क्योंकि इनके संस्कार खास तरह के होते है।"

रविदत्त-- 'इससे किसको इन्कार हो सकता है? यहाँ मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि इस अहीरनी के मेल जोल में तुमने क्या लाभ सोचा है?'

सोमदत्त—'मुझे सन्देह है कि यह अहीरनी नहीं है और मैं इसकी जांच पड़ताल करना चाहता हूँ। मैं देखूंगा कि मेरा अनुमान कहां तक सच और कहाँ तक झूठ है। मैं इस लड़की को अहीरनी नहीं बल्कि ब्राह्मणी समझता हूँ।'

--०—

दूसरा अध्याय

बाप–बेटे

रविदत्त—'बेटे! तुम जानते हो कि मैं आजादी पसन्द हूं। मैं तुमको बन्धन में नहीं रखना चाहता। तुम्हारी खुशी में मेरी खुशी है लेकिन मैं किसी हालत में तुम्हारा इस अहीरनी के साथ मेल जोल पसन्द नहीं करता।'

सोमदत्त—'मैं तो आप का आज्ञाकारी पुत्र हूँ। जो बात थी मैं ने आप से साफ साफ कह दी।'

रविदत्त—'यह न समझना कि मैं तुम्हारे साथ सख्ती का बर्ताव कर रहा हूँ। जैसे तुमने आजादी के साथ मुझसे बात चीत की है मैं ने भी उसी तरह तुमको अपनी राय जता दी।'

सोमदत्त—'पिता जी! आप कहते क्या हैं? आप की बातों से मुझे शक होता है। मैं दो बार से ज्यादा इस लड़की से नहीं मिला हूं। अगर आप आज्ञा दें तो मैं आज ही मिरजापुर चला जाऊँ।'

रविदत्त—'मैं होली तक यहाँ रहना चाहता हूँ और तुमको भी साथ रखना चाहता हूं।'

सोमदत्त—'फिर आप को शक किस बात का है?'

बेटे का बाप से ऐसा सवाल करना सभ्यता विरुद्ध समझा जाता है लेकिन रविदत्त सोमदत्त के साथ मित्रता का बर्ताव रखता था और नीति भी यही है कि जब लड़का अपने बराबर का हो गया तो उसके साथ मित्र जैसा सलूक होना चाहिये। इसी लिये दोनों खुले दिल से बात चीत करते थे।

रविदत्त ने कहा—'लड़की रूपवती है, तुम अभी अल्हड़ नवजवान हो। ऐसा न हो कि तुम पर उसका जादू चल जाय और बदनामी हो।"

सोमदत्त—'आपका कहना ठीक है। मैं नादान हूँ। मुझको अभी तजुरुबा नहीं है। फिर भी मै औरत को मर्द से अधिक सुन्दर नहीं समझता और जिसको यह ध्यान है कि मैं अच्छा हूँ वह अपने से नीचे के जाल में नहीं फँस सकता। हाँ उससे किसी लिये बात चीत करना और बात है।'

रविदत्त सोमदत्त की इस बात पर हँसा—'बेटे! तू अभी

भोला भाला है। तेरी नादानी का पता इसी से चल जाता है। तू अभी आजाद रखने के लायक नहीं हुआ। मुझे कुछ दिनों तेरी देख भाल करनी पड़ेगी।'

सोमदत्त लजा गया—'अँग्रेज ऐसा ही बहाना हिन्दुस्तानियों को स्वराज देने के मामले में करते रहते हैं। मैं अभी नादान हूं। यह सच है लेकिन इस उम्र में मुझे माँ बाप की निगरानी की जरूरत नहीं है। तजुरुबा काम करने से आता है। काम को काम सिखाता है। आप ने मेरी बात पर विचार नहीं किया।'

रविदत्त मुसकराया—'बेटे सोमदत्त! तुझे क्या हो गया जो ऐसी बहकी बहकी बातें करता है! कहाँ स्त्री की सुन्दरता कहाँ अँग्रेजों का हिन्दुस्तानियों के साथ सलूक की बात चीत! मैंने कब तेरी आजादी छीनी! तू लड़का है। मां बाप का धर्म है कि तेरी भलाई का ध्यान रक्खें। बस इतनी सी बात है और तू कहता है मैंने तेरी बात नहीं सुनी या उस पर विचार नहीं किया। वह कौन सी ऐसी बात है जिसके समझने में मैंने गलती खाई है?'

सोमदत्त—'यह मेरा मतलब नहीं है। आप ने ध्यान नहीं दिया।'

रविदत्त हँसता रहा—'अच्छा! अब बता दे कि तू ने क्या कहा और मैंने किस पर ध्यान नहीं दिया।'

सोमदत्त—'आपने कहा कि औरत सुन्दर है। मैं मर्द को औरत से कहीं बढ़ कर सुन्दर मानता हूँ।'

रविदत्त—'किस तरह?'

सोमदत्त—'शेर शेरनी से ज्यादा खूबसूरत है। मोर मोरनी से बढ़कर सुन्दर है। बारह सिंहा और हिरन अपने सींगों से कैसे भले लगते हैं। हिरनी को देखिये सींग के बिना

लँडूरी बनी रहती है। हाथी के लम्बे दाँत कैसे सजीले और और शानदार होते हैं। हथिनी अपनी छोटे दांतों से कैसी भद्दी लगती है। मुर्ग की सुर्ख कलंगी ताज की तरह उसके सर को शोभा देती है। मुर्गी उसकी खूबसूरती को कब पा सकती है! यही हाल सब पशु पक्षी और फूल फलों का भी है। मुझ को तो घास पात और वृक्षों तक में यही दशा दिखाई देती है।"

रविदत्त खिलखिलाकर हँस पड़ा—"मेरे नादान भोले भाले लड़के! तू सच कहता है। सृष्टि में ऐसा ही प्रबन्ध है। मर्द औरत से अधिक सुन्दर है, यह मैं मानता हूं लेकिन इस कहने से तेरा मतलब क्या है?"

सोमदत्तने अपनी समझ में एक नई अनोखी और निराली बात कही थी। उसने अपने बाप को अज्ञानी समझा था लेकिन उसने देखा कि वह उसे समझता है, दिल में शर्माया और अपने आप को सँभालकर कहा—"जब आप यह मानते हैं तो और भी सच मानेंगे। मेरे कहने का मतलब यह है कि मर्द जैसे सुन्दरता में औरत से बढ़कर है वैसे ही बुद्धि विवेक में भी इस से कहीं बढ़चढ़ कर है। औरत हर बात में मर्द की मुहताज है। फिर यह कैसे मान लिया जाय कि उसपर औरत की सुन्दरता का जादू चल सकता है। मेरा मतलब इतना ही था। अहीरनी की लड़की आखिर अहीरनी है। मैं उसे किसी बात में अपने से बढ़कर नहीं समझता। मैं तो उसकी जाति की छान बीन करना चाहता हूँ और आप व्यर्थ डर रहे हैं।"

रविदत्त लड़के की सादगी पर फिर हँसा—"तू एक दम भोला भाला है।"

सोमदत्त—"सम्भव है ऐसा ही हो। यह मेरी नातजुरुबेकारी के कारण होगा लेकिन मैं समझता हूँ कि बलवान कमजोर को दबा लेता है। कैसे मान लूं कि औरत का दांव मर्द पर चल सकता है और वह उसके माया जाल में फँस सकता है!

रविदत्त—"बेटे! जो यह समझता है कि मैं बलवान हूँ और दूसरा कमजोर है, यह ताकत की समझ ही उसकी कमजोरी की दलील है क्योंकि अगर वह कमजोर न होता तो कमजोरी का यह ख्याल किस तरह उसके दिल में जगह पाता! जब कोई आदमी दिल और खयाल की नजर से कमजोरी और ताकत के सिद्धान्त पर विचार करने लगा तो यही ताकत ताकत होती हुई भी उसे ऐसा कमजोर कर देगी कि कमजोर आदमी उसे धर दबायेगा। यह सिद्धान्त की बात है जिसे तू आज नहीं समझ सकेगा। आगे चलकर समझेगा। इसी माया जाल में बड़े बड़े ऋषि मुनि देवता मनुष्य सब के सब फँस गये और मुफ्त में मारे गये। जब कुछ दिनों तू संतों का सत्संग करेगा तब इसे समझ सकेगा।"

सोमदत्त अपने बाप की फिलास्फी सुनकर हैरान रह गया—"पिता जी! मैं आपके साथ बहस नहीं करना चाहता।"

रविदत्त हँसा—"तू ने न तो इतिहास की बातों पर विचारा और न शास्त्रों की कथाओं पर ध्यान दिया। अभी तू ने दुनिया नहीं देखी है। विश्वामित्र जैसा महर्षि इस तरह औरत के जाल में फँसा कि उसका सारा जप तप भंग होगया। शृंगि ऋषि जैसा त्यागी इनके फन्दे में बुरी तरह से फँसा। दुनियां में जितने फिसाद मचे हैं सब स्त्रियों ही के

लिये मचे हैं। रामायण और महाभारत इसके आप सबूत हैं। औरत कमजोर होती हुई ताकतवर मर्द का शिकार करती रहती है। घरों में फिसाद औरतों की शरारत ही से पैदा होते हैं। जो कुछ खराबियाँ मचती हैं वह औरतों ही से पैदा होती हैं। क्या कहूँ ! तू पढ़ता है लेकिन विचारता नहीं। यहां आया है तो सत्संग से लाभ उठा। सुन ! परमसंत कबीर साहेब क्या कहते हैं:—

१ २

नारी की झाईं पड़े, अन्धा होत भुजंग।
कबीर तिनकी कौन गति, जो नित नारी के संग॥

३

पर नारी पैनी छुरी, मत कोइ लागो संग।
दस मस्तक रावन गये, पर नारी के संग॥
छोटी मोटी कामिनी, सब ही विष की बेल।
बैरी मारे दाव से, यह मारें हँस खेल॥
नारी निरख न देखिये, निरख न कीजै दौर।
देखे ही ते विष चढ़े, मन आवे कुछ और॥
नारी नदी अथाह जल, बूड़ मुआ संसार।
ऐसा साधू ना मिला, जा सँग उतरूँ पार॥

४

नारी साँची नाहरी, कर नयनन की चोट।
कोई एक साधू ऊबरा, गह सतगुरु की ओट॥
सर्व सोने की सुन्दरी, आवे बास सुबास।

५

जो जननी होय आपनी, तऊ न बैठे पास॥

नोटः-१-परछाईं। २-सांप। ३-तेज। ४-शेरनी। ५-माँ।

सोमदत्त—"यह हालत उस समय होती है जब मर्द अपनी दीनगी को भूला रहता है। अगर मर्द मर्द रहे और उसको अपने आप का ज्ञान रहे तब वह कैसे धोखा खायगा। यह हो नहीं सकता।"

रविदत्त—"तेरी बुद्धि इस समय चंग पर चढ़ी हुई है। तू असलियत को नहीं समझ रहा है। बी०ए० पास हुआ तो क्या हुआ! पढ़ा लिखा लेकिन गुना नहीं। नादान! मेरी सुन! यहां तेरे जैसे ताकतवर अपनी ताकत का इल्म रखते हुये भी कमजोरों के मातहत हैं। बाप बच्चे की कमजोरी को दिल देता हुआ उसके जाल में फँसा रहता है। ऐसे ही मर्द औरत को कमजोर जानकर भी उसके फन्दों में फँस जाता है।"

सोमदत्त—"क्या इसमें उसका अज्ञान नहीं है?"

रविदत्त—"ताकत का ज्ञान ही अज्ञान की दूसरी सूरत है!"

सोमदत्त—"आप कहां से कहाँ जा गिरे! आप ने कहा कि औरत की सुन्दरता मर्द पर जादू का काम करती है। मैं ने जवाब दिया कि औरत में सुन्दरता नहीं सुन्दरता मर्दों ही में होती है। नर हाथी को देखिये। कैसा डील डौल वाला खूबसूरत और शानदार है। हथिनी कितनी भद्दी और बदसूरत है। मुर्ग की भी यही दशा है। उसकी कलंगी उसके लिए ताज है। अगर औरत खूबसूरत होती तो वह गहने कपड़े और सजावट की मुहताज न होती। यह सबूत है कि वह मर्द से खूबसूरत नहीं है। वह अपनी कमी को सजावट से पूरा करना चाहती है। मर्द को इसकी जरूरत ही नहीं है।"

रविदत्त—"पानी गढ़े में भरता है। ऊँचाई निचाई को

ओर झुकती है। जो भरा है उसकी नजर खाली की
जाती है। मैं इस समय मान लेता हूं कि मर्द औरत से सुन्दर
है लेकिन मैंने तुझे सृष्टि का नियम समझाया है जो आज
तक तूने शायद ही किसी किताब में पढ़ा होगा या किसी
बुद्धिमान की जुबानी सुना होगा। दुनियाँ में ताकतवर की
कमजोरी उसकी ताकत का अहंकार है, विद्वान की मूर्खता
उसकी विद्या का गर्व है। आजाद की आजादी का घमण्ड
उसकी गिरावट का सामान है। इन पर विजय पाना हर एक
का काम नहीं है। अहंकार करने वाले का सर नीचा हो
जाता है। सृष्टि का नियम ऐसा ही है। तू भूल में पड़कर
एक अहीरनी के फेर में पड़ गया है। ऐसा हो न कि धोखा
खा जाय और फिर तुझे पछताना पड़े। इस लिये मैं तुझे
समझा देता हूँ। इसके सिवा और कोई बात नहीं है।'

सोमदत्त—यह आप की दया और कृपा है। आप पिता
हैं। मैं पुत्र हूँ। आप के सिवा दूसरा कौन मेरी सच्ची
भलाई चाहेगा। दुनिया में कोई किसी को अपने से अच्छी
हालत में देखना पसन्द नहीं करता लेकिन एक बाप ही है
जो सच्चे दिल से इस बात की इच्छा रखता है कि उसका
लड़का उससे कहीं बढ़ चढ़ कर हो। क्या आप यह चाहते
हैं कि जिस गुत्थी को मैं ने सुलझाना चाहा है उसे वैसी
छोड़ दूँ! इससे मेरे दिल के उभरने का अवसर जाता
रहेगा।'

रविदत्त—'तजुरुबे और तहकीकात का मैदान बहुत ही
चौड़ा है। मैं तुझे रोकना नहीं चाहता लेकिन यह
खतरे से खाली नहीं है। तू ने अभी तक सन्तों का सत्-
संग नहीं किया। ऐसी बातों में औरों के तजुरुबे से लाभ

उठाना चाहिये। मैंने तुझसे अधिक जमाना देखा है। अहीरनी के पीछे पड़ने से क्या मिलेगा! ऐसा न हो कि बदनामी और हँसी हो। तू जवान है। दुनियां की देखभाल नहीं की। अगर तेरा विवाह होगया होता तो इतना भय नहीं था। मैंने अभी तक जान बूझकर तेरी शादी नहीं की थी जिसमें तेरे पढ़ने लिखने में हर्ज न हो। अब इस साल किसी अच्छी लड़की को देख कर तेरा सम्बन्ध करा दूँगा।"

सोमदत्त अपनी बारी पर हँसा—"आप समझते हैं कि मैं इस छान बीन के सिलसिले में अहीरनी के साथ विवाह कर लूँगा। ऐसा न होगा आप इतमीनान रक्खें। मुझे अब तक विवाह का ध्यान तक नहीं है। इस अहीरनी की समझ बूझ और बुद्धि विवेक देखकर मुझे सन्देह हुआ कि वह जरूर ऊँची जाति की लड़की है। बस मैं इसी बात के पता लगाने की धुन में हूं। इसके सिवा और कोई बात नहीं है।'

रविदत्त—'इसमें हर्ज तो नहीं था लेकिन मैं कई कारणों से इसे पसन्द नहीं करता। एक तो तू अल्हड़ और नातजुरुबेकार है। दूसरे लड़की सुन्दर है तीसरे वह नीची जाति की है। मैं नीची जाति वालों को घृणा की दृष्टि से नहीं देखता लेकिन फिर भी सोसायटी का ध्यान तो रखना ही पड़ता है। चौथे वह औरत है। औरत के नाम से मर्दों का कलेजा काँप उठता है। कौन जाने वह कैसा रंग लाये और ऊँट किस करवट बैठे। किसी बात का ठिकाना नहीं है। पाँचवें तेरा दिल उसकी ओर खिंचा हुआ है वरन तू यों ही उसके घर कभी न जाता।"

सोमदत्त—"हुक्म दीजिये कि मैं इस विचार को छोड़ दूँ

और आप को इतमीनान दिलाने के लिए अभी मिरजापुर चला जाऊँ।"

रविदत्त—"मैं पहिले ही कह चुका हूं कि होली तक मैं सत्संग करूँगा और तुझे साथ रखना है।"

सोमदत्त—"फिर क्या हुक्म है?"

रविदत्त—"मैं आप इस गुत्थी को तेरे लिए सुलझा दूँगा।"

सोमदत्त— "बस मैं इतना ही चाहता हूँ। अब मुझे कुछ करना धरना नहीं रहा।"

तीसरा अध्याय

रविदत्त श्यामा

भाग्य का खेल अजीब होता है। खेल खेल में क्या हो जाता है या क्या होजायगा कोई नहीं कह सकता! और कौन इसे जान सकता है। इसका सिलसिला बेहद व हिसाब है।

अपना भाग्य का बनाने वाला आदमी आप है। ईश्वर या किसी शक्ति का इसमें हाथ नहीं है। जो जैसा करता, कहता और सोचता है वैसा आपही आप बन भी जाता है। वैसे ही सामान खिच खिच कर उसकी ओर आने लगते हैं और वह उसी का रूप बनकर वैसा ही नाच नाचने लग जाता है। पहिले खयाल आता है। यह सब मिलमिलाकर हजारों तरह के रंग रूप भरते हैं। यह भाग्य है। यह भाग्य किसी एक

ही जन्म के कर्म का फल नहीं है। इसका कार बार हजारों वर्ष, सैकड़ों जन्म और अनगिनत गोरखधन्दों के साँचों में ढला हुआ इस जन्म में प्रकट होता है।

मालिक ने किसी को बदकिस्मत नहीं बनाया। इसलिये वह किसी को खुश किस्मत भी नहीं बनाता। अपनी करनी अपने हाथ! अपनी किस्मत अपने हाथ! जैसी करनी वैसी भरनी! जैसा जन्म वैसा मरन! जैसा मेल वैसा खेल।

रविदत्त अपने आप को बहुत बुद्धिमान समझ रहा था लेकिन वह भी उलझन में फँसने लगा। उसे क्या पड़ी थी कि लड़के के काम में हाथ डालता! डाँट डपट कर देना काफी था लेकिन उसने भी जान बूझ कर इसे अपनी दिलचस्पी का सामान बना लिया।

वह दिन यों ही गया। दूसरे दिन सुबह श्यामा दूध देने आई। रविदत्त इसकी राह देख रहा था। उसे बुला भेजा। वह आगई।

रविदत्त ने पूछा—"माई! मुझे तुझसे कुछ बात चीत करना है।"

श्यामा ने जवाब दिया—"मैं गरीब बेवा हूँ। दूध बेचकर अपनी रोटी चलाती हूँ। इससे अधिक आप क्या पूछेंगे! मैं दूध में पानी नहीं मिलाती। इसके लिए कसम खाने को तैयार हूं। एक दिन की बात होती तो वह भी सही मैं सालों से धाम में दूध पहुँचाती हूं। भला कोई यह कह तो दे कि श्यामा के दूध में पानी होता है। आप इतमीनान रखिये। मैं धोखा देने वाली औरत नहीं हूँ

रविदत्त हँसा—"दूध तेरा अच्छा है। इसकी मुझे कोई शिकायत नहीं है।"

श्यामा —"बस ! आप का इतमीनान ही चाहिये ।"

रविदत्त—"मैं तेरी लड़की मनोरमा के विषय में पूछना चाहता हूं ।"

श्यामा चुप रही और कुछ मन ही मन सोचने लगी ।"

रविदत्त —'यह तेरी लड़की है या किसी दूसरे की है ?''

श्यामा —'इस बात को जानकर आप क्या करेंगे ? आप यहाँ के रहने वाले नहीं हैं । मुसाफिरों और यात्रियों की तरह आये हैं । आज यहाँ हैं कल चले जाँयगे । यहाँ का कोई आदमी यह सवाल करता तो कोई बात भी थी ।

रविदत्त—"इसकी समझ बूझ और चाल ढाल देखकर सन्देह होता है ।"

श्यामा—"क्यों ?"

रविदत्त—"इसमें ऊँची जाति वालों के संस्कार पाये जाते हैं ।"

श्यामा—'फिर क्या हुआ ? क्या कीचड़ में कमल नहीं पैदा होता ! क्या गंदी पाँस देने से गुलाब में सुन्दर और सुगंधित फूल नहीं खिलते ! इसी से समझ लीजिये ।''

रविदत्त—'यही तो बात है जो समझ में नहीं आती ।'

श्यामा—'और यही समझने के योग्य है । मैं अहीरनी हूँ । ब्राह्मण क्षत्रिय ऊँची जाति वाले हम गरीब अहीरों को बेआबरू और नीचा समझते हैं । यह नहीं जानते कि जैसे अहीर वैसे सब लोग ! सब का खून एक तरह का होता है और फिर अहीर नीचे क्यों हुये ! ग्वाल वंश के मर्द और औरत सुन्दर होते हैं । मथुरा, वृन्दावन और गोकुल में जाकर देखिये तो सही ? ऊँची जाति वालों की लीला विचित्र होती

है। नीची जाति का कोई आदमी समझ बूझ और बुद्धि विवेक वाला हुआ, तो वह उसके लिये सन्देह करने लग जाते हैं। महाराज! मैं गरीबनी हूँ। जो जिसके जी में आये कह ले। कृष्ण कौन थे? अहीर ही तो थे। बलराम कौन थे? ग्वाल ही तो थे! वसुदेव देवकी सब अहीर थे। यह पढ़े लिखे थे। उनको उनके मरने के पीछे सबने क्षत्रिय बना लिया। अहीर रहने में उनकी बदनामी और बेइज्जती समझो और क्यों? क्योंकि उनके गुण और विद्या को देखकर सब उनकी पूजा करने लगे थे। अहीर का पूजा जाना बुरा समझा गया। उन्हें अवतार और ऊँचे कुल का क्षत्रिय बनाकर चैन लिया। आल्हा ऊदल कौन थे? यह भी तो अहीर और अहीरनी के लड़के थे। अब लोग उन्हें बुन्देल क्षत्रिय बताते हैं। बाल्मीक और नाभा जी कौन थे? सोचिये तब पता लगे। ऐसे ही आज मेरी लड़की को देखकर आप को सन्देह हो रहा है। क्या आप अहीरों को एकदम गया गुजरा ही समझते हैं?"

रविदत्त—'माई! तू तो बड़ी जानकार मालूम होती है?'

श्यामा—'मैं जानकार हुई तो क्या न हुई तो क्या! ऊँची जाति वाले जो हमको नीची नजर से देखते हैं यह हिन्दुओं ही में है।'

रविदत्त—'मैं इस विचार का आदमी नहीं हूँ। क्या तू नहीं देखती कि राधास्वामी धाम में जाति पाँति का बर्ताव नहीं रक्खा जाता!

श्यामा—'फिर इस पूछा पेखी की क्या जरूरत है और आपको इससे लाभ क्या होगा? मनोरमा चाहे अहीरनी हो या कुछ हो, राह चलते यात्री को इससे क्या?"

रविदत्त भेंप गया। सोमदत्त और उसकी माँ रुक्मिणी

दोनों पास बैठे हुए थे। श्यामा की बातों ने सब को आश्चर्य्य में डाल दिया। श्यामा बूढ़ी होगई थी लेकिन उसकी सूरत साफ सुथरी और निखरी हुई थी। इसके रूप से पता लगता था कि यह अपने समय पर सुन्दर रही होगी। सोमदत्त के दिल में तरह तरह के विचार लहराने लगे। उसने देखा कि श्यामा कम समझदार नहीं है। अगर मनोरमा उसकी लड़की हो तो कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है। लेकिन श्यामा उसको बता चुकी थी कि वह ब्राह्मणी है। इसलिए रह रह कर वह इसी बात को सोचने लग जाता था। रुक्मिणी सीधी सादी और सत्युगी औरत थी। यह दोनों चुपचाप श्यामा और रविदत्त के सवाल जवाब सुनने लगे।

रविदत्त—"अगर यह तेरी लड़की है तो फिर सवाल करना अनुचित है और अगर यह तेरी लड़की नहीं है तो बताने में क्या हर्ज है! अगर इसमें तेरा नुकसान है तो न बता। जाने दे!"

श्यामा—"मेरे फायदे और नुकसान का खयाल तो आप को पहिले ही होना चाहिये था। उसका तो आपने ध्यान नहीं रक्खा। इस गाँव में रहते हुए मुझे बहुत दिन हो गये। आज तक किसी ने यह सवाल मुझ से नहीं किया। अब आप मुझ से पूछ रहे हैं। इस लिये आप पहिले यह बतलाइये कि इस पूछा पेखी से आपका मतलब क्या है। तब मैं जवाब दूँ।"

रविदत्त के होश के तोते उड़े। वह श्यामा को गँवार और गावदू समझता था। वह क्या जवाब देता! थोड़ी देर के लिये चुप हो रहा और दिल ही दिल में सोचने लगा। बात नाजुक थी। उसकी हैसियत अजनबी आदमी की थी। किसी

अजनबी या राह चलते आदमी को ऐसी बातों से क्या काम !

उसे चुप पाकर श्यामा आप ही बोली—"अगर इस सवाल और जवाब की तह में मनोरमा के फायदे की कोई बात हो तो आप उसे साफ साफ कहिये। आपको ऐसा सन्देह क्यों हुआ ? क्या आप ने किसी से ऐसी बात सुनी है ? और उसने क्यों ऐसा कहा ? यह मुझे मालूम होना चाहिए।"

रविदत्त—"तेरी लड़की सयानी होगई है। मैं चाहता हूँ उसका विवाह कर दिया जाय और मुझ से जो कुछ हो सके मैं मदद करूँ।"

श्यामा—"महाराज ! माफ कीजिए। यह भाव तो अब आया है। पहिले यह नहीं था। जब आप से जवाब नहीं बन आया तो यह बात बनाई। सुनिये ! मैं सीधी सादी औरत हूँ। जो दिल में रहता है कह डालती हूँ। इसीलिये मैं किसी से मिलती जुलती नहीं हूं। अगर आप को लड़की की शादी का खयाल था तो यह कहते कि सयानी लड़की की शादी करदो। यह न पूछते कि यह किस की लड़की है और उसमें ऊँची जाति के संस्कार दिखाई देते हैं।"

लेने के देने पड़े। सर मुड़ाते ही ओले पड़ने लगे।

रविदत्त ने कहा—"माई ! अगर तुझे बुरा लगा तो मैं अधिक बात चीत न करूँगा।"

श्यामा—"बुरा लगे या न लगे। आप को तो जो कहना था वह कह चुके। तीर चलाकर उसे रास्ते से किसने रोका है ! जो मुंह से निकल गया वह तो निकल ही गया। बुरा भला जो होना था वह तो हो गया। अब और जो कुछ कहना हो कहिये, मैं सुनूं ! मेरे सवाल का जवाब पहिले मुझे मिल

जाय तो फिर मैं आपके सवालों का जवाब दूँ। क्या आप मेरी लड़की के विषय में कुछ जानते हैं? किसी ने आप से कुछ कहा है? अगर उसकी तह में मनोरमा की भलाई है तो मैं उसकी शुभ चिन्तक हूं।"

श्यामा का आखरी जुमला सुनकर रविदत्त के कान खड़े हुये। वह सोमदत्त की बातों पर विचार करने लगा। दिल ही दिल में लड़के के अनुभव की प्रशंसा करने लगा।

रविदत्त मालदार नेक और उदार चित्त था। उसने पचास रुपये के नोट निकालकर श्यामा केसामने रखदिये—'माई! अगर तू शादी करे तो इन्हें मेरी ओर से खर्च कर देना। मनोरमा का विवाह जल्द कर देना चाहिये।"

श्यामा—'यह रुपये आप अपने पास रहने दें। मैंने जो पूछा है पहिले उसका जवाब दीजिये। फिर मैं सोचूँगी। लड़की के सयानी होने में कोई शक नहीं है। मैं ने किसी वजह से उसका विवाह रोक रक्खा है। जब तक यह पूरे तौर पर सयानी न हो जायगी तब तक मैं इसका विवाह न करूँगी। कई अहीरों ने मुझ से कहा सुना। अहीरों में बचपन की शादी का रिवाज है। अब तक तो यह ब्याह कर चली गई होती। इसे मैंने अपनी सेवा के लिए नहीं रख छोड़ा है बल्कि इसी में उसकी भलाई है। जब विवाह का समय आयेगा और आप मदद करना चाहेंगे तो मुझेइन्कार न होगा। आपका यश भी गाऊँगी। इससे पहले न मैं मदद चाहती हूँ और न उसकी प्रार्थना है।"

रविदत्त—"माई! मैं तेरे सवालों का जवाब नहीं दे सकता। उसकी वजह यह है कि मैं यह बात किसी मतलब से पूछ रहा हूँ और तू किसी और धुन में है। यह तो मैंने तेरी

बातों से समझ लिया कि यह तेरी लड़की नहीं है। तू ने इसे पाला है। वह कौन है? इसका मुझे पता लग जाय और तू मुझ से मदद मांगे तो मैं हर तरह तैयार हूं।"

श्यामा ने सोमदत्त को गहरी नजर से देखा। इसका मतलब यह था कि शायद उसने अपने बाप से श्यामा की बात चीत कह दी हो लेकिन वह उसे चुप पाकर समझ गई कि बेटे ने इस विषय में बाप से कुछ नहीं कहा है। यह सोच कर बोली—"आप इस भेद को तो जान गये कि वह मेरी लड़की नहीं है। आप मेरे हमदर्द हैं। ऐसे लोग रोज रोज नहीं मिलते। इस लिये मैं इतना और आप से कह देती हूं कि यह ब्राह्मण की लड़की है। आप ने मदद देने का वादा किया है। समय पर आपको ढूंढ लूंगी। अभी उस समय के लिये कई महीने बाकी हैं।"

इन बातों से उसका क्या मतलब था कोई न समझ सका। श्यामा अपने घर चली गई। रविदत्त को मानना पड़ा कि सोमदत्त का विचार और अनुमान बहुत ही ठीक था।

चौथा अध्याय

रुक्मिणी—रविदत्त

शाम के वक्त जब रुक्मिणी और रविदत्त अलग मिले उसने रविदत्त से पूछा—"तुम श्यामा अहीरनी से क्या बात कर रहे थे? मेरी तो समझ में वह नहीं आई।" रविदत्त ने

जवाब दिया—"तू उसे कैसे समझ सकती थी। वह बेठौर ठिकाने की बात थी।"

रुक्मिणी—'मनोरमा से तुमको क्या काम है ?"

रविदत्त—"कुछ नहीं, बस इतना ही जानना चाहता था कि यह किसकी लड़की है और तुमने सुन लिया कि वह ब्राह्मणी है।"

रुक्मिणी—"इससे तुम्हारा मतलब क्या था ?"

रविदत्त—"कुछ भी नहीं।"

रुक्मिणी—"मैं इसे न मानूंगी। कुछ न कुछ तो दाल में काला जरूर है।"

रविदत्त—"तुम न मानो अपने दाल का काला निकाल दो !"

रुक्मिणी—"कल तुम बाप बेटे भी कुछ ऐसी ही बातें कर रहे थे। मैंने पूरी पूरी नहीं सुनी थी।"

रविदत्त—"कल भी वही बात हो रही थी।"

रुक्मिणी—"क्या कहीं मनोरमा के साथ सोमदत्त का विवाह तो नहीं करना चाहते ?"

रविदत्त—"अगर इसके साथ शादी की जाय तो तुझको इन्कार तो न होगा ?"

रुक्मिणी—"मैं कौन हूँ ! तीन में कि तेरह में ! तुम्हारी नजर में मेरी कुछ हैसियत होती तो क्या श्यामा अहीरनी से घण्टों बातें हुईं और मुझसे तुम न कहते !"

रविदत्त—"रंग लाई गिलहरी। लड़कों की माँ हो गई और अल्हड़पने की आदत नहीं गई ! कहाँ क्या और कहाँ क्या !

न सर न पैर और तुम लगीं जोड़ मिलाने। ईश्वर जाने औरतों की क्या आदत होती है! जब देखो उन्हें बेपर की सूझती है।"

रुक्मिणी—"और तुम मुझे बेपर की उड़ाते रहते हो।"

रविदत्त—"पूछता तो हूं कि अगर शादी करदी जाय तो तुमको इन्कार तो न होगा?"

रुक्मिणी—"मुझ निगोड़ी से क्या पूछते हो! ब्याह हो, बहू आये, पोते पोतियाँ हों, घर बसे। औरत इसके सिवा चाहती क्या है? सोहाग, लक्ष्मी और औलाद; यही तो स्त्री का चाहना है। मैं तो तुम से कब से कह रही हूं कि लड़का सयाना होगया, उसका विवाह कर दो। लेकिन जब तुम मेरी सुनो भी तो सही। मुझ से तो कुछ कहते सुनते नहीं। श्यामा अहीरनी को अपना मन्त्री बनाना चाहते हो। घर की स्त्री पांव की जूती। जब चाहा पहिना जब चाहा पाँव से निकाल दिया। तुमने मेरी यह इज्जत कर रक्खी है।"

रुक्मिणी बड़ी सीधी सादी थी। जब रविदत्त दिल बहलाना चाहता उसे छेड़ देता था। फिर क्या? राम दे और भक्त ले! रुक्मिणी बल्लियों उछल पड़ती थी और यह खिल खिलाकर हँसता रहता था लेकिन थी बड़ी ही नेक, पवित्र हृदय, शुद्धात्मा और पतिव्रता। जो उसके जी में आता था कह डालती थी। दिल को शीशे की तरह साफ रखती थी। सोमदत्त उसका लाड़ला था।

रविदत्त हँसा—"बूढ़े मुँह मुहासे लोग देखें तमासे! तुम तो ऐसी बात करती हो जैसे मुँह से फूल झड़ते हैं। मुझे फूल लाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। जहाँ तुम्हारा मुंह खुला

बाग का फाटक खुल गया और फूलों की वर्षा होने लगी। तुम बातें ऐसी करती हो जैसे डालियों से फूल झड़ते हैं।"

रुक्मिणी ने मुसकरा दिया।

रविदत्त—"चोचले क्यों करती हो! साफ साफ क्यों नहीं बता देती कि सोमदत्त का विवाह हो या न हो।"

रुक्मिणी—"मैंने इन्कार कब किया!"

रविदत्त—"इस समय की बात है। इस समय कहो।"

रुक्मिणी—"हाँ चाहती हूँ लेकिन किसके साथ?"

रविदत्त—"मनोरमा के साथ।"

रुक्मिणी—"क्या मेरे होनहार बच्चे के लिये अहीरनी ही बदी है! मुझे इस सम्बन्ध से इन्कार है। किसी अच्छे कुल की लड़की हो।"

रविदत्त—"वह भी तो ब्राह्मणी है।"

रुक्मिणी—"ऐसी ब्राह्मणियाँ द्वार द्वार मारी मारी फिरती हैं।"

रविदत्त—"मनोरमा बड़ी सुन्दर है। ऐसी लड़की फिर हाथ न आयेगी।"

रुक्मिणी—"ऐसी सुन्दरताई चूल्हे में पड़े। लड़की गुण ढंग वाली हो। घर का काम काज संभाले। फूल वही जो महेश चढ़ें और पुत्र वही जो पितृ को तारे। सोना किस काम का जो सर का बोझ हो। फिर तुम उसे ब्राह्मणी कहो, मैं तो नहीं कहती। अहीरनी के यहाँ रहती सहती खाती पीती है। न घर का ठिकाना न कुल का पता। ना बाबा ना! मैं ऐसी बहू नहीं चाहती।"

रविदत्त—"लेकिन सोमदत्त कहता है वह बड़ी समझदार लड़की है।"

रुक्मिणी—'उसके कहने से क्या होता है! सोमदत्त अच्छा लड़का निकला! एक सुन्दर लड़की देखी और मुँह से राल टपक पड़ी। मां बाप विवाह कराते हैं या लड़का आप करता है।'

रविदत्त—'माँ बाप की शादी होती है या लड़के की शादी होती है?'

रुक्मिणी—'शादी तो लड़के ही की होती है लेकिन शादी करने वाले मां बाप होते हैं। सनातन से ऐसा ही चला आया है।'

रविदत्त—'लेकिन वह अँग्रेजी पढ़ा हुआ है। बी० ए० पास है। अंग्रेजों के यहाँ लड़के लड़की अपना विवाह आप करते हैं। मां बाप से राय तक नहीं लेते।'

रुक्मिणी—'कलियुग आगया। मैं तो सोमदत्त को ऐसा न करने दूँगी। मैं उसकी माँ हूँ। कैसे मेरी बात न मानेगा!'

रविदत्त—'और जो वह न माने तब क्या करोगी! मोती का आब जाता रहेगा। आँख का पानी गिर जायगा और अपना सा मुँह लेकर रह जाओगी। कुछ करते धरते न बनेगा।'

रुक्मिणी—'यह बात है?'

रविदत्त—'हाँ! यही बात है।'

रुक्मिणी—'तुम्हारी भी न सुनेगा?"

रविदत्त—'हाँ, मेरी भी न सुनेगा।'

रुक्मिणी की आँखों से आँसू निकल पड़े। रविदत्त हँसा—'देखा! रंग लाई गिलहरी! न सूत न कपास, जुलाहों

में गुत्थम गुत्था। तू तो बड़ी बावली है। हम लोग तो एक बात पूछ रहे थे और तू लगी शादी विवाह करने कराने !"

रुक्मिणी—"मुझे नादान बनाते हो ! क्या तुमने पचास रुपये देकर यह नहीं कहा कि मनोरमा की शादी में खर्च किये जाँय !"

रविदत्त—'हाँ कहा था। लेकिन उसका मतलब यह तो नहीं था कि सोमदत्त के साथ शादी करदे। वह जहाँ चाहे ब्याहे लेकिन जल्दी करे क्योंकि लड़की सयानी होगई है।"

रुक्मिणी—"मेरी मति मारी गई। बुद्धि भ्रष्ट होगई। सच मुच मैं नादान हूँ। क्या तुम ऐसा समझते हो ?"

रविदत्त—"नहीं ! मैं तुझे औरतों में असली और सच्ची औरत समझता हूँ। मालिक करे तुझ जैसी स्त्री सब को मिले। भोली भाली, नेक, पवित्रात्मा ! यह तो मैं ने तेरी छेड़ निकाली थी।"

रुक्मिणी—"सच्चे दिल से कहते हो ?"

रविदत्त—"हाँ ! सच्चे दिल से कहता हूँ।"

रुक्मिणी ऐसी खुश होगई जैसे कोई नई दौलत उसके हाथ लगी है या रविदत्त के साथ उसकी अभी शादी हुई है।"

—:o:—

पांचवाँ अध्याय

आश्चर्य

दुनिया क्या है ? क्यों है ? किस तरह है ? किसी को आज

तक न मालूम हुआ और न शायद कभी मालुम हो। यह रहस्य जैसा पहिले था वैसा ही अब भी है। लोग पैदा होते हैं और मर जाते हैं। ऐसा क्यों होता है और उसकी क्या जरूरत है ? आज तक किसने बताया है जो आगे चलकर बतायेगा ! हाँ एक बात है। समुद्र के बुददुदों की तरह आदमी पैदा होता है और अपनी बुद्धि का ताना बाना बुनता है। फिर गायब हो जाता है। कीड़े मकोड़े सब इसी तरह पैदा होते और मरते खपते रहते हैं। सुबह होते ही शाम होती है उम्र यों ही तमाम होती है। और यह पता नहीं चलता कि यह गोरख धन्धा क्यों है और अगर यह न होता तो क्या होता।"

जो बात एक जगह दिखलाई देती है वही सब में दिखाई देती है। सृष्टि का नियम हर जगह एक ही है। जीवन के कार बार में अन्तर हो लेकिन सब के सब एक ही कानून के आधीन हैं। दिन के समय जागे रात को सोये। दिन में जाग्रत के कार बार, रात में स्वप्न का व्यवहार। गहरी नींद में इन दोनों ही का पता नहीं रहता। इनके परदों में क्या है, साइन्स इसकी छान बीन में लगा हुआ है, फलसफा भी इसीके पीछे पड़ा है लेकिन इसका परिणाम क्या है इसका पता किसने किसको दिया।"

दुश्शासन ने भरी सभा में द्रौपदी का चीर उतारना चाहा लेकिन वह उसे नंगी नहीं कर सका। इसी तरह असलियत को भी कोई परदा फाड़कर नहीं देख सका। फिलास्फर और तत्ववेता इसी धुन में लगे हुए हैं और बराबर लगे रहेंगे ! यह गुत्थी कभी सुलझेगी या नहीं इसे कौन कह सकता है ! यह द्रौपदी का चीर है।"

रात के समय सोमदत्त ने रविदत्त से मिरजापुर जाने की

आज्ञा माँगी। एक सप्ताह तक मिरजापुर रहने की आज्ञा मिली। सुबह होते ही उसने पैदल गोपीगंज की राह ली। बाप ने ताकीद की कि वह अपनी खैरियत का तार रोज धाम में भेज दिया करे। लड़के ने मान लिया और ऐसा ही किया।

सुबह को चाय के लिए रविदत्त को दूध न मिला। दूध श्यामा दे जाती थी या कभी कभी मनोरमा लाती थी। इनमें से कोई भी नहीं आया। उसने बिना दूध की चाय पी। दोपहर को रविदत्त ने माता बदल दहा से पूछा कि दूध क्यों नहीं आया? वह बोले—"पता नहीं क्यों नहीं आ सका।" पूछने का वादा करके घर चले गये।

शाम हुई। उधर मिरजापुर से सोमदत्त की खैरियत का तार आया। इधर माता बदल ने खबर दी कि झोंपड़ा खाली है। श्यामा और मनोरमा दोनों गायब हैं।

रविदत्त को आश्चर्य हुआ। उसे अब तक अपने लड़के की ओर से पूरा पूरा इतमीनान था। लेकिन एक ही समय में सोमदत्त श्यामा और मनोरमा का चला जाना एक ऐसी बात थी जो कम से कम औरों को नहीं रुकिमणी और रविदत्त को परेशान करने के लिए काफी थी। ऐसा क्यों हुआ। न वह किसी से पूछ सकता था न कोई ठीक जवाब ही दे सकता था।

रविदत्त—"श्यामा और मनोरमा क्या हुईं?"

माता बदल दहा—"मुझे मालुम नहीं है।"

रविदत्त—"तुमने कुछ तो सुना होगा।"

दहा—"पूछने पर इतना पता लगा कि अहीरनी ने अपनी गायें शिवनायक कोयरी के हाथ रातों रात थोड़े दाम

पर बेच कर दाम ले लिया और कौन जाने कब गाँव से चली गई।"

रविदत्त—'वह कहाँ गई ?'

दद्दा—'इसका किसी को पता नहीं है।'

रविदत्त—'उनके कोई सम्बन्धी यहां या और कहीं रहते हैं ?'

दद्दा—'मैं नहीं जानता।'

रविदत्त—'वह पहिले भी कहीं आया जाया करती थी ?'

दद्दा—'जहाँ तक मुझे याद है तेरह वर्ष से मैं ने उनका कहीं आना जाना नहीं सुना। आपको क्यों उनकी खोज है ? क्या आप ने उनको दूध का पेशगी दाम दिया था ?'

रविदत्त—मैं ने कभी पेशगी नहीं दिया।'

दद्दा—'फिर आप को क्या फिक्र है ? गाँव में ऐसा आना जाना लगा ही रहता है। अगर कोई नई बात हो तो मुझे बताइये। जाकर मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँ।'

रविदत्त—'नहीं ! नहीं ! ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने कभी श्यामा या मनोरमा को बदसलूकी नहीं देखी। सिवाय दूध लेने के मेरा उन से और कौन सा सम्बन्ध था !'

दद्दा—तो जाने दीजिए। मैं कल से दूसरा अहीर आप के लिए ठीक कर दूँगा। दूध समय पर और अच्छा मिल जाया करेगा।'

लीजिये ! कहां रविदत्त माताबदल से सवाल कर रहा था कहाँ माताबदल दद्दा ने एक सवाल और जड़ दिया और उसे जवाब तक न आया। श्यामा के सवालों के समय भी एक बार उसे इसी तरह लाजवाब होना पड़ा था।

दिन तो किसी तरह बीत गया। रात के सत्संग के पीछे जब वह सोने गया रुक्मिणी ने भी पूछा पेखी का सिलसिला छेड़ दिया।

रुक्मिणी—'तुम आज क्यों इतने घबराये हुये हो ?'

रविदत्त—'मनोरमा श्यामा सोमदत्त एक ही समय में गायब हुये हैं ! इसीसे चिन्ता हो रही है।'

रुक्मिणी—'मनोरमा और श्यामा से तुमको क्या वास्ता !' वह चली गईं तो चली गईं। तुम्हारा लड़का तो कुशल से है।

रविदत्त--'तू नहीं समझ सकती। क्या कहूँ ! न कहा जाता है न चुप चाप रहा जाता है।'

रुक्मिणी--'कोई ऐसी बात है जो अब तक तुमने मुझसे छुपा रक्खी है ?'

रविदत्त—'बात कुछ ऐसी ही है।'

रुक्मिणी—'तो साफ क्यों नहीं कहते ?'

रविदत्त—'क्या कहूं ! कोई बात भी हो ! आज मुझे अफसोस है कि मैंने क्यों अब तक सोमदत्त का विवाह नहीं कर दिया। मैंने भूल की। अब क्या हो सकता है।'

रुक्मिणी—'चिन्ता व्यर्थ है। तुम ने जो किया अच्छा ही किया और लड़का भी सुशील और होनहार है। उसकी ओर से मुझे पूरा पूरा इतमीनान है।'

रविदत्त—'यह तो ठीक है। खयाल यह आता है कि कहीं वह मनोरमा के हत्थे न चढ़ गया हो ! लड़का लड़का ही है। वह दुनियाँ के हथकंडों को नहीं जानता। मनोरमा बड़ी रूपवती है। कहीं उसके फेर में न पड़ गया हो ! कोई बात ठीक ठीक नहीं कही जा सकती।'

रुक्मिणी--'आशा तो नहीं है कि वह मनोरमा के जाल

में फँस जाय ! यों कुछ कहा भी नहीं जाता। तुम खयाल करते होगे कि सोमदत्त मनोरमा और श्यामा को अपने साथ मिरजापुर ले गया होगा। यह लाख जन्म नहीं हो सकता और न उसने कभी ऐसा किया होगा। पढ़ा लिखा समझदार है। मनोरमा और श्यामा आप मिर्जापुर न गये होंगे।'

रविदत्त—'इसका विश्वास कैसे हो ?'

रुक्मिणी—'श्यामा बड़ी समझदार है। मैं ने कल उसकी बात सुनी थी। वह लालची भी नहीं है। अगर वह ऐसी न होती तो अब तक मनोरमा को अपने वश में न रख सकती। मनोरमा भी बुरी लड़की नहीं है। दोनों ही नेक और धर्मात्मा दिल रखते हैं।'

रविदत्त—'तेरी समझ मुझ से अच्छी है। मैं ने इस तरह विचार नहीं किया था। यह तो मुझे विश्वास हो गया कि सोमदत्त अकेला मिरजापुर गया है। वह घर में है और अकेला है लेकिन जो बात शक में डालती है वह यह है कि यह तीनों एक ही दिन और एक ही समय में कैसे यहां से गये।'

रुक्मिणी—'इसके लिये भी चिन्ता न करनी चाहिये। सोमदत्त तो पहिले ही से मिरजापुर जाना चाहता था। यह मैं जानती हूँ। तुम ने उससे मनोरमा का इशारा किया होगा। वह चिढ़ गया और तुम्हारी आज्ञा लेकर चला गया। कल तुम्हारी बातों से श्यामा को खटका हो गया होगा। लड़की सालों से उसके साथ रहती है। तुमने उससे सवाल किये जिससे वह चौकन्नी हुई होगी कि अब यहाँ रहने में कुशल नहीं है। यह भी हो सकता है कि उसने अपने आप नतीजा निकाला हो कि तुम सोमदत्त के साथ मनोरमा की शादी

करना चाहते हो। यह उसे अच्छा नहीं लगा और उसने झट पट यहाँ से डेरा डंडा उठाने ही में अपनी भलाई समझी हो। बस इतनी सी बात है। इसके सिवा और कुछ नहीं है।'

रविदत्त—'तू बड़ी सयानी है। आज तक मैं तुझे साधारण स्त्री समझता रहा। अब पता लगा कि तू मुझ से भी समझदार है। अब मेरी तसल्ली होगई वरन् सोच विचार में गोते खाता रहता।'

रुक्मिणी—'वह हालत पूरे तौर पर दूर नहीं हो सकती। जब आदमी के दिल में भ्रम का भूत घुस जाता है तो वह सौ सौ नाच नचाया करता है। इसका इलाज यही है कि सोमदत्त का विवाह झटपट कर दिया जाय। यह तो तुम अच्छी तरह समझ रक्खो कि सोमदत्त मिरजापुर से और जगह न जायगा। सात दिन तक बराबर उसके तार आते रहेंगे। अगर कहो तो मैं आदमी भेजकर उसे जल्द ही बुलवा दूँ।'

रविदत्त—'इसकी जरूरत नहीं है। तेरी बात मेरे दिल में गड़गई। मैं भ्रम में फंसा हुआ था। अब वह जाता रहा।'

रुक्मिणी—'मालिक को लाख लाख धन्यवाद है कि तुम असलियत को समझ गये लेकिन मैं औरत हूँ। इस समय तक विश्वास के साथ नहीं कह सकती कि सोमदत्त की दिली हालत कैसी है। श्यामा या मनोरमा ने तो उसे कभी न बहकाया होगा क्योंकि उनकी नीयत ऐसी नहीं मालूम होती थी। हां! अगर लड़के के दिल पर मनोरमा की सुन्दरता और लावण्य का जादू चल गया हो तो उसके लिये मैं कुछ नहीं कह सकती क्योंकि मैं पूरे हालात नहीं जानती और न मैंने इधर कई दिनों से सोमदत्त की सूरत शक्ल देखी है।'

—:०:—

तीसरा भाग

पहिला अध्याय

जन्म कर्म

दुनिया कैसे पैदा होती है ? और दुनिया किसे कहते हैं इसकी व्याख्या सन्तों ने अच्छी तरह से की है। उन्होंने इसे खोलकर समझाया है। उनका फल्सफा सारी दुनिया से निराला है। वह कहते हैं कि समुद्र में लहरें उठती हैं। यह स्वाभाविक हैं। लहरें आपस में रगड़ खाती हैं और एक दूसरे की लगातार छूत से उन्हें विशेष आनन्द मिलता है। इस आनन्द मिलते रहने से भी उनकी आनन्द की प्राप्ति की इच्छा और भी बढ़ती ही जाती है। इसी के सिलसिले में फिर तत्व, पंच भूत, इन्द्रियाँ, मन बुद्धि चित अहंकार और शरीर आदि पैदा हो हो कर मनुष्य और पशुओं की उत्पत्ति का सिलसिला चल निकलता है और दुनिया पैदा हो जाता है। वह वासना, इच्छा और अहंकार को दुनिया बताते हैं। इसके सिवा और किसी को दुनिया नहीं मानते। यह सच है या झूठ इसे सन्तों और फकीरों के फल्सफे के प्रेमी जानें।

सोमदत्त ने मनोरमा को देखा। दोनों की आंखें चार हुईं। आंखों से धारें निकलकर एक दूसरे से टकराईं और उनमें इस आनन्द के भोगने की विशेष इच्छा उत्पन्न हुई। इच्छा के आते ही बात चीत का सिलसिला चल निकला। फिर क्या था! वह उसके घर गया, मिला जुला। उसका

तीव्र बुद्धि देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसका घना ध्यान करते करते यह कुछ का कुछ होगया।

सोमदत्त अब वह सोमदत्त नहीं रहा जो मनोरमा के मेल से पहिले था। उसकी जाति की छान बीन और पूछा पेखी बहाना ही बहाना थी। दिल की कुछ और ही दशा थी। मनोरमा का ख्याल उसे भूत बनकर चिमट गया। वह समझदार पढ़ा लिखा और होनहार लड़का था लेकिन मनोरमा के खयाल ने घना होकर उसे बुरी तरह दबोच लिया।

रेशम का कीड़ा इसी तरह अपने अन्दर से सूत निकाल कर कुकड़ी बनाता है और आप इसके अन्दर फँस जाता है। आदमी भी अपने खयाल में आप फँसता है और उसी का हो रहता है। इसी का नाम दुनिया है। इसके सिवा दुनिया और कुछ नहीं है।

धाम से थोड़े दिनों के लिए वह इस लिये चला गया था कि रविदत्त को शक करने का मौका न मिले। वह आप भी सँभल कर रहना चाहता था। बहाना करके मिरजापुर चला गया। शरीर की दृष्टि से तो वह मनोरमा को छोड़ गया लेकिन दिल के शीशे में उसका ख्याली अक्स साथ ले गया और फोटो ग्राफर की तरह मिरजापुर में वह उसकी तसवीर बनाने लगा। अकेला था, ख्याल में मस्त पड़ा रहता था। लाइब्रेरी में गया। किताबें लाया और जन्म कर्म के सिद्धान्त पर विचार करने लगा।

चौकन्ना वह परले दर्जे का था। बाप के कहने का उसे बहुत खयाल था। वह तार रोज धाम में भेजता रहा। ठीक आठवें दिन वह धाम में वापस भी आगया। माँ बाप दोनों उसे देखकर खुश होगये। रविदत्त ने तो यह समझा कि लड़का मनोरमा को भूल गया लेकिन रुक्मिणी औरत थी।

औरत मर्द से बढ़कर सोच विचार वाली होती है। उसने सोमदत्त के हृदय में मनोरमा की छुपी तसवीर देख ली। आँख ही तो है। रविदत्त ने सोचा कि लड़के में जांच पड़ताल करने की खास दिलचस्पी है। रुक्मिणी ने देखा कि उसमें स्त्री की इच्छा उत्पन्न हो गई है और उसका विवाह कर देना ही ठीक है।

माँ बाप ने मिरजापुर का हाल पूछा। उसने कहा शहर में ताऊन जोरों से फैल रहा है, चूहे मरते जा रहे हैं, सब लोग भयभीत होकर शहर छोड़ रहे हैं और भगदर की सूरत रही है। दो चार दिन में शहर सुनसान और खाली हो जायगा।'

रविदत्त ने कहा—'अच्छा किया चले आये। धाम जगत में है। यहां का जल वायु शुद्ध है।'

सोमदत्त—'आने का विचार नहीं था। बादे के खयाल से चला आया।'

रविदत्त—'वहाँ जाकर तुम ने क्या किया?'

सोनदत्त—'जन्म कर्म के सिद्धान्त पर विचार करता रहा।'

रविदत्त—'किस नतीजे पर पहुंचे?'

सोमदत्त—'जन्म का फलसफा ठीक है। ब्राह्मण के घर ब्राह्मण और क्षत्रियों के घर क्षत्री का पैदा होना सम्भव है, क्योंकि औलाद को माँ बाप के संस्कार प्राकृतिक नियम के अनुसार मिलते रहते हैं। अगर संगत और शिक्षा का प्रभाव न पड़े तो ब्राह्मणों के घर ब्राह्मण ही पैदा होंगे। इस में कुछ भी सन्देह नहीं है।'

रविदत्त– 'लेकिन तुम ने यह भी तो सुन रक्खा है कि वली के घर शैतान और शैतान के घर वली पैदा होते हैं।'

सोमदत्त –ब्राह्मण का लड़का तो जन्म से ब्राह्मण ही होगा। हाँ! कर्म बीच में रुकावट डाल देता है। इसलिये वह जन्म के संस्कार को दबाकर उसे कुछ का कुछ बना देता है। जन्म का संस्कार तो बुनियाद (नींव) है। कर्म का संस्कार बाहरी सामान है। बुनियाद तो जैसी है वैसी है लेकिन कर्म, औरों के खयाल, मेल जोल और शिक्षा इत्यादि मिल मिलाकर उस बुनियाद पर खास तरह की दीवार, दरवाजे, दरीचे और छत बना देते हैं। इस लिये वह खास तरह की बन जाती है। अगर कहीं जन्म के संस्कारों के साथ वैसी ही संगत और शिक्षा के सामान भी मिलते रहें तो ब्राह्मण का लड़का हर तरह से ब्राह्मण ही साबित होगा।'

रविदत्त—'लेकिन यह कोई अटल नियम की बात तो नहीं है। नूरा और नीमान तो अपढ़ गँवार और नादान जुलाहे थे। उनके यहाँ कबीर साहेब कैसे पैदा हुये जो सच्चे अर्थ में सच्चे ब्राह्मण थे! इसी तरह चमारों के यहाँ रैदास जी का कैसे जन्म हुआ जो अपने समय के अद्वितीय भक्त हो गये हैं। इसका जवाब तो तुमने नहीं दिया।'

सोमदत्त—'जवाब तो मैं देचुका। आपने उस पर विचार नहीं किया। चमार तो चमार ही हैं। यह हो सकता है कि गर्भाधान के समय उनके दिलों में किसी महान तेजस्वी पुरुष का ध्यान रहा हो, इस लिये ब्राह्मणी रूह खिंचकर चली आई। उसे शरीर तो चमार का मिला लेकिन रूह ब्राह्मण की थी और खयाल के जबरदस्त होने की वजह से उसने पैदा होकर वैसी ही संगत और शिक्षा से लाभ उठाया। फिर उसके सारे कर्म धर्म ब्राह्मणों जैसे हो गये।'

रविदत्त—'यह शैतान के घर वली पैदा होने का कारण है लेकिन वली के घर शैतान कैसे पैदा हो जाते हैं ?'

सोमदत्त —'आदमी का दिल खयालों का अथाह समुद्र है जिसके अन्दर संस्कारों की लहरें बराबर उठती रहती हैं। वहाँ भी वही नियम काम करता है। सम्भव है कोई अच्छे से अच्छा ब्राह्मण रहा हो लेकिन स्त्री प्रसंग के समय किसी बुरे आदमी का घना ध्यान आ गया हो। फिर वैसी ही रूह खिचकर गर्भ में चली आई। उसने जन्म लेकर वैसे ही संस्कार को दृढ़ किया और वैसी ही शिक्षा भी पाई। ऐसी दशा में उसका बुरा होना प्राकृतिक नियम के आधीन है। यही कारण है कि कभी कभी वली के घर शैतान पैदा होजाते हैं। सूरत शक्ल तो ब्राह्मणों जैसी होती है लेकिन रूह और तरह की होती है।

रविदत्त —'तू ने इस सिद्धान्त पर बहुत सोच विचार किया है। यह खुशी की बात है।'

सोमदत्त —'आप का कहना ठीक है। मैं ने बहुत अच्छी तरह से इसकी छान बीन की है। प्राकृतिक नियम के अनुसार मां बाप का असर लड़कों में बहुतायत के साथ आता है। देखिये न बहुत से लड़कों के शरीर की बनावट उनके माँ बाप के शरीर की बनावट से बहुत ही मिलती जुलती है—वैसे ही हाथ पाँव, सूरत शक्ल आंख नाक सब मिलते हैं। जैसे यह सब चीजें विरासत में मिलती हैं वैसे ही रूह और दिल दिमाग को विरासत भी मिला करती है। किसी किसी का शरीर तो मां बाप से नहीं मिलता लेकिन समझ बूझ सोच विचार और आचरण वैसे ही होते हैं। किसी किसीके रंग तो माँ बाप की

तरह हैं लेकिन शरीर की बनावट नहीं मिलती। यह आप देखते ही रहते हैं।

रविदत्त – 'मैं इसे समझता हूँ। तू इस सवाल का जवाब किस तरह देगा ?'

सोमदत्त—'इसमें एक दो तरह के संस्कार काम नहीं करते। उनका जानना भी आसान नहीं है लेकिन सोचने विचारने से पता लग सकता है। जैसे कोई ब्राह्मणी है। गर्भाधान की रात के बाद ही सुबह के समय उसने किसी चमार या मल्लाह की सूरत देखी उसका अक्स आँखों की राह से दिल में चला गया। उससे जो बच्चा पैदा होगा वह माँ बाप की सूरत शक्ल का नहीं होगा बल्कि उसी चमार या मल्लाह से इसकी सूरत मिलती जुलती होगी।'

रविदत्त – 'सच है! ऐसी घटनायें देखने और सुनने में आती रहती हैं। आश्चर्य के साथ कभी भ्रम और सन्देह भी लोगों को उत्पन्न हो जाया करता है। अनसमझ और नादान और का और समझ लेते हैं। जो इसे नहीं जानते वह अनाप शनाप बका करते हैं। जो इसे समझते हैं वह चुप चाप रहते हैं।'

सोमदत्त—'इसके सिवा और इलाज ही क्या है ? मैं इस बात पर एक सप्ताह तक अच्छी तरह विचार करता रहा। आपसे क्या कहूँ जमीन आसमान के भेद मेरी खयाली आँखों के सामने खुल गये। दिल ही तो है जिधर लगा लग गया! फिर वैसे ही अनुभव होने लग गये। इस सिद्धान्त पर विचार करते समय यह बात मेरे दिल में अच्छी तरह बैठ गई कि आदमी जो चाहे वह कर सकता है और जैसी इच्छा हो वैसा

ही बन भी सकता है। सिर्फ अपने खयाल को मजबूत कर लेने की देर है। फिर प्राकृतिक नियम से उसे बराबर मदद मिलती रहती है और वह थोड़े दिनों में इस योग्यता का मनुष्य बन जाता है कि देखने वाले दाँतों उँगली दबाते हैं।

दूसरा अध्याय

जन्म कर्म का सिद्धान्त

रविदत्त—'बात तो ठौर ठिकाने की है? लेकिन जब संस्कार बदल सकता है तो यह कहना कि ब्राह्मण के घर में बराबर ब्राह्मणपने का संस्कार रहेगा ठीक नहीं मालूम होता।'

सोमदत्त—'इस कहने से आपका मतलब क्या है। अपने मतलब को साफ साफ कहिये तो मैं उसका जवाब दूँ।'

रविदत्त—'मान लो मोहन लाल जाति का ब्राह्मण है। उसमें ब्राह्मणों के गुण और संस्कार हैं। उसके लड़के बाबू लाल ने ब्राह्मण होते हुये और ब्राह्मण कहलाते हुये भी ऐसी राह पकड़ी जो ब्राह्मणों के लिये निषिद्ध है। तो अब यह आशा रखनी चाहिये कि ब्राह्मण बनना सिर्फ मोहनलाल तक था। उसके बाद यह सिलसिला जाता रहा और अब उसके कुल में ब्राह्मणपने का संस्कार न रहेगा।'

सोमदत्त—'अब तक आपने अपने विचार को साफ नहीं किया।'

रविदत्त – ठीक है। मैं कर्म से ब्राह्मण मानता हूं। तुम जन्म से ब्राह्मण मानते हो।'

सोमदत्त— 'मैं जन्म और कर्म दोनों से ब्राह्मण मानता हूँ। ब्राह्मण पैदाइशी भी होते हैं और कर्म से भी होते हैं लेकिन जो जन्म के ब्राह्मण होते हैं और ब्राह्मणों के कर्म भी बराबर करते रहते हैं वह उनसे कहीं सच्चे होते हैं जो जन्म के ब्राह्मण नहीं हैं क्योंकि जन्म के ब्राह्मणों में ब्राह्मणपने का संस्कार बहुत ही घना होगा।'

रविदत्त—'तुम ने इनसाफ से काम लिया है। इससे भी पाया जाता है कि ब्राह्मण कर्म से होता है। जन्म से नहीं होता। अगर कर्म न हो तो फिर जन्म से ब्राह्मण नहीं बन सकता।'

सोमदत्त – 'यह तो सच है लेकिन आप अपनी पहिली शंका को भूल गये। जो हमारे खयाल का केन्द्र था वह बहुत दूर हो गया। आपने कहा था कि ब्राह्मणपने का संस्कार पुश्त दर पुश्त नहीं रहता किंतु बदल जाता है और मेरा विचार एक दम इसके विरुद्ध है।'

रविदत्त—'वह किस तरह ?'

सोमदत्त—'मोहनलाल सच्चा ब्राह्मण है जो कर्म और जन्म दोनों ही से ब्राह्मण है लेकिन उसका लड़का बाबूलाल जन्म का तो ब्राह्मण है लेकिन कर्म का ब्राह्मण नहीं रहा। आप के विचार के अनुसार उसका संस्कार बदल गया। इस बाबू-लाल के लड़के रामलाल में ब्राह्मणपने का संस्कार नहीं होना चाहिये। मैं कहता हूं—नहीं ! ब्राह्मणपने के संस्कार एक दो पुश्त तक चाहे किसी वजह से दब जाँय लेकिन वह पूरे तौर

पर नाश नहीं होंगे। सम्भव है वह तीसरी चौथी पुश्त में फिर जोर मारें और मोहनलाल की औलाद के कई पुश्त बाद फिर ब्राह्मणपने वाले ब्राह्मण पैदा हो जाँय। संस्कार का सिलसिला बहुत दूर तक चलता है। वह जल्द ही दब नहीं जाता। इसलिए अगले जमाने के ऋषियों ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र कई जातियाँ बनाई थीं जिससे जो जिस जाति का है वह उस जाति में रहने और उसका अहंकारी बने रहने से अपने अगले संस्कार के सिलसिले को जारी रख सके।"

रविदत्त—"कोई ऐसी मिसाल दे सकते हो जिससे तुम्हारी बात का सबूत मिले?"

सोमदत्त—"आप मिसाल क्यों माँगते हैं। अपनी आंखों आप हिन्दुओं के जाति कर्म और स्वभाव को देखिये। ब्राह्मणों में ब्राह्मण, क्षत्रियों में क्षत्रिय, वैश्यों में वैश्य और शूद्रों में शूद्र निकलते हैं! जानवरों में शेर भेड़िया रीछ, बन्दर, कुत्ते और बिल्ली की नस्ल अलग है क्योंकि यह सब के सब खास संस्कार से पैदा हुये हैं। जब इनकी नस्ल चली आती है तो फिर आदमियों में ब्राह्मणों की नस्ल क्यों न चलेगी। नियम तो हर जगह एक ही है। हाँ मिल जाने से संस्कार के बिगड़ने और भ्रष्ट हो जाने का डर रहता है और इसका नतीजा अच्छा नहीं होता। जैसे शेर में शेर होने के गुण हैं। वह किसी न किसी तरह शेर बना रहेगा लेकिन अगर कामातुर होकर अपने से निचले दरजे की शेरनी के साथ सम्बन्ध पैदा करेगा तो उसकी औलाद और तरह की होगी क्योंकि यहाँ दो तरह के संस्कारों का मेल होगया! इसी तरह अगर ब्राह्मण अपनी नस्ल को शुद्ध रक्खें तो चाहे ब्राह्मणपने के संस्कार कुछ दिनों के लिए दब जाँय लेकिन वह एक दम

लोप न होजायेंगे। किसी न किसी पुश्त में अच्छे सामान पाकर वह फिर उभर खड़े होंगे और सच्चा ब्राह्मण पैदा कर दिखायेंगे।"

रविदत्त—"तुम्हारी बात जोरदार है। क्या परशुराम और विश्वामित्र के विषय में भी तुम्हारा ऐसा ही विचार है?"

सोमदत्त—"नतीजा तो यही निकलता है कि यह संस्कार के गपलचौथ होने से ऐसे हो गये। परशुराम जी ब्राह्मण होते हुये क्षत्रिय और विश्वामित्र जी क्षत्रिय होते हुए भी ब्राह्मण थे। मैंने इन बातों पर अच्छी तरह से मनन किया है लेकिन कोई प्राचीन लेख न मिलने से मैं ठीक ठीक नतीजा नहीं निकाल सका। यह मिले जुले संस्कारों के उदाहरण कहे जा सकते हैं।"

रविदत्त—"मैं कोई ऐसा उदाहरण चाहता हूँ जिसमें जन्म के संस्कार दबकर दूसरी तीसरी पुश्त में फिर उभर खड़े हुये हों।"

सोमदत्त—"सुनिये:—राना सङ्गरामसिंह (रानासांगा) अपने समय का बहुत ही बहादुर और सच्चा राजपूत हुआ है, जो अस्सी जख्म खाने और शरीर में टांके लगने पर भी बाबर बादशाह से मैदान में लड़ने आया था। अगर इसके और साथी राजपूतों ने धोखा न दिया होता तो यह हिन्दुस्तान का शहनशाह हुआ होता। इसके पीछे इसका लड़का उदयसिंह गद्दी पर बैठा जिसके नाम से उदयपुर की रियासत मशहूर है। यह कायर और बड़ा ही डरपोक था। चित्तौड़ की लड़ाई में यह अकबर से हार गया और फिर सामना करने का साहस न कर सका। इसका लड़का प्रतापसिंह (राना प्रताप) रानासांगा की तरह सच्चा और लड़ाका राजपूत

निकला। वह कहा करता था कि अगर उदयसिंह मेरे और रानासाँगा के बीच में न पैदा हुआ होता तो मैं दिल्ली को जीत लेता और आप जानते हैं कि प्रताप के साथ लड़ाई करने में अकबर के दाँतों में पसीना आगया। फिर भी वह इस मनचले राजपूत को अपने हाथ में न ला सका। यह जन्म के संस्कार की वैसी ही मिसाल है जैसी आप चाहते हैं।"

रविदत्त—"बेटे! तू ने इस फिलास्फी को खूब सोचा समझा है। अगर तू कहीं इस विषय पर कोई अच्छी किताब लिख डाले तो दुनियाँ की कोई यूनीवर्सिटी तुझे डाक्टर आफ फिलास्फी की आनरेरी डिगरी जरूर देगी।"

सोमदत्त हँसा—"अब वह दिन नहीं रहे कि योग्यता देखकर ही डिगरी दी जाया करे। अब पालिसी के साथ कैद लगा दी गई है। कम से कम दो वर्ष विलायत में रहे बिना कोई डिगरी नहीं मिलती। मुझे इसकी इच्छा नहीं है। मैंने तो किसी और ही धुन में पड़कर इस पर सोच बिचार किया था।"

रविदत्त—"वह क्या है?

सोमदत्त—"मनोरमा की असाधारण समझ बूझ को देखकर मैं इस छान बीन में लग गया था। मैंने उसे ब्राह्मणी समझा। श्यामा ने भी उसका ब्राह्मणी होना स्वीकार किया लेकिन सारी बातें उसने नहीं कहीं। आप सब कुछ जानते है। मैं मिरजापुर इन्हीं सब बातों पर विचार करने के लिए चला गया था। दूसरे आप मेरे इस मिलने जुलने से कुछ परेशान हो रहे थे। इस लिए झटपट मैंने यहाँ से खिसक जाना ही अच्छा समझा जिसमें आपका भ्रम जाता रहे। इन

दिनों मैं दिन रात इसी फलसफें को सोचता विचारता रहा।

रविदत्त—'साधारण बात का इतना प्रभाव पड़ता है। यह मैंने आज ही देखा। अब यह बताओ कि इस समय के ब्राह्मणों की तरह तुम भी जन्म को मानकर पक्षपाती बनोगे या कर्म के ब्राह्मण भी मानोगे ?'

सोमदत्त—'मैं पक्षपाती और कट्टर नहीं हूँ। असली चीज कर्म ही है। अगर कर्म का कानून न होता तो जन्म का फलस्फा न चलता। कर्म प्रधान है। जन्म उसके बाद आता है लेकिन क्या अच्छा होता कि ब्राह्मण संस्कार भ्रष्ट न होते और अपने आपको सँभालते और सुधारते हुये अपनी जाति में सच्चे ब्राह्मण पैदा करते। और जातियों के साथ बहुत परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन ब्राह्मणों के लड़के थोड़ी शिक्षा पाकर भी अपने पुराने संस्कारों की सहायता से थोड़े ही दिनों में कुछ के कुछ निकल आयेंगे। मेरा यह विचार है। आप चाहे इसे पक्षपात कहलें लेकिन यह पक्षपात की बात नहीं है।'

रदिदत्त "संस्कार भ्रष्ट से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

सोमदत्त—'ब्राह्मणों का विवाह ब्राह्मणों में हो और वह जप तप में अपना जीवन व्यतीत करें।'

रविदत्त—'यह खयाल बुरा नहीं है, अच्छा है लेकिन अब जो समय आने वाला है उसकी चाल उलटी होगी। इसी मिरजापुर के जिले में लड़कियाँ नहीं मिलतीं। लोग दो दो चार चार सौ रुपये लेकर कौन जाने किसकी लड़कियां इनके हाथ बेच जाते हैं और उनसे संस्कार भ्रष्ट औलाद का सिलसिला चल निकला। जो हो! इसे रोक कौन सकता

है। लेकिन तू ने इस पर बहुत ही गहरा विचार किया है और इस ने तुझे थोड़ा सा पक्षपाती बना दिया।"

सोमदत्त—"नहीं! मैं जन्म के ब्राह्मण को भी मानता हूँ और कर्म के ब्राह्मण को भी मानता हूं। जन्म कर्म दोनों तरह के ब्राह्मण मानता हूं अर्थात् मैं नई और पुरानी दोनों बातों को मानता हूं। धाम में सत्संग करने से मेरा विचार बहुत ही सुलझा हुआ है। मैं हजूर महाराज की एक एक बात को बड़ी गौर से सुनता हूँ।"

रविदत्त—"यह और भी खुशी की बात है। अब तो तुम्हारे विचार का सिलसिला खत्म होगया होगा?"

सोमदत्त—"नहीं! अभी तो मैं ने बुनियाद में कंकरीट डाली है! अब इमारत की दीवार बनेगी और उस पर छत डाली जायगी।"

रविदत्त—"किस तरह?"

सोमदत्त—"जब फिर मिरजापुर जाऊँगा वहाँ की लाइब्रेरी से इतिहास इकट्ठा करूँगा। यहां धाम की लाइब्रेरी से कुछ किताबें लेकर नोट तैयार कर रहा हूँ।"

रविदत्त—"जब से तू गया है तेरी मां कह रही है कि तेरा विवाह जल्द कर दिया जाय!"

सोमदत्त—"क्यों? मेरा ध्यान अब तक इधर नहीं गया है। मैं आजाद रहना पसन्द करता हूँ और आप से आज्ञा चाहता हूँ कि मुझे एम० ए० पास करने का अवसर दिया जाय। जब किसी अच्छे कार बार में लग जाऊँ तब आप को और माता जी को अधिकार है कि जैसा चाहें वैसा करें। इसके पहिले मैं गृहस्थाश्रम के बन्धन में नहीं फँसना चाहता।"

रविदत्त—"इसका फैसला तेरी माँ के हाथ में है। पढ़ने के लिये तो मेरी आज्ञा है। तू जब चाहे कालिज में जा सकता है। बिवाह की छेड़ छाड़ मेरी ओर से नहीं है। तेरी माँ ऐसा कहती है।"

सोमदत्त—"मैं माता जी के साथ खुलकर बात चीत नहीं कर सकता। उन्हें आप समझायें। आपने बचपन से मेरे साथ आजादी का सलूक किया है। इस लिये आपसे जो कुछ दिल में आता है कह देता हूं। माँ के साथ मेरा सलूक और तरह का है। वह कहेंगी मैं सुन लूँगा और चुपके हट जाऊँगा। न 'हाँ' कहूँगा न 'नहीं'।"

रविदत्त—तू नेक सुशील और होनहार है। मालिक तेरी इच्छा पूरी करेगा! तू मेरा इकलौता लड़का, घर का चिराग और माँ बाप की आँखों का तारा है। तू नेक बद की समझ रखता है। तेरे हौसलों और उमंगों को रोकना मैं अच्छा नहीं समझता।"

सोमदत्त—'मिरजापुर में प्लेग आगया। बलिया बस्ती गोरखपर के जिलों में भी भगदर पड़ी हुई है। शहर में जो थोड़े से लोग रह गये हैं वह बीमार पड़ कर मरते चले जा रहे हैं। इस जोर का प्लेग किसी साल नहीं हुआ था। आप यहाँ ही रहियेगा या कहीं जाने की भी नीयत है?"

रविदत्त--"यह जगह अच्छी और खुली हुई है। जलवायु शुद्ध है। रहने के लिए साफ सुथरे कमरे मिले हुये हैं और सब से बड़ी बात यह है कि यहाँ दिन रात में कई बार सत्-संग का लाभ हो जाता है। कम से कम होली तक तो यहाँ रहना जरूरी है।"

सोमदत्त--आप की खुशी! लेकिन आज ही मैं ने गोपी-

गंज के अखबार ग्रामवासी में देखा है कि यहाँ से दो तीन मील की दूरी पर प्लेग फैलने लग गया है। ज्ञानपुर में कई आदमी मर भी चुके हैं। खास गोपीगंज भी इससे बचा हुआ नहीं है।"

रविदत्त—"अभी तू आया है। इस पर फिर सोचेंगे।"

--:o:—

तीसरा अध्याय

सोमदत्त–शिवनायक

रविदत्त और रुक्मिणी को पूरा पूरा विश्वास हो गया कि सोमदत्त का दिल वैसा ही शुद्ध और पवित्र है जैसा कि वह पहिले था और उसके दिल के मन्दिर में अभी तक किसी स्त्री की खयाली मूर्त्ति स्थापित नहीं हुई है। जन्म कर्म के सिद्धान्त को सुनकर वह और भी धोखे में आगये और उनका विश्वास पक्का हो गया। हर चीज का पक्का होना जरूरी है। पकने से मजबूती आती है लेकिन जब कोई चीज हद से ज्यादा पक जाती है तो वह निकम्मी हो जाती है। खाना जरूरत से ज्यादा पका और खराब हुआ। ईंट को ज्यादा आँच दी गई और वह झाँवाँ बनी। ऐसा ही विश्वास के मामले में भी समझना चाहिये। उसकी भी हद होती है। हद से अधिक पका और नतीजा बुरा हुआ।

सोमदत्त सच्चे फिलास्फर की तरह जन्म के संस्कार पर विचार करता रहा। उसने अपनी सारी योग्यता इसमें लगा

दी ! अब तक भी उसे यही खयाल था लेकिन इस उधेड़ बुन की जो सच्ची रूह थी वह उसके जीवन का आदर्श बन गई थी। इसका उसे आप पता नहीं था ! दूसरों के लिये तो उसका पता पाना भी कठिन है। मनोरमा की मनोहर मूर्ति उसकी आँखों में खुब गई थी। मनोरमा ने अपने आप को भाँपने का अवसर नहीं दिया था लेकिन उसके अन्दर इसके खिंचने का सामान जरूर रहा होगा। प्रेम की धारा दोनों ओर से चलती है। ताली उसी समय बजती है जब दो हाथ मिलते हैं। अकेला हाथ आवाज नहीं दे सकता और अगर वह अकेला आवाज भी देना चाहे तो फिर उसकी दो उङ्गलियों को एक दूसरे से मिलकर चुटकी बजानी पड़ती है। यह अटल नियम है और इसी के सहारे सारी दुनिया का कार बार हो रहा है। कोई कहे या न कहे, दिल से दिल मिलकर एक हो जाने की इच्छा रखते हैं।

दिले नादान कहता है, न बोलूँ यार से लेकिन।
जब आँखें चार होती हैं मुरौवत आही जाती है॥
धारें जब मिलेंगी दोनों ही ओर से मिलेंगी !

सोमदत्त ने मनोरमा को देखा, हमदर्दी पैदा हुई। उसकी ओर खिचा। बात चीत का सिलसिला चल निकला। वह बोले, सवाल जवाब हुये। मिलाप तो हो गया। इसका रूप सूक्ष्म था स्थूल नहीं था लेकिन सूक्ष्म वस्तु सूक्ष्म नहीं रह सकती। उसे प्रकट रूप में आने के लिये बहुत सी सूरतें बदलकर स्थूल बनना पड़ता है। खयाल की असलियत को बहुत कम लोग समझते हैं। यह खयाल ही है जिसने दुनियां में करोड़ों रूप धारण कर रक्खे हैं। आदमी पशु महल मकान नदी नाले जंगल पहाड़ अगर खयाली नहीं हैं

तो क्या हैं ! जमीन और असमान तक सब के सब ख्याली हैं। ख्याल आया नहीं कि उसने सूरत पाई नहीं ! सच्चे वेदान्ती इस को समझते हैं। इसलिए वह जगत को कल्पित या ख्याली बतलाते हैं। सन्त महात्मा इस भेद को जानते हैं !

ख्याल आइडियल (Ideal) है। आइडियल (Ideal) आइडिया (Idea) है। दिमाग में इसको जरा घुसने दीजिये फिर यह ऐसे रंग रूप भरने लगता है कि आदमी की बुद्धि चकर में आ जाती है !

मनोरमा का अनुवाद उर्दू में दिलबर है। दिलबर दिल ले जाने वाले को कहते हैं। जो दिलबरी करे वह दिलवर है। इस लिये मनोरमा सोमदत्त के लिए मनोरमा अर्थात् दिलवर ही साबित हुई। वह तो सूरत दिखाकर चली गई लेकिन उसके दिल को अपने साथ ले गई। अब उसका वह दिल नहीं रहा जो पहले था। वह कहां चला गया ? वह दिलवर के साथ गया। शरीर में तो उसकी छाया ही छाया रह गई। आदमी को क्या पता है कि वह कहां रहता है। आदमी के रहने की असली जगह वह है जहाँ उसका दिल बसता है।

तुलसी कमलन जल बसे, सूरज बसे अकास।
जो जिस के मन में बसे, वह नित उसके पास॥

सोमदत्त का शरीर मिरजापुर हो आया और राधास्वामी धाम में अपने माँ बाप के पास है लेकिन दिल दिलदार के साथ है। इसे न वह जानता है न दूसरों को जता सकता है।

वह धाम में आया। आँखें मनोरमा को ढूंढने लगीं। न वह दूध देने आती है न श्यामा दूध लाती है। माताबदल दद्दा ने किसी और अहीरनी को दूध के लिये लगा दिया था।

उसने इधर उधर देख भाल की। पता नहीं चला। लज्जावश किसी से पूछ नहीं सकता था। इसमें भेद के खुल जाने, भाँडा के फूट जाने और अपने बेआबरू होने का डर था। जब माँ बाप नहाने के लिए तालाब को गये, यह चुपके से उठा, छतमी गया, झोपड़े के पास पहुंचा लेकिन वहां क्या था!

देखा तो व[1] गुल हवा[2] हुआ है।
कुछ और ही गुल खिला हुआ है॥

प्रेमी की आंख की तरह उसके फूस के झोंपड़े का द्वार खुला हुआ है। हाय! यह क्या हुआ! रहने वाले किधर चले गये। आश्चर्य्य करने के सिवा और क्या सोचता। झोंपड़े के पास कोई पड़ोसी भी नहीं था जिससे पूछता लेकिन पता लगाने वाले पता लगाने से कब चूकते हैं! आगे बढ़ा शिवनायक कोयरी के घर पहुंचा। श्यामा की गायें उसकी चरनी पर बँधी हुई थीं। शिवनायक हुक्का गुड़गुड़ा रहा था।

सोमदत्त ने पूछा—"भाई! यहाँ एक श्यामा अहीरनी रहती थी। वह कहां चली गई?"

शिवनायक—"मुझे यह नहीं मालूम हुआ कि वह कहां गई।"

सोमदत्त—"उसका कुछ पता भी है?"

शिवनायक—"वह बताकर नहीं गई। रात में चलती होगई। सुबह पता लगा।"

सोमदत्त—"क्यों चली गई?"

शिवनायक "मालुम नहीं है।"

नोट—१— वह। २—गायब।

सोमदत्त—'कब गई ?"

शिवनायक—'आज उसे गये हुये पूरा अठवारा (हफ्ता) हो गया।'

या मालिक! यह तो वही दिन है जिस दिन वह मिरजापुर चला गया था।

सोमदत्त—'लेकिन गायें तो तुम्हारी चरनी पर बँधी हुई हैं। तुमको उसका हाल मालूम होना चाहिये।'

शिवनायक डरा—'क्या आप थाने से आये हैं ?'

सोमदत्त—'नहीं! मैं धाम से आया हूँ। वह वहाँ दूध देने जाती थी।'

उसकी जान में जान आई। गाँव वाले पुलिस वालों से वैसे ही डरते हैं जैसे गाय कसाई की सूरत को देखकर काँप उठती है। उसने उसकी गायें सस्ते दाम पर ली थीं।

सोमदत्त—'क्या तुमने उसकी गायें मोल ले ली हैं ? या तुम्हारी चरनी पर आप बांध गई है ?'

शिवनायक—'मैंने इनको मोल लिया है।'

सोमदत्त—'कितने दाम पर ?'

शिवनायक—'मेरे पास बारह रुपये थे। उसे जल्दी पड़ी थी। इसी दाम पर वह देकर चली गई। मुझे उसके आने का पता नहीं था वरन मैं ऐसा न करता। क्या तुम थाने से जाँच करने आये हो ?'

सोमदत्त या तो चकित हो रहा था या हँस पड़ा—'नहीं नहीं! मैं पुलिस का आदमी नहीं हूँ। इससे इतमीनान रक्खो'

शिवनायक—'मैं ने भूल की। दाम सुन कर सब लोग कहेंगे कि मैंने उसे भगा दिया है लेकिन यह बात नहीं है। मैं न उसके भेद को जानना चाहता था और न यह मुझे बताकर गई।'

सोमदत्त—'तुम बार बार डर के साथ क्यों बात चीत करते हो? इससे तुम आप फँस जाओगे। दो आदमी गाँव से लापता हैं। उनकी गायें तुम्हारे पास हैं। जो सुनेगा क्या समझेगा! मैं यह जानना चाहता हूँ कि वह क्यों गई और कहाँ गई?'

शिवनायक—'दो में से मैं एक भी नहीं जानता। कहूं भी तो क्या कहूँ!'

सोमदत्त—'उस रात को उनका कोई सम्बन्धी कहीं से आया था?'

शिवनायक—'मैं नहीं जानता।'

सोमदत्त—'जरा सँभल कर रहना। अगर कहीं चौकीदार ने थाने में इत्तला दे दी और तहकीकात होने लगी तो तुम मुफ्त में पकड़े जाओगे।'

शिवनायक—'तो मैं क्या करूँ?'

सोमदत्त—'मेरी राय तो यह है कि तुम पहिले ही से उनका पता लगा रक्खो जिसमें अगर तहकीकात की नौबत आये तो कम से कम तुम बच तो सको वरन् लेने के देने पड़ेंगे। मैं तुमको समझा देता हूँ आगे तुम जानो।'

शिवनायक—'बाप रे बाप! मैं ने कोई अपराध नहीं किया। श्यामा आई गाय बेचने लगी। मेरे पास बारह रुपये थे। मैंने दे दिया। वह गाय बाँध कर चली गई। अगर यह

अपराध है तो मैं अपराधी हूं। श्यामा आज आजाय मुझे मेरा रुपया दे जाय और अपनी गायें ले जाय।'

सोमदत्त—'मैं तुमको मुलजिम नहीं बनाता और न मेरा अपना कोई काम है। मै तुमको जता देता हूं कि अगर कोई ऐसी बात हो तो गवाहों का बन्दोबस्त कर रखना।'

शिवनायक डरा—'बाबू! तुम परदेशी मालूम होते हो। मुझे बताओ मैं क्या करूँ!'

सोमदत्त—'देखो! ऐसे अवसर पर दो तरह के सन्देह होते हैं। एक तो यह कि वह मार डाले गये और उनकी गायें ले ली गईं। दूसरे तुमने किसी मतलब से उनको छुपा रक्खा है। दोनों ही बातों में डर है।'

शिवनायक—'राम रे राम? अब क्या करूँ! सस्ता माल समझ कर लिया। क्या यह कोई जुर्म है?'

सोमदत्त—'जुर्म तो नहीं है लेकिन बेचने वालों का रातों रात दो दो गायें बेच कर और उसी समय भाग जाना शक पैदा करता है। शक शुबहे में भी लोग पकड़ लिये जाते हैं। तुम आप समझते हो। जो इसे सुनेगा वह क्या कहेगा। इतनी समझ तो तुम में भी होगी।'

शिवनायक—'बाबू! उस समय मेरी मत मारी गई थी। मैं ने यह नहीं सोचा था। अब तुम्हारी बातें सुनकर डर मालूम होता है।'

सोमदत्त—'डरने की तो बात है।'

शिवनायक—'तो यह बताओ मैं करूँ क्या?'

सोमदत्त—'तुम उसके पड़ोसी हो। यह जरूर जानते होगे कि श्यामा किस गाँव की रहने वाली है। उसके रिश्ते-

दार कौन कौन हैं और कहाँ रहते हैं। वहां से उसका पता ले रक्खो, जिसमें अगर कोई रिपोर्ट कर दे तो श्यामा को गाढ़े दिन में गवाही के लिये तो बुला सको।'

शिवनायक—'वह मुझसे कह कर नहीं गई'

सोमदत्त—'वह छुप छुपाकर इतनी जल्द भाग क्यों गई? क्या किसी की चोरी की थी?'

शिवनायक—'राम! राम!! ऐसा न कहो। वह तो बड़ी धर्मात्मा थी। श्यामा और मनोरमा दोनों स्वर्ग लोक की देवियां थीं। उनके साथ कभी किसी की अनबन नहीं हुई थी। बड़े ही सीदे साधे लोग थे।'

सोमदत्त—'तो यह और भी शक की बात होगी। ऐसी देवियों का इकबारगी भागना, भगाया जाना, छुपना या छुपाया जाना शुबहे से खाली नहीं है।'

शिवनायक—'आठ दिन से तो किसी ने पूछा पेखी नहीं की।'

सोमदत्त—'इसका यह मतलब तो नहीं हो सकता कि कोई फिर न पूछेगा। अच्छा अब जाता हूँ। अगर कोई बात हो तो धाम में आकर बता जाना। मेरा नाम सोमदत्त है।'

चौथा अध्याय

बाप-बेटा

बात से बात पैदा होती है और बात से बात निकलती है।

बात की भी औलाद बढ़ती है। और इसका बहुत बड़ा नतीजा निकलता है।

जब सोमदत्त ने श्यामा का झोंपड़ा खाली पाया उसे आश्चर्य हुआ। जब उसने सुना कि श्यामा घर छोड़कर चली गई उसे बेचैनी हुई। जब यह शिवनायक से पूछा पेखी करने गया द्विचिताई में पड़ गया लेकिन ज्यों ही वह पूछ गछ करने लगा उसको कामयाबी नजर आने लगी। इसे विश्वास होगया कि श्यामा और मनोरमा का पता जरूर ही चलेगा और शिवनाशक ही दौड़ धूप करेगा।

यह दुनिया इसी तरह हैरत (आश्चर्य) के परदे से निकलकर रचना के रूप में आई है। हर जगह एक ही नियम काम करता है। सिलसिला चल निकले, बीज पड़ जाय फिर होने वाली बात होकर रहती है।

सोमदत्त धाम को वापिस आया। उसके दिल में तड़प और बेचैना थी। यह दिल की सरगरमी का दूसरा दरजा है। पहिला दरजा इच्छा, विरह या खोज है, फिर प्रेम और एकता की बारी आती है। इसके पश्चात ज्ञान का आना जरूरी है। विरह, प्रेम, एकता और ज्ञान आपस में घना सम्बन्ध रखते हैं। इच्छा न हो तो चाह कभी न हो। चाह न हो तो लगाव या प्रेम कहाँ से आये! अगर प्रेम न हो तो प्रेमी प्रीतम और प्रेम मिलकर एक कैसे हों! और जब तक यह एकता या अद्वैत भाव न आये तब तक ज्ञान का प्रकाश नहीं होता। सोचिए तब यह बातें समझ में आने लगें।

सोमदत्त के दिल में मनोरमा की इच्छा है। अपने साथ खोज और चाह की बेचैनी लाई। इस बेचैनी के परदे में प्रेम का भाव छुपा हुआ है जो आगे चलकर अद्वैत का रंग

धारण करेगा और यही ज्ञान बनेगा। अभी तो उसने प्रेमी या भक्त के दरजे में पांव रक्खा है।

जब वह धाम को वापिस आया सूरत शक्ल कुछ बिगड़ी हुई थी लेकिन उसने अपने आप को संभाल रक्खा था। इस लिये इसका पता और किसी को नहीं लग सकता था।

रविदत्त ने पूछा—"तुम नहीं धो चुके ?"

सोमदत्त—"अभी नहीं।"

रविदत्त—"क्यों ?"

सोमदत्त—'छुट्टी नहीं मिली।'

रविदत्त—'क्या करते रहे जो नहाया धोया तक नहीं ?'

सोमदत्त—'उसी ख्याली उधेड़बुन में पड़ा हुआ सोचता रहा। जन्म के सिद्धान्त पर आज बहुत गहरा विचार कर रहा था।'

रविदत्त—तुमको खब्त होगया है। इस तरह किसी ख्याल के पीछे पड़ने से बचना चाहिए।'

सोमदत्त—'यहाँ जो कुछ है खब्त ही है। खब्त के सिवा कुछ भी नहीं है और मैं समझने लग गया हूँ कि जो खब्ती नहीं है वह अच्छा आदमी नहीं है।'

रविदत्त—'तू कैसी बहकी बहकी बातें करने लगा !'

सोमदत्त—'अगर यह ठौर ठिकाने की नहीं है तो फिर और किसी का ठौर ठिकाना नहीं है।'

रविदत्त हँसा—तो सारी दुनिया ही खब्ती है औ तू सब को ऐसा ही समझता है। क्या मैं भी खब्ती हूँ।'

सोमदत्त—'इसमें शक ही क्या है !'

रविदत्त को बुरा लगा—'किस तरह ?'

सोमदत्त—'सुनिये और ध्यान दीजिये। एक फारसी शायर कहता है:—

'आबिद व नमाज पंच वक्ते दारद।
जाहिद व कमाल जुहद खब्ते दारद॥
मालूम न शुद कि यार मशगूल व चीस्त!
हर कस ब खयाल खेश खब्ते दारद॥'

इसका अर्थ यह है 'इबादत करने वाले पाँच वक्त नमाज पढ़ा करते हैं। मालिक का भक्त और त्यागी भक्ति और त्याग ही को सब कुछ समझ बैठा है। पता नहीं लगता कि यार किसके साथ लगा हुआ है। सब लोग अपने अपने ख्याल में खब्ती हो रहे हैं।'

किसी को किसी बात का खब्त है किसी को किसी बात का। कोई दुनिया के खब्त में पड़ा है कोई दीन के। सब अपने अपने खब्त का राग अलाप रहे हैं। मेरी समझ में तो ऐसा ही आता है और मैं इस खब्त को बुरा नहीं समझता। जिसको खब्त नहीं है वह न दीन के किसी काम का है और न दुनिया के किसी काम का।'

रविदत्त को आश्चर्य्य हुआ। बात सच्ची थी। दिल में असर कर गई। उसने पूछा—'क्या यह सत्संग भी खब्त है ?'

सोमदत्त झट बोल उठा—'खब्त नहीं तो क्या है ? अगर खब्त न हो तो फिर सफलता कभी न प्राप्त हो। यही तो चीज है जो चंचल दिल को पकड़ती है। यही एक सर और हजार सौदा के मर्ज का इलाज है। यह जब तक नहीं आता

तब तक काम नहीं बनता। मेरी समझ में ज्ञानी ध्यानी योगी यती, तपी, सन्यासी अभ्यासी सूफी फकीर सन्त और साधू सब के सब खब्ती हैं। कोई किसी मंजिल में है कोई किसी मंजिल में है। सभी अपने खब्त को अच्छा और दूसरे के खब्त को बुरा कहते हैं। यह अच्छा बुरा कहना भी तो खब्त है। जैसे सब अपने खब्त में पड़े हुए हैं मैं भी अपने खब्त में हूं। इस में आश्चर्य करने या बुरा मानने की क्या बात है!'

रविदत्त – 'इस समय तो तू ज्ञानियों की तरह बातें कर रहा है और साथ ही साथ अपने खब्त की बड़मार रहा है।'

सोमदत्त– 'यह सब आपकी बदौलत है। मैं आपके खब्त की तसवीर हूँ। बेटा बाप की रूह या उसका जौहर और इत्र कहलाता है। आप खब्ती न होते तो मैं खब्ती कसे पैदा होजाता! जैसे आप वैसा मैं! जो आप वही मैं! यही तो बात है कि मैं जन्म कर्म के संस्कार का मानने लगा हूं।'

रविदत्त--'अब तक तो मैं तुझे नादान और अज्ञानी लड़का समझता था लेकिन तू बड़ा समझदार मालुम होता है।'

सोमदत्त –'नादानी ही के पेट से दानाई पैदा होती है। नादानी न होती तो दानाई आती कहाँ से! अज्ञान से ही ज्ञान की उत्पत्ति होती है। पहिले शून्य था। इसी शून्य से सत् प्रकट हुआ। अज्ञानी ही को ज्ञान का अधिकार है! प्यासों ही के लिए पानी और भूखों ही के लिए रोटी है। मुबारिक हैं वह लोग जो गरीब हैं क्योंकि वह धनवान होंगे। मुबारिक हैं अज्ञानी क्योंकि वह ज्ञान वाले बनेंगे। यह बात मेरी समझ में अब जाकर आई है।'

रविदत्त--'अब तो तू सूफी बन गया।'

सोमदत्त—जिसका दिल साफ होजाय वही सूफी है, मन की निरख परख, चित्त को वश में रखना, गुत्थी को सुलझाना और असलियत को समझना यह सब सूफी के चिन्ह हैं।"

रविदत्त समझ गया कि लड़के के दिल के परदे फटते जा रहे हैं और उसकी बुद्धि तीव्र होती जाती है और सत्संग का परा पूरा लाभ उसे पहुंच रहा है।

रविदत्त ने पूछा—'आज तूने क्या सोचा?'

सोमदत्त—"हमीदा बेगम हुमायूँ बादशाह की रानी थी। हुमायूँ ने शेरशाह के हमलों से तंग आकर राजस्थान के रेगिस्तान की राह ली। थोड़े ही से आदमी साथ थे। वहाँ ठहर गये। हमीदा बेगम को लड़का होने वाला था। एक दिन वह पाँव के तलुओं पर शंख चक्र गदा और पद्म बनाने लगी। हुमायूँ ने पूछा—'यह क्या कर रही हो?' रानी बोली—'ज्योतिषी कहते हैं कि माँ बाप का जैसा ख्याल होता है वैसा ही उनका लड़का भी पैदा होता है। हिन्दुओं का विश्वास है कि जिसके पाँव के तलवों में शंख चक्र गदा और पद्म के चिन्ह होते हैं वह दुनिया में बड़ा ही प्रतापी और भाग्यवान होता है। मैं यह नक्शे अपने पाँव में बना रही हूं जिसमें यह चिन्ह उस बच्चे के पाँव में आयें जो मेरे पेट में है और वह समझ बूझ और इकबाल में बहुत ही बढ़ा चढ़ा हो। यह मेरी इच्छा है।' बादशाह हँसा—तुम्हारा ख्याल मुबारक हो। कुछ दिनों पीछे उसके पेट से लड़का पैदा हुआ जिसका नाम अकबर रक्खा गया। इस लड़के के पाँव पर वह सारे चिन्ह थे। हुमायूँ बादशाह के पास उस समय दौलत नहीं थी जो अपने साथियों को इस खुशी में बाँटता।

उसकी जेब में एक मुश्क का नाफा पड़ा रह गया था। उसने उसे निकालकर और टुकड़े टुकड़े करके अपने साथियों में बाँटा और प्रार्थना की—'या खुदा जिस तरह इस नाफा की खुशबू इस समय चारों ओर फैल रही है ऐसे ही अकबर की नेकनामी और शुहरत भी दुनिया में फैले' इस प्रार्थना में उसके साथी शरीक थे। ईश्वर ने यह बात सुन ली और अकबर न केवल हिन्दुस्तान में बल्कि सारी दुनिया में अपने ढंग का अकेला बादशाह हुआ है। उसकी ताकत, दौलत और दबदबा का कोई बादशाह दुनिया में नहीं हुआ। यह जन्म, जन्म देने और औलाद के जन्म बनाने का सबूत है जिसे कोई झूठा साबित नहीं कर सकता। आज मैं इसी पर सोचता विचारता रहा। इसी लिये नहाने धोने की छुट्टी नहीं मिली।'

मामूली आदमी सोमदत्त की बातों को सुनकर यह नतीजा निकालेंगे कि वह एक दम झूठ बोल रहा था। गया था मनोरमा की खोज में और सोचने विचारने का बहाना बनाने लगा। यह बात झूठ थी। सच्ची बात यह थी कि वह जन्म कर्म के सिद्धान्त पर विचार ही करता रहा। ख्याल तो वही था चाहे वह किसी काम में लगा रहता। आदमी बरतन में दाल चावल डालकर चूल्हे पर रख देता है। वह पकने लगता है और आप घर के काम काज में लग जाता है। खिचड़ी आप ही आप पकती रहती है और समय पर पक जाती है। इसी तरह आदमी का दिल भी बरतन है जिसके अन्दर खयाल के चावल दाल डाल दिये गये। अन्दरूनी आग के चूल्हे पर वह चढ़ा दिया गया। अब वह चाहे जहाँ जाय चाहे जो काम करे, वह खयाल भीतर ही भीतर खुदबुद करता हुआ पकता जाता है। और समय पर उसकी पकी पकाई खिचड़ी हाथ आजाती है। कछुआ पानी में ठहरता है। समय आने

पर रेत में जाकर अण्डे देता है और फिर पानी में चला आता है अण्डे को अपनी सुरत से सेता रहता है। समय पर अण्डा गरमी पाकर बढ़ता और फूटता है। कछुये के बच्चे उसके अन्दर से निकल आते हैं। यहां भी वही बात है।

रविदत्त—"इससे साबित होता है कि जन्म के देने वाले मां बाप होते हैं।"

सोमदत्त—"और मैं अब तक क्या कहता रहा। माँ बाप जन्म के साथी हैं। कर्म के साथी नहीं हैं। कर्म जन्म के विकाश का मण्डल है। अगर कोई असली ब्राह्मण है और ब्राह्मणपने का खयाल उसमें घर कर गया है तो कभी हो नहीं सकता कि उसका लड़का ब्राह्मण न हो। मैं ने बहुत सोच विचार करके यह नतीजा निकाला है। मैं वही हूँ जो मुझे आप ने और मेरी माता जी ने बनाया है। जैसा आप लोगों का खयाल था मैं उसी का साक्षात रूप बन कर आया हूँ। आपने मुझे खब्ती बनाया। बतलाइये तो सही! खब्तपने का बीज कहाँ से आया? पहिले आप खब्ती बने तब आप की औलाद खब्ती हुई। मैं यों ही खिलाफ कानून तो पैदा नहीं हो गया! आप चाहे इसे जानें या न जानें, मानें या न मानें, इसका आपको अधिकार है लेकिन आप दोनों ने मिलकर मुझे अपनी खयाली तसवीर ही बनाई है। मैं आपके खयाल की पूरी और सच्ची तसवीर हूँ।"

रविदत्त—'बेटे! तू तो बड़ा ही समझदार निकला। मुझे ऐसी आशा नहीं थी।'

सोमदत्त—"आश्चर्य है! आईने के सामने खास तरह की सूरत बनाकर आप आते हैं और फिर अपनी छाया उसमें देखकर हैरान होते हैं। कुदरत शीशा है। आप

खयाल की सूरत हैं। जैसी सूरत बनाकर आप उसके सामने खड़े होंगे वैसी ही छाया उस में दिखलाई देगी। इस में शक करने की जरूरत ही नहीं है। सूर्य से चाँद बना वैसे ही रवि से सोम बना। रविवार (एतवार) से सोमवार को तो बनाना ही था। रविवार से सोमवार न पैदा होता तो और क्या पैदा होता। मैं आप का अक्स हूं लेकिन ताबदार अक्स हूँ। असली सूरत चाहे जैसी हो लेकिन शीशे के सामने खड़ी होजाने से वह असली से कहीं बढ़कर मालूम होती है! आश्चर्य है आप अपनी ही उल्टी सूरत को देख कर चकित हो रहे हैं! सोचिये यह सच है या झूठ! इन्साफ आप के हाथ है। तसवीर बनाई। उसे लेकर चमकदार बनाने वाले गुरु के सत्संग में लाये। तसवीर ताबदार बनाई और बनने लगी। अब आप कहने लगे कि तसवीर बड़ी चमकदार है। पिता जी! यह चमक दमक कहाँ से आई! मैंने जन्म कर्म के सिद्धान्त पर बहुत विचार किया है। अब इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि ब्राह्मण के लड़की लड़कों को ब्राह्मणी और ब्राह्मण ही होना है"

—:o:—

पाँचवाँ अध्याय

ताऊन का जोर

बीमारी आगई। दो ही चार दिनों के पीछे आप पास के गाँवों में वह झटपट आँधी की तरह फैल गई। धाम खुली हुई जगह में है। उसके चारों ओर बाग लगे हैं। घना जंगल होने

के कारण पहिले वहाँ कोई नहीं आता था। उस के दो ओर बरसाती नाला धनुष या कमान की शक्ल में बहा हुआ है। जब कोई अकेला दुकेला इधर से निकलता था भय भीत होजाता था। पहिले यहाँ दो चार औरतों के जेवर गहने उतार कर बदमाश भाग गये थे। डर से कोई अकेला इधर आने का साहस नहीं करता था। जब से राधा स्वामी धाम बना उसकी सूरत बदल गई। बाग बगीचे तो पहिले से थे अब मन्दिर धर्मशाला. पाठशाला, अँग्रेजी स्कूल बाजार और कई कुयें बन गये। जगह जो पहिले डरावनी थी अब सुन्दर बन गई। कुये का पानी इतना अच्छा है कि दमे और तपेदिक के मरीज तक इसके पीने से अच्छे हो जाते हैं। धाम में कमरे बहुत से बन गये हैं जो सत्संगियों के रहने के काम आते हैं। जो लोग वहाँ आजाते हैं उनका दिल बहल जाता है।

ताऊन के नाम से आदमी जानवर सब ही डरते हैं। जब यह बीमारी फैलती है सब से पहिले चूहे और गिलहरी इसके शिकार होते हैं। फिर आदमियों की बारी आती है। यह एक तरह की छूत की बीमारी है जो आंखों से न दिखलाई देने वाले कीड़ों से पैदा होती है।

जब यह बीमारी आसपास फैल गई, गाँव वालों ने वहाँ आकर डेरा जमाया। जो कमरे खाली पड़े थे इन्हें रहने के लिए दे दिये गये। जब कमरे भर गये फूस के झोंपड़े उनके चारों ओर बनाये गये। इनमें गाँव से भागे हुये आदमी रहने लगे। थोड़े ही दिनों में आदमियों की इतनी भीड़ और भरमार हुई कि रविदत्त डरा कि कहीं यहाँ भी बीमारी फैल न जाय! उसने सोमदत्त से कहा—'इस समय धाम की आबादी बहुत बढ़ गई है। यहां से कहीं दूसरी जगह चलना चाहिए।'

सोमदत्त—'घबराने की जरूरत नहीं है। आप मिरजापुर नहीं जा सकते। वहाँ बहुत आदमी मर रहे हैं। यह जगह फिर भी गनीमत है।'

रविदत्त—'बीमारी से बचने का ध्यान रखना बुरा नहीं है।'

सोमदत्त—'फिर कहाँ जाइयेगा। इससे अच्छी जगह तो कोई और दिखलाई नहीं देती।'

रविदत्त—'यह सब ठीक है। डर इस बात का है कि अगर भीड़ भाड़ और भी बढ़ी तो यह जगह भी बीमारी से न बच सकेगी। धाम वाले रोक थाम नहीं करते। यह उनके स्वभाव के विरुद्ध है। अगर यह लोग रोक थाम करते तो डरने की कोई बात नहीं थी"

सोमदत्त--'वह क्या कर सकते हैं। धाम तो दुखियों ही के लिये बनाया गया है। आप मालिक पर विश्वास करके यहाँ ठहरिये और देखिये कि क्या होता है।'

रविदत्त को इतमीनान तो होगया लेकिन वह डरता था कि कहीं सोमदत्त बीमार न हो जाय। रुक्मिणी का भी यही खयाल था। यह लड़के पर अपना जान माल न्योछावर समझती थी।

होने वाली बात होकर रहती है। उस दिन शाम को सोमदत्त को बुखार आगया। जंगल में हकीम डाक्टर या वैद्य कहां! घबराहट हुई। मुन्शी गौरी शंकर लाल रजा मौरिख सरकार बनारस खास तबियत के आदमी हैं। दूसरे लोग तो ताऊन का नाम सुन कर भागते हैं। उनका प्राण यों ही सूख जाता है। यह निडर होकर सब के घरों में जाकर अपनी समझ और तजरुबे से दवा इलाज करते हैं।

पहिले भी यह बीमारी इधर कई बार फैल चुकी है। गाँव के गाँव इसने साफ कर दिये। कोई मुरदों को फेंकने वाला तक नहीं था। वह बराबर घूम घूम कर यह काम कराते रहे। सोमदत्त की बीमारी का हाल पाकर यह बिना बुलाये हुये आये। बुखार चढ़ा हुआ था। जो जी में आया दवा देकर चले गये लेकिन बुखार नहीं उतरा। साथ ही गिलटी भी पैदा हो गई थी। रात के समय उसे सरसाम हो गया और ऊल जलूल बकने लगा। जन्म कर्म की फिलासफी उसकी जुबान पर थी। उसने बेहोशी में कई बार कहा—'पिता जी! मनोरमा ब्राह्मणी है अहीरनी नहीं है। मेरा विश्वास हो रहा है कि श्यामा भी इस जाति की नहीं है। सरसाम के समय ऐसी बड़ मामूली होती है लेकिन इससे इस बात का पता चलता है कि मनोरमा और श्यामा का खयाल उसके दिल के परदों में घुस गया था। उस समय इधर कौन ध्यान देने लगा! सब बीमारी से परेशान हो रहे थे।'

जब आधी रात हुई बीमारी बहुत ही बढ़ गई। बुखार तेज हो गया। सोमदत्त एक दम बेहोशी की हालत में था। रोना पीटना मच गया। उस समय तारादेवी भंडारखाने से दौड़ी हुई आई, मरीज को देखा, कहने लगी—'घबराओ नहीं यह अच्छे हो जायेंगे। अगर मेरी बात मानोगी तो घंटों में इनकी हालत ठीक हो जायगी।'

रुक्मिणी—'बीबी! इस लड़के की जान बचादे। तू मुझे जिन्दगी भर के लिये मोल लेलेगी।"

तारादेवी—"जिन्दगी और मौत किसी और के हाथ में है! आदमी तदबीर कर सकता है।"

रुक्मिणी—'बतलाओ! मैं क्या करूँ जिसमें मेरे इकलौते

लड़के की जान बच जाय ?"

तारादेवी—"जो मैं कहूँगी वह मानोगी ?"

रुक्मिणी—'मानूँगी नहीं तो क्या करूँगी।"

तारादेवी—"हजूर महाराज हमेशा घी गुवार खिलाकर लोगों को अच्छा कर देते हैं। इनके सर पर घी गुवार के पट्टों की मालिश करो। घी गुवार जितना खिलाते बने खिला दो और घी गुवार को घी लगा कर गर्म करके गिलटी पर बाँध दो। सुबह तक अच्छे हो जायँगे।'

रुक्मिणी—'लेकिन इस समय घी गुआर कहाँ मिलेगा ?'

तारादेवी—"भंडार खाने के सहन में मेरे भाई चुन्नू सिंह ने कई पौदे लगा रक्खे हैं। मैं जाती हूं। अभी उखेड़ लाती हूँ।"

तारा देवी दौड़ी चली गई, घी गुवार लाई। वह खुद उसका गूदा सोमदत्त के सर में मलने लगी। चुन्नू सिंह ने पट्टे पर से छिलका उतारा, घी लगाया, हलदी छिड़की और तवे पर गर्म करके गिल्टी पर बाँध दी। रविदत्त ने उसके हलक से कई टुकड़े नीचे उतार दिये। वह होश में नहीं था जो खिलाया गया उसने खा लिया। सरसाम के समय कड़वी मीठी का स्वाद किसे मिलता है। मालिश पूरे घंटे भर होती रही, बुखार में कमी आगई और मरीज ने कै कर दिया। बहुत कुछ गन्दगी कै के साथ निकल गई। होश में आते ही उसने पेट के दर्द की शिकायत की। थोड़ी देर पीछे दस्त भी साफ आगया। अब उसे कुछ होश हुआ और माँ बाप को पहिचानने लगा। मालिक की दया से गिल्टी भी बहुत दब गई। मां बाप को विश्वास होने लगा कि अब उसकी जान बच गई लेकिन वह विश्वास निश्चय के दरजे तक नहीं था।

तारादेवी ने कहा—"घी गुवार का गूदा एक बार और खिलाओ जिसमें दो एक दस्त और आजाय।"

रविदत्त ने यह राय मान ली। घीगवार उसके मुँह के पास ले गया। बू सूंघते ही उसने नाक भौं सिकोड़ी लेकिन रविदत्त ने उसे थोड़ा बहुत खिला ही दिया। वह ६ बजे दिन तक सोया किया। जब उठा पाखाने गया। फिर खाट पर पड़ कर सो रहा। कमजोर बहुत ही होगया था। यह मालुम होता था कि वह महीनों का मरीज है। मालिक "ले" से बचाये! यह तो जान ही लेकर छोड़ता है और अगर कोई बच भी जाता है तो महीनों के लिए कमजोर बना रहता है।

बारह बजे सोमदत्त ने आंख खोली, भूख की शिकायत थी। सब लोग खा पी चुके थे लेकिन तारादेवी ने पहिले ही से खिचड़ी तैयार कर रक्खी थी। भण्डारखाने से लाई और उसमें घी डालकर उसे खिला दिया।

रुक्मिणी ने कहा—'बीबी! तुमने मेरे बच्चे की जान बचा ली। मैं तुम्हारा अहसान जिन्दगी भर मानूँगी।'

तारादेवी—'मैंने कुछ नहीं किया। यह सब हजूर महाराज की दया है।'

रुक्मिणी—'तुम मेरे आड़े समय काम आई हो। पता नहीं सोमदत्त को यह बीमारी कैसे होगई! धाम में अभी तक एक आदमी भी बीमार नहीं हुआ।'

तारादेवी—'माई! यह बीमारी अजीब तरह से होती है। अगर सच्ची बात कही जाय तो तुम न मानेगी। तुम्हारा लड़का तुम्हारी वजह से बीमार हुआ।'

रुक्मिणी—'बीबी! यह तुम क्या कह रही हो? माँ और

लड़के को बीमार करे ! यह कैसे हो सकता है !'

तारादेवी—'यही तो बात है जिसे बहुत कम लोग समझते हैं। अगर यह समझ में आजाय तो इतनी परेशानी न उठानी पड़े। हमदर्द माँ ही फीसदी ९९ हालतों में अपने बच्चे को बीमार करती है।'

रुक्मिणी—'बीबी ! मैं तुमको अपनी लड़की समझती हूँ। अगर मैं नहीं समझ सकती तो तुम समझा दो जिसमें मैं भी इस रहस्य को जान लूँ और फिर ऐसा न करूँ।

तारा देवी—'बीमारी अधिकतर ख्याल से पैदा होती है। तुम समझती हो कि खयाल कोई चीज नहीं है। यहाँ जो कुछ है ख्याल ही है। माँ जब क्रोध में हो कभी लड़के को दूध न पिलाये, नहीं तो उस क्रोध का विष दूध में उतरेगा और बच्चा मर जायगा। अगर नहीं मरा तो तरह तरह की बीमारियों में फँसेगा। इसी तरह जब दुनियाँ में कोई बवाई बीमारी पैदा हो तो मां बहुत अहतियात न करे न बीमारी से आप डरे न लड़कों को डराये। यही डर और भय के खयाल धार की सूरत में उसके दिल से निकलकर लड़कों के दिलों में जगह कर लेते हैं और बीमारी की छूत बच्चों को लग जाती है। चेचक की बीमारी इसी तरह फैलती है। इस समय तुम को डर लगा हुआ था कि कहीं सोमदत्त ताऊन से बीमार न होजाय ! उसे तुम्हारे साथ हमदर्दी है। मां की ममता लड़के के साथ बहुत होती है। तुम्हें डर लगा उन्हें भी डराया। तुम्हारे डर के ख्याल की धार आकाश मंडल में फैली। वहां से ताऊन के कीड़े खींच लाई और उन्हें लड़के के दिल में भर दिया ! वह बीमार पड़ गये। तुम जितनी परेशान होती जाती थीं उतनी ही तुम्हारे लड़के की बीमारी तुम्हारी वजह से

बढ़ती जाती थी। मैं समय पर आगई। तुमको और सोमदत्त को हमदर्दी का ख्याल दिया। मेरी सेहत की खयाली धार उनके दिल में जम गई। वह अच्छे होरहे हैं और जल्द अच्छे हो जायेंगे।"

रुक्मिणी—'लेकिन तुमने तो घी ग्वार से उसका इलाज किया था।

तारादेवी—'असली दवा तो मेरी हमदर्दी थी जो हर मर्ज की दवा है। अगर उस वक्त मैं यह बातें तुम्हें समझाती तो तुम समझ न सकतीं। इसलिये चुप हो रही। घी ग्वार की याद आगई। उसी के बहाने अपनी सेहत की खयाली धार को उसके दिल के अन्दर पहुंचाया। इलाज खयाल ने किया। घीग्वार का नाम ही नाम था। अब इस नियम को समझकर काम में लाओ। फिर सब लोग ताऊन से बच सकोगे। दुख की जड़ अज्ञान में है। इसी अज्ञान से भ्रम उत्पन्न होता है और यह दुखदायी साबित होता है। अगर आदमी अभय हो तो उसे कोई दुख न सताये। भय आप बहुत बड़ा मर्ज है जो दिल की हालत को बिगाड़ देता है और दिल के बिगड़ने से रोग का पैदा होना जरूरी है। भय न हो तो फिर बीमारी न हो। अब तुम समझ गईं?"

रुक्मिणी ने इसे खाक भी न समझा होगा लेकिन अपनी नादानी छुपाने के लिये उसने मान लिया कि वह अच्छी तरह से इस सिद्धान्त को समझ गई।

सोमदत्त ताऊन से बाल बाल बच गया। उसकी दशा देखकर सब लोग रोज सुबह को थोड़ा थोड़ा घीग्वार खाने लग गये और धाम में किसी को ताऊन की शिकायत नहीं हुई।

चौथा भाग

पहिला अध्याय

पते पते की बात

श्यामा और मनोरमा क्या हुये इसका पता किसी को नहीं लगा और पता कौन लगाये ! कोई अपना हो, किसी से कुछ काम हो या किसी से किसी का सम्बन्ध हो तो वह उसके पीछे पड़े। जिसका कोई भी अपना न हो उसके लिये कौन पूछा पेखी करे और क्यों करे ! वह चला गईं। कहां चलीं गई इसे अड़ोसी पड़ोसी कोई नहीं जानता। सोमदत्त ही अकेला आदमी था जिसे उनकी फिक्र थी। वह बीमार हो गया। अभी कमजोरी इतनी थी कि वह हिल डोल नहीं सकता था।

दूसरेदिन लोगों ने रविदत्त को सलाह दी कि फिर ज्ञानपुर के डाक्टर को बुलाकर दिखा देना चाहिये लेकिन बाबू मोतीलाल धाम के मैनेजर, तारादेवी और रुक्मिणी ने इसे पसन्द नहीं किया। धाम में हर बीमारी के लिये घीग्वार ही का सेवन बतलाया जाता है। लोगों को लाभ भी होता है। इस से सत्संगियों की श्रद्धा दृढ़ हो गई है। यहाँ भी घीग्वार ने अमृत का काम किया। विश्वास बहुत बड़ी चीज है। इसी श्रद्धा और विश्वास ने मिल मिलाकर एक महीने के अन्दर सोमदत्त को खड़ा कर दिया और वह चलने फिरने लगा। इन दिनों उसे मनोरमा की कोई खबर नहीं मिली। शिवनायक कोयरी दो तीन बार देखने आया लेकिन किसीने उसे सोमदत्त के पास जाने नहीं दिया।

एक महीने से अधिक हुआ धाम को छोड़कर वह कहीं नहीं जाता था। किसी दिन वह कमरे से निकलकर संस्कृत पाठशाला के सहन में महुये के वृक्ष के नीचे टहल रहा था। यह जगह धाम से पचीस तीस कदम पर है। यह सुनसान जगह थी। यकायक उसकी नजर शिवनायक कोयरी पर पड़ी जो धाम के बाजार में सौदा खरीदने जा रहा था। वह दौड़ा चला आया।

सोमदत्त ने पूछा—"कुछ पता लगा?"

शिवनायक। 'मेरा एक सम्बन्धी बिन्ध्याचल बिन्ध्य-बासनी देवी के दर्शन को गया था। वहाँ इसने मनोरमा और श्यामा दोनों को देखा। वह किराये का मकान लेकर रहती हैं। किसी से मिलती जुलती नहीं हैं। उसने मेरा हाल सुनाया। श्यामा ने विश्वास दिलाया कि जरूरत के समय वह आकर गवाही देगी कि गायें खुशी से दे दी गई हैं। अगर बारह रुपये भी न मिलते तो वह मुफ्त में देने को राजी थी। आपने बैठे बिठाये मुझे बुरी तरह से डरा दिया था।"

सोमदत्त—"मैंने जो कुछ कहा था हमदर्दी से तुम्हारी भलाई के लिये कहा था।"

शिवनायक—"मैं इसे समझता हूँ।

सोमदत्त—'बिन्ध्याचल में वह कहाँ रहती है?'

शिवनाथ—'आप पूछ कर क्या करेंगे? वह किसी से मिलना जुलना नहीं चाहती।'

सोमदत्त—'मुझे उनसे कुछ काम है।'

शिवनायक—'बड़े ही आश्चर्य की बात है। यहाँ भी अपने काम काज के सिवा मां बेटी किसी से नहीं मिलती

थीं। आप को उनसे क्या काम है ? आप परदेसी आदमी हैं। श्यामा ने कहा है कि किसी को उसका पता न दिया जाय।'

सोमदत्त—'उन्हीं के फायदे की बात है।'

शिवनायक—'आप से उनकी कहाँ की जान पहिचान है ?'

सोमदत्त—'यह न पूछो। अगर पता जानते हो तो बता दो' और सोमदत्त ने पाँच रुपये उसके हाथ पर रखना चाहा।

शियनायक—'मैं तुमसे रुपया न लूँगा। एक बार श्यामा के कहने से उसकी गायें बारह रुपये में मोल लीं। उसके लिये मुझे कई दिनों तक घबराना और पछताना पड़ा। मैं गरीब आदमी हूं। तुम बड़े आदमी हो। बड़े लोगों का क्या पता है कि छोटे आदमी किस तरह अपना दिन काटते हैं। सारी मुसीबत छोटों ही पर आती हैं और इन्हीं पर अत्याचार किया जाता है। यह अपने पास रहने दो।'

सोमदत्त—'तुम भूल पर हो। मैं तुम्हारी बुराई चाहने वाला नहीं हूँ।'

शिवनायक—'इतना तो मैं भी जानता हूँ।'

सोमदत्त—'मैं श्यामा और मनोरमा की मदद करना चाहता हूं। इसलिये पता पूछता हूँ।'

शिवनायक—'जहाँ तक मेरी समझ है वह आप की मदद न लेंगी। श्यामा खास मिजाज की औरत है। जब से यहां आई कभी किसी से एक पैसा भी नहीं लिया और न उस पर किसी का कर्ज है। मैंने ऐसी औरत आज तक नहीं देखी। ठाकुरों के घर सेवा टहल करती थी और दूध दही बेचकर अपनी गुजर करती थी। उसका यह हाल था कि पानी तो

भर आती थी किन्तु आज तक इन दोनों ने ठाकुरों के घर की रोटी नहीं खायी है। कैसे कहूँ कि वह तुम्हारे रुपयों को हाथ लगायेगी !'

सोमदत्त—'उसके रहने का पता मिलता तो मैं आप वहाँ जाकर उनसे मिलता।'

शिवनायक—'पता तो मुझे मालूम है लेकिन भय इस बात का है कि आप को देखकर वह विन्ध्याचल भी छोड़कर भाग जायगी।'

सोमदत्त—'क्यों ? कोई बात तो हो !'

शिवनायक—मैं नहीं जानता। गाँव में इतना सुना था कि धाम के दो एक यात्री श्यामा से उसकी जाति पांति पूछने लगे। यह उसे बुरा लगा। अहीरनी तो अहीरनी ! फिर कोई क्यों छेड़ छाड़ करे। वह इसी बात पर नाराज होकर चली गई।'

सोमदत्त ने दिल में सोचा—'शिवनायक सच कह रहा था। क्या अजब वह उसी वजह से भागी हो लेकिन यह कोई बात नहीं थी। आदमी ऐसा पूछा ही करते हैं। इससे यह नतीजा निकला कि इसमें कोई न कोई गहरा भेद जरूर है।'

सोमदत्त—'मैं उन्हें दुख पहुंचाना नहीं चाहता। इस से इतमीनान रक्खो और न मैं नीयत का बुरा हूँ। एक बार मैं उनसे मिल लूँ फिर उन के दिल से भय सदैव के लिये जाता रहेगा। और वह हमको अपने काम का आदमी पायेगीं।''

शिवनायक—''आप के अच्छे और नेक होने में कोई सन्देह नहीं है। मैंने भी अपने तौर पर आप लोगों का पता

लगा लिया है। आप मिरजापुर के रहने वाले रईस आदमी हैं। अच्छे न होते तो धाम के सत्संग में कैसे आते!

सोमदत्त—'तुम ने हमारा हाल चाल किस से पूछा था?'

शिवनायक—'मैं कई बार आपसे मिलने आया। आप बीमार थे। किसी ने मुझे मिलने नहीं दिया। मैंने धाम के लोगों से आपका हाल पूछा था।'

सोमदत्त—'इस समय मैं धाम के बाजार में जा रहा हूँ समय तंग है। देर हुई और बाजार बन्द हुई। फिर कभी आऊँगा तब बात चीत होगी।'

यह कहकर शिवनायक चला गया। तीसरे दिन वह फिर आया! उसके दिल में सोमदत्त की ओर से सन्देह हो रहा था। बुरा तो वह समझता नहीं था। जो कुछ उसे सन्देह था नई उम्र के ख्याल से था। फिर भी वह हमदर्दी से खाली नहीं था।

सोमदत्त ने पूछा—'तुम आगये?'

शिवनायक—'आता क्यों नहीं।'

सोमदत्त—'पता बताओगे?'

शिवनायक—'सुनो बाबू! पता तो बताना है। जब मैंने कह दिया कि वह विन्ध्याचल में रहती है तो एक तरह पर पूरा पता दे दिया। तुम आप मिरजापुर में रहते हो। विन्ध्याचल पास ही एक छोटा सा कस्बा है। घूमते फिरते निकलो, वह मिल रहेगी। यह कोई कठिन बात नहीं है लेकिन यह कह दो कि तुम क्यों उनकी खोज में हो? तब मैं और बात करूँ।'

सोमदत्त ने रुककर कहा 'सुनो शिवनायक! तुम से मैं साफ साफ कहता हूँ। श्यामा और मनोरमा दोनों अहीरनी

नहीं हैं बल्कि ब्राह्मणी है। मुझे उनकी दशा देखकर दया आई। मैं उनकी मदद करना चाहता हूँ। बस यही विचार है।'

शिवनायक—'यह आपने कैसे जाना कि ब्राह्मणी हैं और अहीरनी नहीं हैं?'

सोमदत्त—'अनुमान से, बात चीत से, चाल ढाल से और तुम्हारी बातों से।'

शिवनायक—'मैंने तो यह नहीं कहा कि वह अहीरनी नहीं हैं।'

सोमदत्त—'इन शब्दों में तुमने नहीं कहा लेकिन और तरह से अपने भाव प्रकट किये। तुमने बताया कि वह किसी की रोटी नहीं खाती हैं और पानी भरने के सिवा और कोई काम काज भी नहीं करती हैं।'

शिवनायक—'यह ब्राह्मणी होने का तो कोई सबूत नहीं है। बहुत से अहीर ऐसे हैं जो इस तरह जीवन व्यतीत करते हैं।'

सोमदत्त—'सच है। उनकी सूरत शक्ल भी तो वैसी ही है।'

शिवनायक हँसा—'यहाँ अहीर ब्राह्मणों से सुन्दर होते हैं। ब्राह्मण तो काले और साँवले मिलेंगे लेकिन अहीर और अहीरनियाँ गोरी रंगत की पाइयेगा।'

सोमदत्त ने अपने बाप को लाजवाब कर दिया लेकिन इस देहाती और गँवार के सामने उसकी दाल गलती हुई नहीं मालुम हुई। उसने देख लिया कि जो बात कहीं जायगी सब उल्टी पड़ेगी और मुफ्त में सन्देह बढ़ता जायगा। उसने सोच समझ कर कहा—'श्यामा ने आप मुझ से और मेरे बाप से कहा था कि मनोरमा ब्राह्मणी है।'

शिवनायक—"उसने आप ही कहा था !"

सोमदत्त—"हाँ ! उसने दो बार कहा था।"

शिवनायक—"यह तो मैं भी देख रहा हूं कि मनरमा को वह किसी के घर नहीं जाने देती थी और न किसी का दाना पानी लेने देती थी। बचपन में वह उसके साथ ठाकुरों के घर आया जाया करती थी। जब से वह आठ नव वर्ष की हुई यह आना जाना एक दम बन्द हो गया। अब धाम के सिवा वह कहीं नहीं जाती थी।"

सोमदत्त—"इन्हीं सब बातों से तो मैं उनको ब्राह्मणी समझता हूं।"

शिवनायक—"एक बात तो मैं भी कहूँगा कि जब से यह गाँव में आई है बड़ी ही सफाई, ईमानदारी और पवित्रता से रहती थी। लँगड़ा अहीर ने इसको अपनी रिश्तेदार बताया था लेकिन आज तक किसीने उसे उसके घर खाते पीते नहीं देखा। श्यामा तो बूढ़ी थी। मनोरमा भी उसके घर का नाज पानी नहीं लेती थीं। लँगड़ा के मर जाने पर भी उसने गाँव नहीं छोड़ा था। पता नहीं कि उसे अब यकायक यहाँ से चले जाने की क्यों सूझी ?"

सोमदत्त—"विंध्याचल में उसकी जान पहिचान का कोई आदमी है या नहीं ?"

शिवनायक—"जहां तक मैं समझता हूँ ऐसा कोई नहीं है और न श्यामा का कहीं कोई रिश्तेदार है। अगर होता तो कभी तो आया होता।

सोमदत्त—"हो न हो श्याम जरूर ब्राह्मणी है !"

शिवनायक—"होगी ! फिर अपनी जाति छुपाने की क्या बात थी !"

सोमदत्त—"इस में भी कोई भेद होगा। अब तुमको विश्वास हो गया कि मेरी नीयत माँ बेटी दोनों की ओर से साफ है। अब तो मुझे उसका पता बताओगे ?"

शिवनायक—"यह हनुमान पंडा के पिछवाड़े उसी के घर में रहती है। किराये पर मकान लिया हुआ है और इस धुन में है कि यहाँ कोई काम करे जिस से उसकी रोटी चल सके।"

सोमदत्त—"तुम किसी तरह उसे सौ पचास रुपये पहुँचा सकते हो जिस में उसका दुख दूर हो जाय ?"

शिवनायक—"मुझ से यह न हो सकेगा। मैं गरीब आदमी हूं।"

सोमदत्त—"रुपया मुझ से लो। उसे इस बहाने से दे आओ कि गायों का दाम बारह रुपये नहीं हो सकते। इस लिये रुपया इकट्ठा करके वाजबी दाम देने आया हूं।

शिवनायक—"कहीं ऐसा करने से मेरा नुकसान तो नहीं होगा ?"

सोमदत्त—"नहीं, रुपया ज्यादा न ले जाओ। बीस पचीस रुपये साथ लो फिर किसीको शक न होगा।"

दूसरा अध्याय

घर की वापसी

सोमदत्त ने शिवनायक को पचीस रुपये दिये। उसने ले लिये। विन्ध्याचल राधास्वामी धाम से पांच कोस की दूरी पर है। वह दूसरी सुबह जाने और शाम के समय वापिस

आने का वादा करके गया। उसे विदा करके सोमदत्त माँ बाप के पास आया। आज उसकी हालत बहुत बदली हुई थी। माँ बाप दोनों ने इसे देखा। पूछने लगे—"अबतो तू अच्छा हो गया। मालिक ने बड़ी ही दया की।"

सोमदत्त—"मैं बुरा पहिले भी नहीं था।"

रुक्मिणी—"क्या तुझे ताऊन नहीं हुआ था?"

सोमदत्त—"हुआ था"

रविदत्त—"बीमारी थी"

सोमदत्त—"बीम❁ आरी में क्या शक है। मैं डर और भय का शिकार हुआ था। बीमारी सच्चे अर्थमें बीम+आरी है। वह भय लाती है। भय लाने के सिवा वह और क्या करती या कर सकती है।"

रुक्मिणी पढ़ी लिखी नहीं थी। वह इस रियायत और लफ्जी बन्दिश को न समझ सकी। रविदत्त ने समझ लिया। उसके दिल की कली खिल गई कि सोमदत्त में बाल की खाल निकालने की विशेष योग्यता है।

रुक्मिणी—"क्या तू बीमारी से नहीं घबराता?"

सोमदत्त—"घबराहट तो होती है। इस से इन्कार किसे है लेकिन बीमारी भी किसी मसलहत से आती है।"

रविदत्त—"मालिक बचाये। मौत का सामना था।"

सोमदत्त—"ऐसी प्रार्थना करने से कोई लाभ नहीं होता। बीमारी का आना भी फायदे से खाली नहीं है और मैं यह नहीं मानता कि ऐसे समय में आदमी मर ही जाता है। मौत भी कोई चीज है।"

रविदत्त—"क्या तू मौत को नहीं मानता?"

❁ (बीम=भय)+(आरी=लाने वला)=भय लाने वाला।

सोमदत्त —"आप भी मौत को नहीं मानते। यों ही कह रहे हैं।"

रविदत्त हँसा—"खयाल अच्छा है। तू अभी बीमारी से उठा है। इसलिये बहुत बात चीत करना ठीक नहीं है। कभी कभी तू बड़ी ही सच्ची और दिल की लगने वाली बात कहता है।"

सोमदत्त —"आपका कहना ठीक है लेकिन आज मैं और दिनों से अच्छा हूँ। अगर आप चाहते हैं तो पन्द्रह बीस मिनिट तक बात चीत कर सकता हूं।'

रविदत्त—' मौत नहीं है ?'

सोमदत्त - 'हाँ मौत नहीं है। अगर मौत का मतलब मिट जाना है तो सृष्टि में यह कहीं भी नहीं है क्योंकि सत् से असत् नहीं हो सकता और जो असत् है वह कभी सत् नहीं हो सकता. मौत तो हालत की तबदीली का नाम है। यह आप सत्संग में सुनते रहते हैं और मुझसे भी कई बार कह चुके हैं।'

रविदत्त—'मौत मिटजाना नहीं है। यह तो मैं कुछ कुछ जानता और समझता हूं लेकिन हालत की तबदीली तो है। यह तबदीली कभी कभी अच्छी नहीं लगती।'

सोमदत्त—'अच्छा और बुरा एक दूसरे की दृष्टि से कहा जाता है। आदमी अपने खयाल से उसे बुरा और दुख-दायी मान लेता है लेकिन जिस पर यह हालत आती है वह पहिले चाहे इसे बुरा मान ले लेकिन जब वह तबदीली की हालत में जाने लगता है या चला जाता है तो वह उसे सुख-दायी पाता है। इस तबदीली का भी समय नियत है। नियत समय के पहिले कोई मरता नहीं है। हम हर जगह किसी न

किसी मिशन (गरज) से पैदा होते हैं। जब तक यह गरज पूरी नहीं हो जाती तब तक मौत के पंजे में नहीं फँसते। मिसाल के तौर पर आप यों समझें--आप धाम में सतसंग के लिये आये हैं। बिना सतसंग किये हुये न यहाँ से जायेंगे न जाना पसन्द न करेंगे और प्रकृति माता भी आपका उत्साह बढ़ाने के लिये बराबर सहायता देती रहेगी। ठीक इसी तरह हम इस पृथ्वी मंडल पर किसी न किसी मिशन (गरज) को लेकर आये हैं। जब तक यह पूरा नहीं होगा हमको यहाँ रहना पड़ेगा। जब काम पूरा हो जायगा सृष्टि नियम हमको एक मिनट भी ठहरने न देगा। फिर हम मौत की हालत से गुजरते हुये किसी और मण्डल--सूर्य या चन्द्र लोक आदि में जाकर जगह पायेंगे।'

रविदत्त—"अब तो तू पूरा ज्ञानी हो गया।'

सोमदत्त--"इस बीमारी ने मुझे सचमुच ऐसा बना दिया।'

रविदत्त--'किस तरह ?'

सोमदत्तन–"पेट की सारी खराबी निकल गई। शरीर गुलाब के फूल की तरह हलका हो गया। बुद्धि विवेक पर जो परदे पड़े थे वह उठ गये। बीमारी अपने साथ खास बरकत लाती है।'

रविदत्त--"वाह बेटे ! कहता तो तू सच है लेकिन एक सवाल रहा जाता है। तू ने मौत को सुख की अवस्था बतलाया है। ऐसा क्यों कहा ?'

सोमदत्त—"कबीर साहिब की साखी आपको सुनाता हूँ। एक एक साखी की व्याख्या में दिनों लग सकते हैं लेकिन साखी के सुनने ही से आपको सन्तोष हो जायगा।

सुनिये—

मरता मरता जग मुआ, साँचा मुआ न कोइ।
दास कबीरा यों मुआ, बहुर न मरना होय
वैद्य मुआ रोगी मुआ, मुआ सकल संसार।
एक कबीरा ना मुआ, जाके नाम अधार॥
जीवन में मरना भला, जो मर जाने कोय।
मरना पहिले जो मरे, अजर अमर सो होय॥
जा मरने से जग डरे, मेरे मन आनन्द।
कब मरिहों कब पाइहों, पूरन परमानन्द॥

रविदत्त—'क्या कहना है! संसार में शायद ही कोई विषय होगा जिस पर कबीर साहेब ने साखियाँ न कही हों।'

सोमदत्त--इसमें क्या सन्देह है!'

रविदत्त—'बेटे! सत्संग का पूरा पूरा लाभ तू ने उठाया है। लड़का है तो क्या! तेरी समझ बूझ मुझ से अच्छी है।'

सोमदत्त ने सर नीचा कर लिया। न बाप को समझाने का उसे अहंकार हो सकता था, न अपनी बुद्धि की प्रशंसा कर सकता था। उसने दबी जबान से कहा:—'यह समझ बूझ और विवेक शक्ति मुझे आप से ही मिली है। अगर आप में यह गुण न होते तो मुझ में कहाँ से आ जाते!'

रविदत्त—'विरासत के कानून को तू अब तक नहीं भूला है?'

सोमदत्त—'भूलता कैसे! कौन जाने यह बीमारी इसी

गुत्थी के सुलझाने के लिए आई हो ! इसने उसे और भी साफ कर दिया।'

रविदत्त—'बीमारी को कोई पसन्द नहीं करता और तू जब देखो उलटी गंगा बहाता रहता है।'

सोमदत्त—पिता जी ! जो बीमार न हो उसे सेहत का अधिकार कहाँ है ! जो मरता ही नहीं या मरना ही नहीं चाहता वह जीवन के रहस्य को क्या समझेगा ! लोग कहते हैं बदपरहेजी से बीमारी आती है। यह ठीक है लेकिन वह इस बात को भूल जाते हैं कि बदपरहेज ही को परहेज की समझ आती है। सेहत का चाहने वाला बीमारी से क्यों घबराये ! दौलत की इच्छा रखने वाला तंगी से क्यों दुखी हो ! जिसे शान्ति की चाह है वह अशान्ति से क्यों भागता है ! यह सोचने और विचारने की बातें हैं।'

रविदत्त—क्या अच्छी और सच्ची बातें तेरी जुबान से निकल रही हैं ! तू समझता है कि बीमारी दरिद्रता और अशान्ति प्रकृति की मशीन के पुरजे हैं। इनका साथ रहना जरूरी है।'

सोमदत्त—'मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।'

रविदत्त—'तेरा समझना ठीक है।'

सोमदत्त—'सृष्टि में हर जगह दो पना अर्थात् दो दो चीजें काम करती हुई दिखलाई देती हैं। शरीर में खोपड़ी से लेकर पाँव तक देखिये दो दो हैं। घर, बन, पहाड़, समुद्र में रहने वाले जोड़े जोड़े हैं। साल में उत्तरायण दक्षिणायन, महीनों में उजाले और अंधेरे पक्ष, चौबीस घंटों में दिन और

रात, जीव जन्तु में नर और मादा, जहाँ आप देखेंगे दो ही दो मिलेंगे। यही देवासुर संग्राम है। जहाँ यह दशा हो वहाँ खींच तान और मार धाड़ क्यों न होगी !'

रविदत्त--"वाह बेटे ! मालिक तुझे बहुत दिनों तक जीता रक्खे। तू ही मेरे कुल का नाम लेवा है। तुझ को देखकर मुझे बड़ी खुशी मिलती है। मगर दिल तो शरीर में एक ही है।'

सोमदत्त—'पिता जी ! अब आप जानबूझ कर ऐसी बात कहने लगे जिसे आप खुद ही नहीं मानते। मैं कहूँ भी तो क्या कहूँ ! जब माया ब्रह्म, ईश्वर शक्ति, प्रकाश और छाया हर जगह दो दो हैं तो आदमी का दिल दो दो क्यों न होगा ! यह भी द्वन्दपने से बचा हुआ नहीं है। जैसे गाड़ी के दो पहिये मिले जुले हुए घूमते हैं और अन्त में नियत स्थान तक पहुँचा देते हैं वैसे ही यह दिल दो बनकर सोचता विचारता हुआ काम में लगा रहता है और संकल्प विकल्प उठाया करता है। दोपना न होता तो संकल्प ही संकल्प होता, विकल्प न होता लेकिन यह कैसे होता ! सृष्टि में ऐसा प्रबन्ध ही नहीं है।'

रविदत्त—'बात तो यही है !'

सोमदत्त—'दो आँखों से एक देखना, दो कानों से एक बात सुनना, दो हाथों से एक काम करना, दो नाकों से एक गंध सूंघना, दो जुबान से एक बात बोलना, दो पाँवों से एक राह चलना ..... यही गरज है। इसके सिवा और कोई बात नहीं।'

रविदत्त—'अरे लड़के ! तू आदमी है या देवता है या कोई ऋषि मुनि है जो मेरे घर में पैदा हुआ है। आज एक

मैं ने किसी किताब में यह बातें नहीं पढ़ी। सत्संग भी किया लेकिन इतनी समझ नहीं आई।'

सोमदत्त—'मैं हुजूर महाराज के सत्संग से वापिस आने पर कम से कम दो घन्टे नित्य उनकी एक एक बात पर विचार करता रहता हूं। उससे मुझे लाभ भी हो रहा है।'

रविदत्त—'तुझ पर मालिक की दया है।मेरे धन्य भाग्य हैं कि मेरे घर में तेरा जन्म हुआ।'

रुक्मिणी—'बस! बस!! अब बहुत बकवास मत कराओ अभी बीमारी से उठा है। आराम करने दो।'

वह हाथ पकड़कर उसे ले गई, खाट पर लेटाकर बोली—'आराम करो। तुम्हारे बाप बड़े ही बातूनी हैं। उन्हें दवा इलाज तक का खयाल नहीं रहता। बातें करने पर आते हैं तो जुबान नहीं रुकती। लोग कहते हैं औरतें बड़ी बातूनी होती है लेकिन इन्होंने तो औरतों के भी कान काट लिये।'

सोमदत्त खाट पर लेट गया।

रुक्मिणी ने कहा—'बेटे! घर छोड़े महीना भर होगया। होली भी इस जंगल में होली। मेरा जी घर चलने को कहता है। अगर तू राजी है तो कल यहाँ से सब लोग चल दें?'

सोमदत्त—'तू ने मेरे दिल की बात कही है। मैं तैयार हूं। पिता जी भी तैयार हो जायेंगे। मिरजापुर में ताऊन का भी जोर नहीं रहा। अब वहाँ चलने में कोई हर्ज नहीं है।"

दूसरी सुबह को लाला माता बदल दहा ने इक्के मँगवा दिये और यह सब लोग अपने घर मिरजापुर चले गये।

—⊙:०:⊙—

तीसरा अध्याय

विन्ध्याचल की विन्ध वासनी देवी

दिल की लगन बुरी होती है। जब दिल लग जाता है कुछ और ही रंग ला ता है। फिर आदमी इसी दिललगी की लगाव लपेट में फँस जाता है। यहां जो कुछ है वह दिल के लगने की बात है। जिसने इस दिललगी को नहीं समझा उसने कुछ भी नहीं समझा और समझना बूझना कैसा ! उसने कुछ भी नहीं किया। अपने जन्म को अकारथ खोया।

लौ लागी तब जानिये, छूट न कबहूँ जाय।
जीवत लौ लागी रहे, मूये माहिं समाय ॥
लागी लागी क्या करे, लागी बुरी बलाय।
लागी सोई जानिये, जो वार पार हो जाय ॥
लागी लागी क्या करे, लागी नाहीं एक।
लागी सोई जानिये, जो करे कलेजे छेक ॥
लागी लागी क्या करे, लागी सोई सराह।
लागी तब ही जानिये, जब उठे कराह कराह ॥
लागी लगन छूटे नहीं, जीभ चोंच जर जाय।
मीठा कहा अँगार है, जाहि चकोर चबाय ॥
सोऊँ तो स्वप्ने मिलूँ, जागूँ तो मन माहिं।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, बिछुड़त कबहुँ नाहिं ॥

सोमदत्त दिल को लगा बैठा। वह मिरजापुर उसी दिल-लगी के लिये आया था। उसकी कमजोरी जाती रही थी।

जब दिल कहीं लग गया तो फिर भले चंगे होने में क्या देर लगती है ! वह सैर के बहाने विन्ध्याचल पहुँचा। पंडे का घर और नाम पूछ लिया था। पता लेकर उस घर में आया जिस में श्यामा और मनोरमा रहती थीं। दोनों ने उसे देखा। बैठने के लिये खाट बिछादी। वह इसे देखकर खुश हुई या नाखुश इसका पता आगे लगेगा।

श्यामा ने पूछा—"कैसे आये ?"

सोमदत्त—"तुम्हारी खोज में आगया।"

श्यामा—"क्या हम कहीं खो गई थीं ?"

सोमदत्त—"क्या इसमें भी सन्देह है ! तुम ऐसी बगटुट भागीं कि पता तक नहीं लगा। बड़ी कठिनाई से खोज निकाला है।"

श्यामा—"सुनो महाराज ! तुम व्यर्थ ही हमारे पीछे पड़े हो। तुमको हमसे या हमको तुमसे क्या सम्बन्ध ! तुम अमीर ! हम गरीब ! कौन जाने किस तरह अपनी ज़िंदगी के दिन पूरे कर रही हैं। न हमारा कोई साथी है न सहायक है। गांव में रहती थीं। तुम मिले अच्छा नहीं लगा। यहां आईं। तुम यहां भी आकर धर धमके। ऐसा न करना चाहिये। तुमको अभी तक यह पता नहीं है कि हम कैसे लोग हैं।"

सोमदत्त—"मुझे इसी के पता लगाने की धुन है। मैं किसी काम को अधूरा नहीं छोड़ता।"

श्यामा—"यह अच्छा नहीं है। ग़रीबों को उनकी गरीबी में छोड़ो। उनके पीछे न पड़ो। इससे कोई लाभ नहीं हो सकता। हम तुम्हारे आने जाने से खुश नहीं हैं। फिर तुम बड़े आदमी ठहरे। इसमें तुम्हारी बदनामी होगी। हम तो पहिले ही से बरबाद हैं और भी खाक में मिल जायेंगे।"

श्यामा—"क्या कहा फिर तो कहो ! क्या मैं झूठी हूँ ? जिन्दगी भर कभी झूठ नहीं बोली।"

सोमदत्त—'तुम अहीरनी बनीं। क्या यह सच है ?"

श्यामा चुप रही। उसने नहीं समझा कि क्या जवाब दे। मनोरमा अब तक चुप चाप इन दोनों की बातें सुनती रही। उसने सोमदत्त से कहा—"हम कुछ भी हों। इस से तुम्हें क्या काम है !"

सोमदत्त—"मैं नहीं जानता ! न जानने का शब्द सब से पहिले तुम्हारे मुँह से निकला था। मैंने तुम से पूछा—'तुम कौन हो ?' तुम ने कहा—'मैं नहीं जानती।' वैसे ही मेरे लिये भी समझलो। मैं आप नहीं जानता कि मैं क्या हूँ कौन हूँ और क्यों यहां दौड़ा चला आया !"

मनोरमा—"उस दिन तुम ने कहा था कि मैं ब्राह्मण हूँ और आज मुकर रहे हो। तुम्हारी बात का विश्वास कौन करे ! मैंने जो कुछ कहा था सच कहा था। मैं अब तक अपने आपको नहीं जानती।"

सोमदत्त लज्जित हो गया। सिवाय चुप रहने के उसे कुछ नहीं सूझा।

श्यामा ने कहा—"भाई ! इन बातों में क्या धरा है ! तुम अपनी राह लगो। हम अपनी राह लगें।"

सोमदत्त—"लेकिन जब लगने भी पायें। अजीब हालत है। कौन जाने पहिले जन्मों के संस्कार अपना काम कर रहे होंगे ! मैं कब चाहता हूँ कि तुमको आकर सताऊं। कोई महान शक्ति ढकेल कर इधर लाती है। मैं तो कठपुतला बना हुआ हूँ।"

श्यामा—"यह तुम कहते क्या हो ?"

तो बिना लगाव लपेट के साफ साफ कह दो । मैं चला जाऊँगा और फिर कभी भूलकर भी तुम्हारे पीछे न पड़ूंगा। मैं इस हालत से आप तंग आया हुआ हूँ। तुम्हारे चले आने पर मैं ताऊन से बीमार हो गया। जान के लाले पड़ गये, बीमारी में भी तुम्हारा ख्याल दिल से नहीं गया। लो ! यह कह दो और मैं जाने को तैयार हूँ।"

श्यामा के दिल को चोट लगी। मनोरमा मुंह में उँगली दबाये हुये कभी इसे देखती थी कभी उसे।

श्यामा ने पूछा—"तुम्हें मेरा ख्याल कैसे पैदा हुआ ?"

सोमदत्त—"मैं ने मनोरमा को देखा। देखने और बात करने से मेरे दिल ने कहा कि यह अहीरनी नहीं है ब्राह्मणी है। तुम से मिला। तुम्हारी बातों से मेरे विश्वास को पुष्टि मिली। तुम ने बता दिया कि यह ब्राह्मण की लड़की है और तुमने इसे पाला पोसा है। यह तो तुझे मालूम हो गया लेकिन साथ ही एक और भूत सर पर सवार हुआ। मैं तुम्हें भी अहीरनी नहीं समझता बल्कि ब्राह्मणी खयाल करता हूँ। पिता जी से तुम दोनों के विषय में बात चीत हुई। उनकी सूरत देखकर मैं मिरजापुर चला आया जिसमें उन्हें कोई भ्रम न हो। यहां आकर मैं उन सवालों पर सोचता विचारता रहा। बहुत सी किताबें देखीं। विश्वास दृढ़ होता गया। अब यहां से वापस गया सुना कि तुम दोनों लापता हो। दिल को चोट लगी, बीमार पड़ गया और दवा इलाज से किसी तरह अच्छा हुआ। अब मिरजापुर चला आया और तुम्हारे दर्शनों की इच्छा यहां खींच लाई।

श्यामा—"तुम्हारे बाप को हमारा कुछ पता है ?"

सोमदत्त—"नहीं।"

श्यामा—"क्या अगर वह सुनेंगे कि तुम यहां आते हो तो खुश होंगे ?"

सोमदत्त—'वह नाराज भी हो सकते हैं लेकिन वह मुझे नेक, सुशील और धर्मात्मा पुत्र समझते हैं। मैंने उनसे बात चीत की। उनका ख्याल बहुत कुछ पलट गया है और उन्होंने मुझे आजाद रख छोड़ा है।

श्यामा—"अगर तुम को यह मालूम हो गया कि मैं अहीरनी नहीं हूँ ब्राह्मणी हूँ तो इससे तुम को क्या लाभ होगा ?"

सोमदत्त से कुछ कहते सुनते नहीं बन पड़ा। वह चुपका हो रहा।

श्यामा ने कहा—"बेटे ! तेरा शोक पूरा हो। मैंने जो बात अब तक किसी से नहीं कही थी और सब से छुपा रक्खी थी, मनोरमा को भी जिसका पता नहीं है, वह आज तुझ से कहती हूँ कि मैं जाति की ब्राह्मणी हूँ अहीरनी नहीं हूँ। अगर इसके जानने से तुझे खुशी मिलती है तो जा खुश होजा लेकिन यह बात तेरे और मनोरमा के कानों के लिये है। तीसरे को इसका पता न लगने पाये और जब तक मेरी आज्ञा न हो तू यह किसी से भी न कहना।"

मनोरमा और सोमदत्त के दिलों की कली खुशी की हवा से खिल गई।

श्यामा ने पूछा—"मैं तो ब्राह्मणी हूँ और मनोरमा भी ब्राह्मणी है। इसका पता तो तुझे लग गया। क्या तू मनोरमा को और कुछ समझता है ?"

सोमदत्त—"मेरी नजरों में यह बिन्ध्यवासनी-देवी है। इस से अधिक मैं और कुछ नहीं कह सकता।"

श्यामा—"तू सच कहता है। यह ऐसी ही है। अच्छा अब तू जा। तेरे आने जाने को मना नहीं करती लेकिन हमारी इज्जत और नेकनामी का ख्याल रहे। और सब बातें भी तुझे वक्त पर मालूम होती जायेंगी।"

—:-०-:—

चौथा अध्याय

अष्टीभुजा दुर्गा

खुशी और कामयाबी, कामयाबी और खुशी दो चीजें हैं या एक हैं इसकी समझ किसी बिरले आदमी को आती होगी। असल में वह एक हैं दो कभी नहीं हैं। सोमदत्त किसी हद तक अपने इरादे में कामयाब हुआ और उसे खुशी प्राप्त हुई। वह श्यामा और मनोरमा से बिदा होकर मिरजापुर गया। आज उसका दिल खुशी के मारे बल्लियों उछलता था। घर पहुँचा। गाड़ी से उतर कर अन्दर गया। सूरत से नूर बरस रहा था। मां बाप दोनों ने देखा। कहने लगे—"आज तू बहुत खुश है। क्या चीज मिल गई है जो पांव जमीन पर नहीं पड़ते। कोई न कोई बात जरूर है।"

सोमदत्त—"विन्ध्यवासनी का दर्शन करने गया था, साक्षात् दर्शन मिल गया। इस लिये खुश हूँ।"

दोनों चौकन्ने हो गये—"क्या कहीं पुराने दबे हुये संस्कार तो नहीं उभर खड़े हुये?"

सोमदत्त—"साफ साफ कहिये तो जवाब दूँ।"

रविदत्त—"तू राधास्वामी धाम के सत्संग में गया, लाभ उठाया लेकिन जाति पांत का झगड़ा नहीं हटा। जन्म के ब्राह्मणपने को मानने लग गया और आज कहता है कि विन्ध्यवासनी देवी का दर्शन कर आया है। क्या अब मूर्त्ति पूजक भी बन गया ?"

सोमदत्त—"हां ! मूर्त्ति पूजक भी हो गया। आप सच कहते हैं।"

रविदत्त—"फिर तू उसी गड्ढे में गिरा। यह हालत अच्छी नहीं है।"

सोमदत्त—"विन्ध ! विन्ध !! विन्ध के पहाड़ पर विराजी विन्ध्यवासनी। जो बात सच है उसे झूठ कैसे मानूं।"

सांच कहूं तो कोई न माने, झूठ कहा नहिं जाई हो।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, भर्मी सब दुनियाई हो॥

रविदत्त—"बात क्या हैं ? कुछ कहेगा भी या यों ही कबीर साहेब की साखी सुनाता रहेगा। वह मूर्त्ति पूजा के विरुद्ध थे।'

पत्थर पूजे हरि मिलें, तो मैं पूजूँ पहाड़।
इससे तो चक्की भली, पीस खाय संसार॥

सोमदत्त—"पिता जी ! पूजा तो तब ही होगी जब मूर्त्ति सामने आयेगी। बिना मूर्त्ति के पूजा कैसी ! कोई समझे तो बात कही जाय। नादानों से कौन उलझे ! इस मूर्त्तिमान जगत में सब मूर्त्ति हीं मूर्त्ति है। नजर गहरी होनी चाहिये।

रविदत्त—"मेरे अनोखे सन्त ! तू जो कहता है अजीब कहता है। इस बार धाम क्या गया कि एक दम बदल ही गया।"

सोमदत्त हँसा—"वह सत्संग ही क्या हुआ कि जिसका रंग सत्संग करने वालों पर न जमे। मतलब तो यही है कि आदमी बदल जाय और उसकी जिन्दगी शानदार बने।"

रविदत्त—"तू मूर्त्तिपूजक किस तरह बना?"

सोमदत्त—"मैंने सोचा कि इस दुनिया में जो कुछ है वह मूर्त्ति है। एक भी ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी मूर्त्ति न हो। जो हकीकत है वह मूर्त्तिवाली है। हां! जो चीज़ है ही नहीं उसकी मूर्त्ति क्या होगी। मूर्त्ति नाम है अस्ति का। जो नहीं है फिर कोई उसका नाम कैसे लेगा! या उसे समझ कैसे सकेगा! यहां सब के सब मूर्त्ति वाले हैं। कारण, सूक्ष्म, स्थूल सब मूर्त्ति ही तो हैं। निराकार मूर्त्ति, साकार मूर्त्ति, सगुण मूर्त्ति निर्गुण मूर्त्ति। मूर्त्ति खयाली भी तो हुआ करती है। लिखना पढ़ना, वेद शास्त्र कहना सुनना मूर्त्ति ही तो हैं। यहां जो कुछ है, जो था और जो होगा वह मूर्त्ति ही होगा।"

रविदत्त—"क्या ब्रह्म भी मूर्त्ति है?"

सोमदत्त—"मूर्त्ति के बिना ब्रह्म हो क्या सकता है! ब्रह्म है। उसका नाम है और जब किसी चीज का नाम हुआ तो फिर रूप क्यों नहीं होगा! नाम भी एक तरह का रूप ही है। भेद इतना है कि नाम सूक्ष्म और खयाली है और रूप स्थूल और माद्दी है नाम रूप के सिवा इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। इस लिये मैंने मूर्त्ति पूजा को अपने दिल में सच्चा धर्म समझ लिया।"

रविदत्त—"तेरी फिलास्फी निराली है।"

सोमदत्त—"मैं फिलास्फी और तर्क शास्त्र से कोई बात साबित नहीं करना चाहता, न तर्क शास्त्र के दायरे के अन्दर घेर कर किसी को अपना खयाल देना चाहता हूं। मैं सच्ची

सच्ची बात कहता हूं। लोग जबरदस्ती पक्षपात में पड़कर बिना समझे बूझे खींच तानकर बहस करते हैं। दुनिया में जहां कहीं किसी की शक्ति, महिमा या और किसी गुण का खयाल किया जायगा वह उसकी मूर्त्ति ही से होगा। खयाल मूर्ति है ध्यान मूर्त्ति है विचार मूर्त्ति है। ज्ञान मूर्त्ति है। दिल आप मूर्त्ति है और वह जिसका ध्यान बांधता है वह भी मूर्त्ति ही है। जो था, जो होगा, जो नहीं था, नहीं है और नहीं होगा, वह भी मूर्त्ति है। कबीर साहेब ने जिस मूर्त्ति की ओर से लोगों का ध्यान हटाया है वह स्थूल मूर्त्ति है और जिसकी ओर ध्यान दिलाया है वह सूक्ष्म मूर्त्ति है। उनके कहने और समझने बुझाने का मतलब यह है कि आदमी बाहर मुखता को छोड़कर अन्तर्मुखी बने। दुनिया बाहरी बातों में फँसी हुई है। वह आन्तरिक बातों की ओर आंख नहीं उठाती। उनका मतलब बस इतना ही था।"

रविदत्त ने फिर बहस नहीं की, खा पीकर सब सो रहे।

सुबह हुई। सोमदत्त ने बाप के साथ साथ सैर को जाने के लिये कहा। दोनों कभी कभी सुबह शाम सैर को जाया करते थे रविदत्त को कुछ काम करना था। वह साथ न जा सका लेकिन लड़के को हवा की ताकीद की। यह तो चाहता ही यही था। मोटर पर बैठा और पन्द्रह मिनट के अन्दर विन्ध्याचल पहुँचा। पंडे के घर गया। श्यामा और मनोरमा नहीं थीं। पूछने पर पता लगा कि वह अष्टभुजी दुर्गा के दर्शन को गई हैं। उसने मोटर को एक जगह ठहराने का हुकम दिया क्योंकि वह पहाड़ पर नहीं चढ़ सकती थी। आप पैदल चल खड़ा हुआ। दिल में चोर था कि वह चकमा देकर फिर भाग न जांय। साथ ही आशा भी थी कि जब

तुम्हारी बात सुनकर बहुत ही खुश हो गई। तुम निष्काम सेवा करना चाहते हो। मैं भ्रम में पड़ गई थी। मैं यह भी देख रही हूँ कि तुम आप मेरे पास नहीं आते। इसमें ईश्वर का हाथ है। अगर तुम मुझे मां की जगह समझते हो तो मैं तुमको अपना लड़का समझ कर खुश हूँगी। तुम अपने को लड़का समझो। तुम्हारे मां बाप हैं। असली मां की जगह फरजी मां नहीं ले सकती। फिर भी मैं तुम्हारे भाव का सत्कार करती हूँ। इस में कोई दोष नहीं देखती। क्या तुम्हारे बाप को पता है कि तुम हमारे पास आते जाते हो?"

सोमदत्त—"नहीं! वह इसे नहीं जानते। धाम में तो मैं ने कह दिया था कि मैं तुम्हारे देखने के लिये गया था। यहां का हाल चाल उनसे नहीं कहा। अगर तुम कहो तो मैं उनसे कह सकता हूँ। बिला जरूरत मैंने बात चीत नहीं की। मैं उनसे कोई बात छुपा रखना नहीं चाहता। वह तङ्ग दिल आदमी नहीं है बल्कि आजादी पसन्द दिल रखते हैं और मेरी खुशी में अपनी खुशी समझते हैं।"

श्यामा—"तुम भाग्यवान हो। इस समय मैं नहीं चाहती कि हमारी तुम्हारी बात किसी और के कान में पड़े। इससे लाभ कोई न होगा, हँसी और बदनामी होगी। जो सुनेगा वह यही कहेगा कि मैं मक्कार औरत हूँ जो नहीं हूँ। मेरा जीवन तप का जीवन है और मैं मनोरमा को भी इसी तरह पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिये तैयार कर रही थी। दुनिया में दुख ही दुख है। जो समय भक्ति भाव में कट जाय गनीमत है। मेरी तो उम्र हो चुकी। मनोरमा अभी लड़की है। अब तक वह इम्तहानों में बराबर पास होती रही, आगे का हाल मालिक जाने! कौन कह सकता है कि वह ब्रह्मचारणी रह सकेगी या क्या होगा! उसे हर बात की आजादी है।"

सोमदत्त—"तुम्हारे विचार बहुत पवित्र हैं।"

श्यामा—"मैं कभी कभी छुट्टी मिलने पर धाम के सत्संग में जाया करती थी। मनोरमा भी साथ साथ रहती थी। यह कारण है कि मैं धर्म और जीवन की असलियत को समझती हूँ। अगर तुम धाम में न आये होते तो हम दोनों की यही नीयत थी कि गांव में पड़ी रहें, दूध दही बेचकर अपनी गुजर करें और कभी कभी सत्संग में जाया करें। तुम्हारे आने से और बात चीत करने से मेरे मन में सन्देह उत्पन्न हुआ और मैं जान बूझ कर वहां से यहां चली आई।"

सोमदत्त—"क्या तुम धाम की सत्संगिनी हो?"

श्यामा—"हां! मुझे और मनोरमा दोनों को नियमानुसार दीक्षा मिल चुकी है सत्संग में हम रोज नहीं जाया करती थीं। हजूर महाराज का हुक्म भी ऐसा ही था। कभी कभी आया जाया करती थीं और अपने घर में योग का अभ्यास करती रहती थीं।"

सोमदत्त—"मैंने भी ऐसा ही नतीजा निकाला था। तुम ब्राह्मणी हो। सत्संग से तुम्हारे विचार और भी सुन्दर और उच्च हो गये हैं।"

श्यामा—"मुझे जो कुछ कहना था कह चुकी। अब यहां बहुत देर तक न ठहरो। समय बहुत हो गया। तुम को भी कई मील जाना है।"

सोमदत्त—"कहो तो विन्ध्याचल तक तुम्हारा साथ दूँ। वहां मेरी मोटर ठहरी हुई है मैं उस पर बैठकर जल्द घर पहुँच जाऊंगा।"

श्यामा—"मैं ऐसी इजाजत न दूँगी। हमारे साथ रहने से तुम्हारा नुकसान है और घर पर भी तुम कभी

आ सकते हो। लड़का तो तुम बन गये। इतमीनान रक्खो। सेवा मैं तुम से कोई न लूँगी। अभी मैं अपना काम काज आप कर सकती हूँ। अब जाओ।"

वह वहां से विदा होकर अपनी मोटर पर बैठा और हवा खाता हुआ अपने घर चला आया।

०—०

पांचवां अध्याय

गुमनाम ख़त

बाप बेटे दोनों एक कमरे में बैठे हुये थे। डाकखाने का चपरासी एक खत लाया जो सोमदत्त के नाम था। यह कैथी अक्षरों में लिखा हुआ था, जो हिन्दी देवनागरी की पुरानी सूरत कही जा सकती है। इन अक्षरों का रिवाज कब से है इसका पता किसी को भी नहीं है। उसके पुराने होने में कोई सन्देह नहीं है। सैकड़ों साल से दफ्तरों में इसका रिवाज चला आता है। पुरानी किताबें सैकड़ों वर्ष से पहले इसी में लिखी जाती थीं। कबीर साहेब का बीजक, तुलसीदास जी की रामायण, सूरदास जी के विष्णु पद, मुहम्मद मलिक जायसी की पद्मावत सबकी सब किताबें इन्हीं अक्षरों में लिखी गई थीं। मठों और मन्दिरों में अब तक जो पुराने ग्रन्थ पाये जाते हैं वह भी इन्हीं अक्षरों में हैं। यू. पी. के पूर्वी ज़िल और सारे बिहार में अबतक इनका रिवाज अधिकता के साथ चला आता है। अदालतों के काग-जात भी बिहार में इन्हीं अक्षरों में लिखे जाते हैं। मालूम होता है कि मगधी और फली अक्षरों की सूरत बदल कर कैथी

भाषा निकल आई थी। फिर इसी को और सुन्दर बनाकर देवनागरी कर दिया गया। अब उनका रिवाज कुछ कम होता जा रहा है। किताबें इनमें नहीं लिखी जातीं लेकिन पटवारी के कागजात, बहीखाते, खेवट नक्शे खसरे सब इन में अब भी लिखे जाते हैं। अब लोग देवनागरी की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं। इससे अनुमान होता है कि जिस तरह दुनिया में हर चीज नई नई सूरतों में बदलती रहती है और फिर उसकी असलियत का पता नहीं रहता वैसे ही इस कैथी की भी दशा जल्द हो जायगी।

सोमदत्त को इन अक्षरों का लिखना पढ़ना नहीं आता था। आजकल के अँग्रेजी पढ़े लिखे लोग कैथी नहीं जानते। देवनागरी का रिवाज बढ़ता जा रहा है। किसी समय यह भाषा सारे देश में फैल जायगी। डाक वाले ने हाथ में खत दिया। सोमदत्त ने पढ़ने के लिये बहुत जोर मारा लेकिन कुछ भी न पढ़ सका।

रविदत्त ने पूछा—"कैसा खत है जो तू पढ़ नहीं सकता?"

सोमदत्त—"यह कैथी अक्षरों में है। मैं कैथी नहीं जानता।"

रविदत्त—"अच्छा मुझे दे दे। मैं कैथी जानता हूँ। तुझे पढ़कर सुना दूं।"

सोमदत्त ने खत उसके हाथ में दे दिया। उसे पता तक नहीं था कि किसने यह खत भेजा है। देहाती ब्राह्मणों में अब तक इन्हीं अक्षरों में खत पत्र लिखने का रिवाज है। उसने समझा किसी रिस्तेदार का खत है।

रविदत्त पढ़ने लगा। मजमून यह था:—

"बनाम पंडित सोमदत्त जी मिश्र बी. ए.
मकान पं० रविदत्त साहेब मिश्र रईस
मुहल्ला वासली गंज
शहर मिरजापुर

मुँह बोले बेटे !

तू ने मुझे धर्म की माता बनाया और आप धर्म का बेटा बना। मां बेटे के धर्म का निर्वाह कठिन है। जब सच्चे मां बेटे अपने अपने धर्म पर नहीं रहते तो मुँह बोले मां बेटे के लिये क्या कहा जाय। ईश्वर की लीला विचित्र है। वह जो चाहता है करता है। इसी में उसने कुछ भलाई सोची होगी:—

चाहे कौन करावे सोई।
यह गति जान सके कोइ कोई॥
नाच नचावे नचावन वाला।
ऐसे नाच का वह प्रति पाला॥
उसका भेद न कोई जाने।
बिन जाने कैसे पहिचाने॥

जो होना था हो गया। जो करना था हम दोनों कर चुके। भक्त बिन जाने हुये ईश्वर का दास हो जाता है न देखा न सुना, न सोचा न विचारा, न समझा न बूझा और यों ही नाता जोड़ लिया। अब इस भक्त की लाज ईश्वर को है। वह अपने आपको आप जानता है और जब दास या भक्त उसे जान जाता है तो फिर उसी का रूप हो जाता है।

बिन जाने परतीत बढ़ाई।
जानत तुमहि तुमहि हो जाई॥

तू तो मुँह बोला बेटा बनकर मुझे मुँह बोली माता बना बैठा। अब यह मेरा धर्म हो गया कि मैं तुझे बताऊँ कि मैं क्या हूँ कौन हूँ कैसी हूँ! बड़ा कठिन काम तूने मुझे दिया। जो मैं नहीं चाहती थी तू ने उसी के झमेले में फँसा दिया। मैं संसार के ऐसे नाते रिश्ते को भी बन्धन समझती हूँ। जड़ भरत ने हरिन के बच्चे के साथ प्यार किया। दूसरे जन्म में उसे हिरन के रूप में पैदा होना पड़ा। गणिका ने तोते को अपना लड़का बनाया, राम राम कहना सिखाया और वह रामं की भक्तिनी हो गई। ऐसे नाते और रिश्ते से बन्धन और मुक्ति दोनों होते हैं।

आदमी की दृष्टि शरीर पर रहती है। आत्मा को न वह देखता है न जानता है। वैसे ही तूने मुझे गँवार औरत के रूप में देखा। मैं क्या हूं, इसकी सच्ची समझ तुझको नहीं है। तूने अनुमान से काम लिया। अब मेरी बारी है कि मैं तेरे अनुमान को सच्चा कर दिखाऊँ।

मैं कुछ दिनों के लिये तुझे न मिल सकूँगी, अलग रहूँगी। मेरा दिल तेरे साथ रहेगा। भक्त को प्रेम और विरह का दुख उठाना पड़ता है। तुझे भी मेरी राह देखनी पड़ेगी। तू बुरा मानेगा मैं जानती हूँ। कभी कभी भक्तों को भी दुख उठाना पड़ता है। नियम एक ही है। तू उससे बच कैसे सकता है! मजबूरी है। जो आदमी मुरदा उखेड़ने चलेगा उसे मिट्टी खोदनी पड़ेगी। आखिर उसके हाथ मुरदे की ठटरी ही आवेगी। मैं मुरदा हूँ। बूढ़ी हूँ। मरते मरते तू ने यह दुख मुझे दिया! ईश्वर के काम में किसी का क्या वश है!

होता है वही जो राम चाहे।
स्वामी है वही वही निबाहे॥

मैं विन्ध्याचल से जाती हूँ। कुछ दिनों दूर रहूँगी। जब समय आयेगा तो इसी जगह आकर मिलना। तब तू जान जायगा।

अफ़सोस यह है कि तू ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। अगर साफ साफ जवाब दे दिये होता तो मुझे भी कुछ शान्ति हो जाती। जवाब नहीं दिया न सही! उसकी भी कोई शिकायत नहीं है। मालिक की मौज।

मैं ने तुझसे दूसरा सवाल यह किया कि क्या रविदत्त जी को तेरे आने जाने का हाल मालूम है। तू ने इतना ही कहा कि उनको तेरी ओर से शिकायत नहीं है। यह जवाब काफी नहीं था लेकिन मैं कर क्या सकती हूँ! मां बाप का धर्म कठिन है। अच्छा तो यह होता कि वह सब कुछ जानते रहते। मैं इस विश्वास पर पहुँची हूँ कि सच्चाई अच्छी चीज़ है। सांच को आंच नहीं लगती।

सांच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप॥
सांची भक्ति का चोलना, पहिर कबीरा नाच।
जो सांचा जग में रहे, ताहि न आवे आंच॥
सांचे से सांचा मिले, सांचा सो बन जाय।
सांचे गुरु की भक्ति से, सांचे माहिं समाय।

तू झूठा नहीं है। मैं इसे जान गई, जानती हूँ और तुझे सच्चा मानती भी हूँ। अब सब्र कर। थोड़े दिनों की बात है। थोड़े दिनों के अन्दर भ्रम और अज्ञान के परदे उठ जायँगे।

एक महीने के पीछे फिर तू मुझ से आकर मिलना। बात चीत होगी और अगर मेरी इच्छा हुई तो मैं तेरे बाप से

आकर मिलूँगी। अगर न मिल सकी तब भी मुझे कोई दुख न होगा। दिन सोमवार कृष्ण पक्ष पंचमी, बैसाख।

खत पढ़ा। बाप हैरान बेटा चकित! दोनों थोड़ी देर तक चुप चाप! बात चीत नहीं की! दोनों के दिल में तरह तरह के खयाल समुद्र की लहरों की तरह उमड़ने लगे।

०—०

छटवाँ अध्याय

खत के विषय पर बात चीत

रविदत्त ने पूछा—"बेटे! यह किसका खत है?"

सोमदत्त—"क्या इसमें नाम नहीं?"

रविदत्त—नहीं।"

सोमदत्त—"यह श्यामा का खत है जो धाम में दूध लाती थी। उसके सिवा और किसी का नहीं है।"

रविदत्त—"श्यामा अहीरनी!"

सोमदत्त—"जी! वही श्यामा।"

रविदत्त—"क्या वह विन्ध्याचल चली आई थी?"

सोमदत्त—"जी हां! वह विन्ध्याचल चली आई।"

रविदत्त—"यहां क्यों आई?"

सोमदत्त—"सच्ची बात यह है कि श्यामा अहीरनी नहीं है, ब्राह्मणी है। आप ने उससे सवाल किये। मैंने मनोरमा का हाल पूछा। उसे बुरा लगा। वह सालों से भेष बदल कर रहती है और नहीं चाहती थी कि उसके विषय में किसी को सन्देह हो। हमारी बात चीत से उसे खटका हुआ और उसने सोचा कि कहीं बात का बतगंड़ा न हो जाय, इसी लिये किसी को पता दिये हुये बिना ही रातों रात विन्ध्याचल चली

आई और यहां रहने लगी। वह धर्मात्मा और सच्ची ब्राह्मणी है। किसी से न दान लेती है न किसी तरह की सहायता चाहती है। यहां आकर वह तमोलिन का काम करना चाहती थी। मैं उससे मिला और यह मिलाप फिर उसकी घबराहट का कारण हुआ।"

रविदत्त—"तू बिना उसकी इच्छा के उससे क्यों मिला? यह बात अच्छी नहीं थी।"

सोमदत्त—"मैं इसे समझता हूँ। दिल में एक ख़याल ने घर कर लिया है। उसी की जांच पड़ताल में लगा हूं जिसे आप जानते ही हैं।"

रविदत्त—"तुझे इस श्यामा के विन्ध्याचल आने का पता किस से मिला?"

सोमदत्त—"शिवनायक कोयरी से जो उसका पड़ोसी था और जिसके हाथ उसने गायें बेची थीं।"

रविदत्त सोच विचार में पड़ गया। उसे सन्देह हुआ कि दाल में कुछ काला जरूर है लेकिन वह यह भी समझता था कि सोमदत्त बहुत ही सच्चा और नेक लड़का है और उसे अपनी इज्जत का बहुत ज्यादा ख़याल रहता है।

रविदत्त—"अगर तू इस बेचारी का पीछा न करता तो क्या अच्छा न होता!"

सोमदत्त—"नहीं! मैं तो गुत्थी के सुलझाने की धुन में लगा हूँ।"

रविदत्त—"क्या शिवनायक को श्यामा के विन्ध्याचल आने का पता था?"

सोमदत्त—"नहीं।"

रविदत्त—"फिर उसने किस तरह तुझे उसका पता

सोमदत्त—"शिवनायक से मैंने इतना कहा था कि थोड़े दाम पर गायों को लेलेना और उसका पता न देना शक शुबहे की बात है। अगर पुलिस को पता लगा तो वह तहक़ीक़ात करने लगेगी। वह इस बात को सुनकर घबरा गया। संयोगवश उसका कोई सम्बन्धी देवी के दर्शन के लिये विन्ध्याचल गया हुआ था, उसने श्यामा को देख लिया। उस आदमी ने श्यामा से कहा कि लोग शिवनायक पर शुबहा कर रहे हैं। श्यामा ने उसे इतमीनान दिलाया और समय पर गवाही देने का वाइदा किया। उस आदमी ने शिवनायक को श्यामा का पता बताया। उसने मुझसे कहा और मैंने विन्ध्याचल जाकर उसे खोज निकाला।"

रविदत्त हँसा—"तू अपनी धुन का पक्का है लेकिन यह धर्म की मां और धर्म के बेटे होने की क्या बात है?"

सोमदत्त—'श्यामा ने मुझसे पूछा—'तुम क्यों मेरे पीछे पड़े हो?' मैंने कहा—'असलियत जानने और मदद देने के खयाल से।' श्यामा को मदद लेने से इन्कार है। वह ख़ास मिजाज की औरत है। मैंने कहा कि मुझे अपना लड़का समझ ले। उसने जवाब दिया कि इससे इन्कार नहीं है, मदद लेने से इन्कार है। तब से वह मेरी मुंह बोली मां और मैं उसका धर्म का बेटा होगया।"

रविदत्त—"वह सवाल क्या था जो श्यामा ने तुझ से किया था?"

सोमदत्त—'उसने मुझसे पूछा था कि मनोरमा की बाबत मेरा क्या खयाल है। मैंने उसे इतमीनान दिला दिया था कि असलियत जानने के सिवा और कोई बात नहीं है। उसके

लिखने का मतलब इतना ही है। इससे अधिक और कोई बात नहीं है।"

रविदत्त—"एक बात और है। श्यामा कहती है कि तुम ने इन बातों का पता मुझे नहीं दिया।"

सोमदत्त—"वह ठीक कहती है। मेरी कोई बात ऐसी नहीं है जो आप से छुपी हो। मैंने आपसे यह नहीं कहा कि विन्ध्याचल में श्यामा से मिला था। यह आपसे क्या कहता। सैर करने गया। उसे ढूंढा। वह मिली। मैं घूमने फिरने जाता हूँ। लोग मिलते जुलते हैं। उनसे बातचीत होती है। इन सब बातों का आपसे कहना सुनना व्यर्थ समझता हूँ।

रविदत्त—"सच है। मेरा इतमीनान होगया लेकिन श्यामा चली क्यों गई?"

सोमदत्त—"इसका मुझे पता नहीं है।"

रविदत्त—"लेकिन तुम अन्दाज से बतला सकते हो।"

सोमदत्त—"जहां तक मैं सोच सकता हूँ श्यामा को यह फिक्र हो गई है कि वह अपने आप को मेरी नजरों में ब्राह्मणी साबित करे। यह सबूत इकट्ठा करने में लगी होगी।"

रविदत्त—"मनोरमा को भी जरूर साथ ले गई होगी।"

सोमदत्त—"वह उसे एक दम के लिये अपने से अलग नहीं करती। जहां वह जाती है उसे अपने साथ रखती है।"

रविदत्त—"अब अगर वह आये तो मेरे पास लाना। तुम्हारी गुत्थी भी जल्द सुलझा सकूंगा।"

—:o:—

सातवाँ अध्याय

विवाह की छेड़ छाड़

नवजवानों की हरकत पर मां बाप की नजर रहती है। यह

उनका स्वभाव होता है। रविदत्त को सोमदत्त की ओर से इतमीनान था लेकिन साथ ही साथ कुछ सन्देह भी थी। मर्द अपनी स्त्री पर शुबहा करता हुआ उसे बुरी समझता है। औरत भी अपनी बारी पर ऐसा ही समझने लग जाती है। इसका जो नतीजा होता है वह सब जानते हैं। हजार कोई समझाये बुझाये लेकिन ऐसी बातों में समझाना बुझाना व्यर्थ और निष्फल होता है।

रुक्मिणी ने शाम को रविदत्त से पूछा—"आज सोमदत्त से क्या बात होती रहीं ?"

रविदत्त—"कुछ नहीं। वही श्यामा मनोरमा का झगड़ा। सोमदत्त अब तक उनके खब्त में पड़ा हुआ है।"

रुक्मिणी—"खब्त ही खब्त है। खब्त के सिवा कुछ नहीं है।"

रविदत्त—"मैं ऐसा नहीं समझता। अल्हड़पन के दिन हैं। नवजवान अपने भावों को छुपा रखते हैं।"

रुक्मिणी—"तुम्हारा विचार ठीक है। कम से कम संभल कर रहना चाहिये। बाप का धर्म भी है कि वह लड़के की ओर से चौकन्ना रहे। इसकी दवा तो मैं तुमको पहिले ही बता चुकी हूँ। उसके पांव में बेड़ी डाल दो। हिल डोल न सके।"

रविदत्त हँसा—'मेरी तरह हो जाय। इन नवजवानों के रोक रखने का इलाज औरत है जैसे तू ने मुझे चारों ओर से दबोच रक्खा है। न इधर हिल सकता हूँ न उधर। इस समय यही सलाह करने के लिये तेरे पास आया हूं।"

रुक्मिणी लजा गई- 'इसके सिवा औरतों को आता ही क्या है ! जो औरत ऐसा न करे वह कौड़ी काम की

होती। जेठ में बरपूजा के दिन स्त्रियां बट (बरगद) के चारों ओर सूत लपेट कर अपनी समझ में उसे बांधती हैं। यह बट पूजा नहीं है, बर पूजा है। जब तक स्त्री अपने माया जाल से पति को जाल में नहीं फँसा लेती उसे चैन कब आता है। मालिक को धन्यवाद दो कि तुमने मेरी जैसी सीधी सादी स्त्री पाई है। अगर कोई और होती तो तुम्हारी नकेल अपने हाथ में रखती। उस समय आटा दाल का भाव मालूम हो जाता।"

रविदत्त–"अपने मुँह मियां मिट्ठू बनती हो।"

छोटी मोटी कामिनी, सब ही बिस की बेल।
बैरी मारे दांव से, यह मारे हँस खेल॥

रुक्मिणी हँसकर—"चलो परे हटो। आये हैं मुझे छेड़ने, चिढ़ निकालने और चिढ़ाने! मैं ऐसी बातें नहीं सुनना चाहती।"

रविदत्त :—

आंखों काजल लायकर, गाढ़े बांधे केस।
हाथों मेंहदी लायकर, बाघिन खाया देस॥

रुक्मिणी—"यह जली कटी जाने दो। मैं और तरह की औरत हूँ। तुम इसे जानते भी हो। मतलब की बात कहो। क्या कहने आये थे?"

रविदत्त—"मस्त हाथी के पांव में जंजीर डलवाने की बात है।"

रुक्मिणी–"यह क्या?"

रविदत्त--"शिवनन्दन दुबे का पुरोहित आया था और सन्देश लाया था कि सोमदत्त की जन्मपत्री उसकी लड़की से मिल गई है। अगर कहो तो शादी मंजूर करली जाय।"

रुक्मिणी--"बहुत अच्छा है। शिवनन्दन पुराना सम्बन्धी

भी है। अकोढ़ी में उसकी हैसियत का कोई आदमी नहीं है। मैं बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। लड़की भी अच्छी है।"

रविदत्त-"तू ने उसे कहां देखा ?"

रुक्मिणी—"दो साल हुये मैं विन्ध्याचल देवी के दर्शन को गई थी। तुम भी साथ थे। लाखों आदमियों का मेला था। वहां मुझ से और शिवनन्दन की स्त्री से मिला भेंटा हो गया। लड़की भी साथ थी।"

रविदत्त—"क्या लड़की पढ़ी लिखी भी है ?"

रुक्मिणी—"यह मैं नहीं जानती। गांव में कौन लड़कियों को पढ़ाता है ! फिर अकोढ़ी के ब्राह्मण एक दम गँवार और उजड्ड होते हैं। यह कब लड़कियों को पढ़वाने लगे। लेकिन लड़की बड़ी ही सुशीला और अच्छी है। आम की फांक की तरह बड़ी बड़ी आंखें ! सिंघारे जैसा मुँह ! अनार के दानों की तरह दांत ! गुलाब के फूल के जैसे लाल लाल गाल ! मेरे तो जी में आया कि सोमदत्त के विवाह की छेड़ छाड़ कर दूँ लेकिन तुमने शर्त लगा रक्खी थी कि लड़का जब तक बी० ए० न पास करले तब तक विवाह की बात चीत न की जाय। इस लिये चुप रह गई।"

रविदत्त--"पता नहीं सोमदत्त अनपढ़ लड़की को पसन्द करेगा या नहीं ! आज कल के लड़के पढ़ी लिखी स्त्री चाहते हैं।"

रुक्मिणी—"ब्राह्मणों में कौन औरत पढ़ी लिखी आती है। तुमने क्या सोमदत्त से पूछ देखा है ?"

रविदत्त—"नहीं ! मुझे अपनी पड़ी थी। लड़के से अभी यह सब बातें करना नहीं चाहता."

रुक्मिणी—"तो मालूम हो गया तुमने शादी पसन्द कर ली।"

रविदत्त—"हां, मैंने मंजूरी दे दी। जब लड़की घर आजायगी कोई मेम नौकर रखकर पढ़वा लूंगा।"

रुक्मिणी—"विवाह कब होगा।"

रविदत्त—"इसी जेठ में। आज बैशाख की पंचमी है। कोई कठिनाई नहीं है। मालिक का दिया सब कुछ मौजूद है।"

रुक्मिणी—"मैं दिल से चाहती हूँ कि सोमदत्त का हाथ जल्द पीला कर दिया जाय। जवान हो गया, पढ़ लिख भी गया। कौन जाने आज मनोरमा है कल मनोरंजना आजाय। फिर लड़का हाथ से बे हाथ हो जायगा और उस पर हमारा बश न चलेगा।

रविदत्त—"मैंने भी यही सोच रक्खा है। विवाह हो जाय बहू घर में आये। उधर लड़का कालिज में पढ़ने चला जायगा, इधर मैं बहू को पढ़वा लूंगा।"

रुक्मिणी—"अच्छा! जल्दी करो। घर में बहू आये। मेरा दिल बहले और पोते पोतियां खिलाकर जन्म सुफल करूँ।"

पांचवां भाग

पहला अध्याय

उलझनों की कड़ियां

"तू अ : तक कहां थी ?"

'मैं जिन्दगी के दिन पूरे कर रही थी।"

"मैं ने तो समझा था कि तू मर गई।"

"और तुम्हारी बला सर से टल गई। मैं तो कल की मर गई होती और मरने के लिये तैयार बैठी थी लेकिन तुमने तो मुझे संजीवनी बूटी पिला रक्खी थी। मरती भी तो कैसे मरती! जब आदमी का दिल निकम्मा हो जाता है तो उसे नया शरीर धारण करना पड़ता है। अभी तक मेरा दिल निकम्मा नहीं हुआ है। इसे कोई खेल मिल गया। अब तक वह वही खेल खेलता रहा। न वह खेल पूरा हुआ, न मेरी मौत आई। मैं मरती भी तो कैसे मरती! मौत यों ही तो नहीं आती। हीले रोजी बहाने मौत!

"तेरी बात मेरी समझ में नहीं आती।"

"समझोगे, समझते हो, समझ बूझ से खाली नहीं हो और मैं तुमको समझाने ही के लिये आई हूँ। इस समय मेरा यहां आना इसी गरज से है वरन मैं यहां कभी न आती। तुम ने तो यह समझ लिया था कि हाथी के दांत बाहर निकले हुये फिर मुँह के अन्दर नहीं आते। यह ठीक भी है लेकिन मैं हाथी का दांत तो नहीं हूँ जो बाहर गई हुई फिर अन्दर न आती।"

"तेरी बात मेरी समझ में नहीं आती।"

'तुमने फिर वही बात दुहराई। मैं फिर कहती हूँ कि तुमको समझाने आई हूँ।"

"तो फिर तू समझाती क्यों नहीं! देर क्यों कर रही है।"

तीन बार हो चुके। अब मैं तुमको समझा दूंगी। तुमने मुझे पहिचान लिया यही खुशी की बात है। अगर तुमने मुझे न पहिचाना होता तो समझाने बुझाने में थोड़ीसी कठिनाई होती।

"पहिचानता क्यों नहीं! क्या कोई अपने नातेदार या सम्बन्धी को भूल सकता है।"

"मालिक का धन्यवाद है। मुझे इसकी भी बड़ी जरूरत है।

"तो क्या मैं इससे कभी इन्कार कर सकता हूँ?"

"तुमसे ऐसी ही आशा थी। चौदह वर्ष के दिन बहुत होते हैं। इतने में तो आदमी की एक पुश्त गुजर जाती है। और आज कल तो आठ आठ दस दस साल की लड़कियों का विवाह होता है। और लड़के लड़की औलाद वाले भी हो जाते हैं।"

'यह सब ठीक है। अब तू अपने मतलब की बात कह।"

"जल्दी किस बात की है! धैर्य धरो। मतलब ही कहने के लिये तो आई हूँ। बेचैन होने और घबड़ाने की जरूरत नहीं है। जल्दी का काम शैतान का कहलाता है और शान्ति का काम ईश्वर का होता है।"

'तेरी कोई बात मेरी समझ में नहीं आती।"

"समझोगे, फिर समझोगे। मैं बिना समझाये बुझाये बाज रहने वाली नहीं हूँ।"

"तू तो ऐसी बातें कर रही है जैसे कोई लड़ने के लिये आया हो। क्या तू लड़ने के लिये आई है?"

"राम राम। ऐसा न कहो! मैं और लड़ाकी? क्या तुमने कभी किसी से मुझे लड़ते हुए देखा है! इस जिन्दगी में तो

मैं किसी से नहीं लड़ी। पहलू बदल कर लोगों का दांव बचा गई। किसी के पेच में अब तक नहीं आई। अब मरते मराते क्यों लड़ने लगी और फिर तुमसे लड़कर मैं क्या बनाऊँगी !"

"बातों से तो ऐसा ही मालूम होता है।"

"यह तुम्हारी भूल है। दुनिया में न कोई किसी का दुश्मन है न किसी का दोस्त है। यह मैं पहिले भी जानती थी और अब भी जानती हूँ। यहां गरज की दोस्ती और गरज की दुश्मनी होती है। यह सच है कि इस समय मैं तुम्हारे पास किसी गरज ही से आई हूँ। तुम्हारी गरज तो पूरी होगई अब मेरी गरज का सवाल है। शायद इसी गरज से मेरी बातें तुम्हें बुरी लगती हों। बुराई मेरे दिल में नहीं है। अगर होगी तो तुम्हारे दिल में होगी और इसीलिये तुम खटकते हो।"

"हद हो चुकी। अगर गरज है तो कह डालो।"

"मैं जल्द बाज नहीं हूँ। यह तुम जानते हो। सब्र करो। जब मैं आगई हूँ तब बिना कहे रह कैसे सकती हूँ।"

"क्या तुझे रुपये पैसे की जरूरत है।"

"क्या तुमने कभी रुपया पैसा मुझे दिया था ? या मैंने तुमसे रुपया पैसा मांगा था ? ईश्वर न करे आदमी किसी के सामने हाथ फैलाये। हाथ ऊँचा रहे। नीचा कभी न हो। मैंने इसे गिरह बांध रक्खा है। देना अच्छा लेना अच्छा नहीं है। जिस दिन किसी से मांगने की नौबत आये ईश्वर उसी दिन मौत दे। यह मेरा अपना भाव है।"

"यह अकड़ तुझमें बचपन से है।"

"शुक्र है कि तुमको मेरी अगली बातें याद हैं। अब पछली बात भी तुमको सुनाऊँगी और वह भी याद रहेंगी।"

"कब ?"

"दो चार दिन पीछे। आज तो तुम से खाली मिलना

था।"

"क्या मेरे पास बिना सोचे समझे आई है ?"

"नहीं ! कुछ सोच समझ कर तब यहां पांव रक्खा है।"

"अब तक तू कहां रही ?"

"यह सवाल ठीक नहीं है। क्या तुमने कभी मेरी खोज की ? जब तुम्हें खोज ही नहीं थी और अचिन्त होगये थे तो अब यह सवाल क्यों कर रहे हो ?"

"मुझे तेरी तलाश की जरूरत ही नहीं थी ?"

"सच्ची बात है। मैं इसे मानती हूँ। इस समय यही एक सच्ची बात है जो तुम्हारे मुँह से निकली है। और सब बातें फजूल हैं। लो अब मैं जा रही हूँ।"

'तू मुझसे नाराज होगई ?"

"फिर वही बेमतलब की बात ! जब तुमको मेरी तलाश की जरूरत ही नहीं थी और तुम मेरी ओर से बेफिक्र हो तो फिर नाराज हुई तो क्या और न हुई तो क्या ! अच्छा फिर मिलूंगी।"

—:-०-:—

दूसरा अध्याय

श्यामा और सुलोचना

आदमी और जगह तो भेष बदल कर रह सकता है लेकिन अपने गांव में बहुत दिनों तक कोई छुपा नहीं रह सकता। श्यामा अकोढ़ी की रहने वाली थी जो मिरजापुर के जिले में पश्चिम की ओर गंगा के किनारे विन्ध्याचल कस्बा से कई मील की दूरी पर है। यहां चना अधिकता के साथ पैदा होता है। मिरजापुर के जिले में चना के लिये यहां

से बढ़कर और कोई जमीन मुशकिल से रास आती होगी। यहां के रहने वाले चना बहुत खाते हैं और इसीलिये मजबूत होते हैं।

श्यामा के आने की खबर सारे गांव में फैल गई थी। वह एक अहीर के घर ठहरी जो गांव के किनारे रहता था। वह सब से पहिले शिवनन्दन दुबे से मिली। इसके पहिले अध्याय में इन्हीं दोनों की बात चीत है। शिवनन्दन श्य मा का चचेरा भाई था। इनमें जो बात चीत हुई उससे पढ़ने वालों को पता नहीं लगा कि वह किस काम से गई थी। उसके लिये अभी सब्र करना पड़ेगा।

श्यामा के जानने वाले गांव में बहुत आदमी थे। दस बारह आदमियों को छोड़कर और सब लोग उसे बुआ कहते थे। वह विवाह के पीछे ही बेवा होगई थी। इसका विवाह बरोही में हुआ था। पति के देहान्त हो जाने पर उसका माल असबाब लेकर अकोड़ी में चली आई पति के घर कोई नहीं था। सारा कुटुम्ब प्लेग की भेंट हो चुका था। क्या करती! मां बाप के यहां चली जाई। यह यहां भी उनकी इकलौती लड़की थी। संयोग से यह भी थोड़े ही दिन पीछे चल बसे। इनकी भी जायदाद उसी के हाथ लगी। कुछ दिनों तक तो यह मां बाप के घर पड़ी रही। मन दुनिया की ओर से हट गया, चित्त में वैराग आगया। शिवनन्दन इसका चचेरा भाई था। सारी जायदाद उसे सुपुर्द करके वह तीर्थ यात्रा के लिये घर से बाहर निकली। जगन्नाथ, बैजनाथ, प्रयाग, काशी विन्ध्याचल में उसने घूम फिर कर कई साल काटे। यह जीवन भी उसे पसन्द नहीं आया जब मकर की संक्रान्ति के मेले में वह इलाहाबाद त्रिवेणी स्नान को गई थी छतमी के लंगड़ा

सुलोचना—"जीजी ! तुम सच कहती हो। परदेस जाकर तुमको दुख मिला।"

श्यामा—"जब दुख मिलता है तो देख परदेस सब ही में दुख है और जिसका संसार में कोई न हो उसे तो दुख सहना ही पड़ता है और सह भी रही हूँ।"

सुलोचना—"जीजी ! स्त्री का शरीर बड़ा ही अशुद्ध बनाया गया है। मैं अपनी क्या कहूँ ! मुझे वह दुख है कि किसी को ईश्वर नसीब न करे !"

श्यामा—"सब ऐसा ही कहते हैं और अपने अपने दुख को पहाड़ और दूसरों के दुख को तिनका समझते हैं। तुम घर में हो, बाल बच्चे वाली, खाने पीने का सामान अधिकता से, पति प्रेम करने के लिये तैयार और फिर भी तुम दुखी हो ! मुझे देखो ! न आगे नाथ न पीछे पगहा। तुम आप ही बताओ !

सुलोचना—"दुखी हो।"

श्यामा—"यही सब का हाल है। राजा प्रजा सब दुख में हैं। फिर मैं कैसे बच सकती थी ! इसकी चर्चा जाने दो और बात करो। अब तुम्हारी गोद में कितने बाल बच्चे हैं ?"

सुलोचना की आंखों से आंसू निकल पड़े—"जीजी ! क्या पूछती हो ! जैसे सब दुख हैं वैसे ही यह भी दुख है। जब से वह अभागी लड़की पैदा हुई तब से फिर मेरी कोख जो बन्द हुई तो बन्द ही पड़ी है। घर में कमला ही कमला है और बस ?"

श्यामा—"कमला तो अब सयानी हो गई होगी ?"

सुलोचना—बहुत सयानी है।"

श्यामा—"कहीं विवाह नहीं कर दिया ?"

सुलोचना—"तुम जानती हो, जब कहीं अच्छा घर बर मिले तो विवाह किया जाय। अच्छा घर है तो बर नहीं, अच्छा बर है तो अच्छा घर नहीं, इसी से देर हो रही थी। अब एक जगह सम्बन्ध ठीक होगया है। भगवान ने चाहा तो इसी जेठ में विवाह भी हो जायगा। अच्छा हुआ तुम भी आगई हो।"

श्यामा—"शादी कहां ठहरी है?"

लोचना—"मिरजापुर के एक पंडित रविदत्त हैं। बड़े धनी और मानी हैं। उन्हीं के यहां ठहरी है।"

श्यामा—"लड़के का नाम क्या है? क्या वह पढ़ा लिखा है?"

सुलोचना—"लड़के का नाम सोमदत्त है। सुना तो ऐसा गया है कि वह बी० ए० पास है और बड़ा ही सुन्दर है।"

श्यामा—"सोमदत्त! सोमदत्त के साथ कमला का विवाह होने वाला है?"

सुलोचना—"हां जीजी! बड़ी कठिनाई से यह विवाह ठीक हुआ है। ईश्वर वह दिन दिखाये! कमला ब्याहकर अपने घर जाय! लड़की मां बाप के घर तो कभी नहीं रहती। जब वह चली जायगी यह घर सूने का सूना हो जायगा। क्या तुमने सोमदत्त को कहीं देखा है?"

श्यामा—"हां, मैंने उसे देखा है। लाखों में एक लड़का है।"

सुलोचना—"घर बर दोनों अच्छा मिला। अब तो किसी तरह इसका विवाह होजाये! फिर मुझ पर जो बीतेगी भुगत लूँगी।

श्यामा—"अच्छी बात है।"

सुलोचना—"जीजी! अब परदेस न जाना। मैं अकेली

हूँ। तुम भी यहां रहना। जो कुछ होगी मैं तुम्हारी सेवा टहल कर दूंगी। दोनों दुखी हैं। किसी न किसी तरह जिन्दगी कट ही जायगी।"

श्यामा—"दुल्हिन! बात तो तुम सच कह रही हो लेकिन मेरा तुम्हारा निर्वाह न होगा। मैं बचपन ही की अभागी हूँ। जो सारी जिन्दगी अकेला रहा है उसका किसी के साथ मिल-कर रहना हो नहीं सकता। तुम नहीं देखती हो जो भिक्षा मांग कर पेट पालते हैं फिर उनसे घर का काम काज कोई नहीं होता।"

सुलोचना—"तो फिर परदेस चली जाओगी?"

श्यामा—"दुल्हिन! मुझ अभागी के लिये कहीं भी रहने की जगह नहीं है।"

सुलोचना की आंखों से टप टप आंसू गिर पड़े। उसी समय शिवनन्दन घर में आगया। उसके मुँह से निकल गया—"श्यामा यहां आगई!"

श्यामा ने जवाब नहीं दिया चुप रह गई।

—०—

तीसरा अध्याय

शिव नन्दन श्यामा

सुलोचना—"आती न तो कहां जाती! यहां तो इनका घर है।"

शिवनन्दन—"यह यहां रहने बोली कब है?"

श्यामा—"मेरा रखने वाला कौन है! क्या तुम चाहते हो कि मैं यहां रहूँ?"

"शिवनन्दन मैं चाहूँ या न चाहूँ तू यहां नहीं रह सकती।"

श्यामा—"यह कहो तुम मुझे यहां नहीं रख सकते और न रहने दोगे।"

शिवनन्दन—"जो परदेस गया भ्रष्ट होगया। देखो! लोग जब तीर्थ जाते हैं तब वापिस आकर ब्रह्मभोज और बिरादरी का भोज देते हैं। सत्यनारायण की कथा सुनते हैं। इसका कारण यह है कि छूत छात का विचार तो मनुष्य बाहर कर नहीं सकते, जिसके हाथ का मिला खालिया। किसी का क्या बिश्वास है! इसलिये बिरादरी ने भोज देने का दण्ड रक्खा है जिस में इनकी शुद्धि हो जाय और यह फिर से बिरादरी में मिला लिये जायं। इसके सिवा और कोई कारण इसका नहीं है।"

श्यामा हँसी—"तब तो बिरादरी में मिलने की यह अच्छी और सहज युक्ति है। मैं ब्राह्मणों को खिला पिला लूंगी, शुद्ध होजाऊंगी। तब तो तुम मुझे बिरादरी में समझोगे और मुझे घर में रहने दोगे?"

शिवनन्दन—"तू बिरादरी में कैसे मिलेगी! चौदह चौदह वर्ष घर से निकले हुए होगये। कौन जाने कहां कहां रही है और फिर मुझे इसकी जरूरत ही क्या है! साधू सती होगई। अब तेरे लिये कैसा घर द्वार?"

श्यामा—"और अगर मैं यहां रहना चाहूँ तब की कहो।"

शिवनन्दन ने थोड़ी देर तक सोचा। उसके दिल में तरह तरह के विचार उठे—'अगर रहती है तो अच्छी बात है। चाचा जी का घर खाली पड़ा है। रोकता कौन है!'

श्यामा—"तुम रोको या न रोको। रहने वाला तो हर तरह से रह सकता है और फिर मैं तो अपना जायदाद तुम

... ... के लिये काफी था।"

शिवनन्दन—"ओहो! तू जायदाद पर कब्जा करने के लिये आई है। हिन्दू धर्म शास्त्र में लड़की का कौन सा हक है। स्त्रीधन के सिवा उसको और किसी जायदाद का मालिक नहीं समझा जाता। उस पर मेरा कब्जा हो गया। खेवट में खसरे में खतौते में हर जगह मेरा नाम दर्ज है। बारह साल से ज्यादा हो भी गया।"

श्यामा मुसकराई—"तुम डरते हो कि मैं नालिश करूंगी।"

शिवनन्दन—"नालिश तो हो ही नहीं सकती। एक तो तू लड़की है और लड़की का कोई हक नहीं है। अगर तेरी औलाद होती तो कुछ सोचने की बात थी। औलाद भी कोई नहीं है। फिर तू साधू हो गई। साधू होने से मरदों के सारे हक गायब हो जाते हैं। तेरी तो गिनती ही क्या है! और फिर उस पर मेरा कब्जा है। कब्जा आप कानून है।"

श्यामा हँसी—"तब तो मैं कहीं की न रही। क्या तुम एक बेवा बहिन का पालन पोषण भी नहीं कर सकते? यह तो हो सकता है! तुम्हारे लिये कोई कठिनाई नहीं है।"

शिवनन्दन—"अगर तू यहां रहती होती तब यह सब हो सकता था। जो कुछ भी होता देखा जाता। दुनिया जान गई कि तू लापता है। कहां रही किस तरह रही इसे कौन जानता है! अगर मैं तुझे रख लूं तो ब्राह्मणों में मुँह कैसे दिखा सकूंगा। इतने दिनों स्त्री घर के बाहर रहे। बिरादरी उसे कब लेने लगी!"

श्यामा के ओठों से मुसकराहट दूर न हुई—"भाई! मुझे

इसकी परवाह नहीं है। मेरे कौन से बाल बच्चे आगे पीछे हैं जिनकी शादी विवाह की चिन्ता होती! इधर तो मेरा ध्यान भी नहीं है। आशा थी कि बुढ़ापे में तुम मेरी सहायता करोगे यह आस भी टूट गई। मालिक की मौज! धर्म के आगे किसी की दाल नहीं गलती।"

शिवनन्दन ने इसका जवाब नहीं दिया।

श्यामा बोली—"और नहीं तो गांव में रह कर सेवा टहल करके अपना पेट पालूंगी। इसमें तुम्हारी कोई हानि नहीं है।"

शिवनन्दन—"श्यामा! तू बावली हो गई है। तुझे कौन गांव में रहने देगा। जो निकला वह निकला। जो गया वह गया। तू तो बड़ी ही इज्जत वाली बनती थी। क्या मरते मरते बाप दादा के नाम को बट्टा लगायेगी! कुशल इसी में है कि तू यहां न रहे।"

श्यामा—"तुमने अभी कहा है कि चाचा जी का मकान खाली पड़ा है। मैं उसमें रह सकती हूँ। क्या इसमें भी रहने की आज्ञा न मिलेगी?"

शिवनन्दन—"यह बात यों ही मेरे मुंह से निकल गई थी।"

श्यामा हँसी—"तो यह आशा भी गई।"

शिवनन्दन—"बात तो ऐसी ही है।"

श्यामा—'लो दुल्हिन! बताओ अब क्या कहती हो? तुमने तो मुझे साथ रखना चाहा था। शिवनन्दन भाई का यह हाल है। अब कहो मैं क्या करूँ और किधर जाऊँ?"

सुलोचना की आंखों से टप टप आंसू गिर पड़े वह चुप होकर पति और नन्द का मुंह बार बार देखने लगी। बेचारी कहती भी तो क्या कहती!

शिवनन्दन ने बीच से बात काट कर—"अब मैं तुझे यहां नहीं रहने दूंगा।"

श्यामा—"तो मैं कहां जाकर रहूँ ?"

शिवनन्दन—"जिधर सींग समाय उधर चली जा। जहां से आई है वहीं जाकर रह। तेरा गांव में रहना कुल को कलंक का टीका लगाना है। मैं किसी तरह से तेरा साथ न दूंगा।"

श्यामा—"अच्छा जो जी में आये करो। नहीं रहने दोगे तो चली जाऊंगी। अकोड़ी में तुम सबसे बड़े आदमी हो। सब पर तुम्हारी हुकूमत है। मेरी जायदाद पाकर तुम्हें वह इज्जत नसीब हुई है। तुम कुछ के कुछ बन गये। मैं बेवा हूं। अबला हूँ। कोई सहायक नहीं है। न कोई अपना है न साथी है क्या वश है! कर्म प्रबल है। मैंने भूल की जो अपनी सारी जायदाद देकर चली गई। क्या यह अन्याय पाप और अधर्म नहीं है ?"

शिवनन्दन—"कैसी जायदाद ! और तू किसकी देने वाली। जो आराजी थी वह मौरूसी थी। लावल्द होने से गलतन्स होगई। मेरे सिवा और कोई वारिस नहीं था। उसे तो मेरे हाथ आनी ही थी।"

श्यामा—"बहुत अच्छा भाई ! तुम सुखी रहो। ईश्वर तुम्हारा भला करे ! मैं चाहे जैसी रहूं। मैं तुम्हारे पीछा पड़ना नहीं चाहती। किसी काम से अकोड़ी में आगई। मैं यहां कभी न आती। संयोग ऐसा ही पड़ गया। जो बात होने वाली है वह होकर रहती है। यहां मैं तुम्हारी भलाई के लिए आई थी। अपने लिए नहीं आई थी।"

शिवनन्दन के कान खड़े हुये—"तू और मेरी भलाई करे ! यह क्या बात है मेरी समझ में नहीं आती।"

श्यामा—"समझ में आयेगी और मैं समझा दूँगी। पहिले भी मैं ने तुम से ऐसा ही कहा था और अब भी ऐसा ही कह रही हूँ। तुम ने जल्दी की। इन शब्दों को मुँह से निकालने की जरूरत नहीं थी। सब्र के साथ मेरी बात सुनते तो तुम्हारा नुकसान नहीं था लेकिन तुमने तो यह समझा कि श्यामा जायदाद लेने आई है। तुमने भूल की। भूल आदमी ही से होती है। सब्र करते तो अच्छा होता। सब्र का फल मीठा होता है। अच्छा ! लो मैं जाती हूं फिर कभी मिलूँगी।"

शिवनन्दन हक्का बक्का रह गया। श्यामा चली गई।

सुलोचना ने पति से कहा—जीजी के साथ ऐसी बात नहीं करनी चाहिये थी। वह साक्षात् देवी हैं।"

शिवनन्दन—"तू क्या समझ सकती है ! मैं मर्द हूँ। दूर तक देखता और सोचता हूं. कुशल इसी में है कि वह यहां न रहे।"

सुलोचना—"क्यों ? वह तुमसे लड़ने नहीं आई थी।"

शिवनन्दन—"तू क्या जान सकती है ! उसका यहां रहना मेरे सर पर मुसीबत का पहाड़ गिरा देगा। कौन जाने गांव वाले उसके साथ मिल जांय। मुकदमे की नौबत आये और खराबी में पड़ना पड़े। चली जाती है तो अच्छा है। अब तो वह मुँह न दिखायेगी।'

सुलोचना—"लेकिन वह फिर आने को कह गई हैं।"

शिवनन्दन—"यह धमकी ही धमकी है।"

सुलोचना—"जीजी ने तुम्हारे ऊपर अहसान किया और

तुम्हारे कहने ही से तीर्थ यात्रा करने गई हुई थीं। क्या तुम उसे भूल गये ?"

शिवनन्दन—"भूला नहीं मुझे सब याद है। श्यामा का नाम लेते ही मेरी आंखों में खून उतर आता है। उसकी सूरत देखने से तो तन बदन में आग लग गई। ईश्वर न करे कि फिर कभी मैं उसकी सूरत देखूँ। यह देवी नहीं है, साक्षात डायन है।"

सुलोचना—"मैं सीधी सादी औरत हूँ। तुम्हारी बात नहीं समझ सकती। वह तुम्हारी भलाई के लिए आई थी। कम से कम सुन तो लेते कि वह क्या कहने वाली थी। इस में तुम्हारा कोई हानि नहीं थी। नेकी का बदला बदी आज ही मैं ने देखा है। ईश्वर दया करे!"

शिवनन्दन—"भलाई! वह मेरी क्या भलाई कर सकती है! हां उसके आने से बुराई होती और अब भी मुझे सन्देह है। तू जानती है गांव वाले मुझे फूटी आँख से भी नहीं देखते। उनको दांव मिलने की देर है। फिर बिना ऊधम मचाये न रहेंगे।"

सुलोचना—"सारी दुनिया तुम्हारे खिलाफ हो जाय लेकिन श्यामा जीजी से ऐसी आशा नहीं की जा सकती। जो तुम्हारी भलाई के ध्यान से एक बात पर गांव छोड़ गई और अपनी सारी जायदाद तुम्हें दे गई मैं कैसे मानूं कि वह तुम्हें हानि पहुँचाने की नीयत रखती है। हानि तो उनसे पहुँचेगी नहीं। हां! भलाई की आशा हो सकती है। मैं इसे जानती हूँ और मुझे उन पर पूरा पूरा विश्वास है।"

शिवनन्दन—"तू नादान है। तुझे दुनिया की हवा नहीं लगी। परले सिरे की भोली भाली है। श्यामा कसाइन है

डाइन है। उसका घर से दूर रहना ही अच्छा है।"

सुलोचना—'जब वह पहिले यहां रहती थीं तुम्हारे लिये ईश्वर से प्रार्थना किया करती थीं कि तुम हर तरह से सुखी रहो। तुम्हारे सिवा बाप दादों का नाम लेवा कोई भी नहीं है। फूलो फलो। वह तुम्हीं को अपना सब कुछ मानती और जानती थीं। इसीसे न समझलो कि तुमने एक बार उनको यहां से जाने के लिये कहा। वह चल खड़ी हुईं। तीर्थ से दो एक खत भी लिखा। तुमने मेरे कहने सुनने पर भी किसी का जवाब तक नहीं दिया। भूल और बुराई तुम्हारी ओर से है। उनका क्या दोष है! हां! मैं यह कह सकती हूँ कि उनमें छल कपट नाम को भी नहीं है। मेरी तरह भोली भाली हैं। जो तुमने कहा मान लिया और इसी मानने से उनको बरबादी होगई!"

सुलोचना—'मैं क्या करूं! मेरे तन बदन में तो आग लगी हुई है। वह दिन रात सुलगती रहती है। कभी कभी भड़क उठती है। तब नहीं रहा जाता। रो देती हूँ। न किसी से कहती हूँ न किसी की सुनती हूं अन्दर ही अन्दर खून हाड़ मास सब जल रहे हैं। तुम को क्या पता है। मां की ममता बुरी होती है। तुम मां होते तो मेरा हाल जानते।"

शिवनन्दन की आंखें क्रोध से लाल हो गईं थीं—"जब देखो वही बात! तू कभी उसे भूलेगी भी या मुरदे की ठटरी रख छोड़ेगी! जो होना था वह तो होगया। दुनिया में ऐसा होता ही रहता है। चल परे हट। घर के काम धन्धों में लग! तेरा यही धर्म है।"

सुलोचना रोती हुई पति के पास से उठी और घर के काज में लगी।

—o—

चौथा अध्याय

सबूत

श्यामा कई दिनों अकोढ़ी में रही। गांव वालों को उसके साथ सच्चा प्रेम था। सब शिवनन्दन से दिलों में जलते थे। वह स्वभाव का कड़ा, चिड़चिड़ा और अहंकारी था। जब से वह मालदार बन गया था एक एक को सताता रहता था। किसी की बेईमानी से जमीन ले ली। किसी पर मुकदमा चला दिया। किसी को पुलिस के हाथ में फँसा दिया। दिन रात उसका यही काम था। गांव में उससे किसी की नहीं बनती थी। वह पुलिस और सरकारी आदमियों से मिला रहता था। अकोढ़ी कनतित के राजा की जमींदारी है। यह अपने को पाण्डवों के वंश से बताते हैं। राजाओं में इनकी बड़ी इज्जत है और कनतित की लड़कियां अब तक राजपूतों के शाही खानदानों में ब्याही जाती हैं। जमींदारी के अहलकार शिवनन्दन के हाथ में थे। रुपये की मार बड़ी बुरी होती है। वह जो चाहता था, रिशवतें देकर करा लेता था। इन बेचारों का नाक में दम था। किसी का बस नहीं चलता था। शिवनन्दन का ध्यान इनकी ओर नहीं था। उसने इतनी भी परवाह नहीं की कि श्यामा को किसने अपने घर में जगह दी है। वह जानता तो था लेकिन जानबूझ कर टाल गया। अवसर कुछ ऐसा ही आगया था। श्यामा कुछ दिनों तक गांव में रही। उसने अपना काम लोगों से करा लिया। फिर उलटे पांव विन्ध्याचल चली आई। सोमदत्त को उसकी वापसी का पता नहीं था। इस लिये यह तो नहीं आया। श्यामा और मनोरमा दोनों भेष बदल कर वासला गंज मुहल्ले का पता

लेती हुई मिरजापुर गईं और बिना रोक टोक के रविदत्त के फाटक में चली गईं। बाप बेटे दोनों बैठक में थे। सोमदत्त दो औरतों को देखकर कमरे से बाहर निकला। पहिचानते ही हँस कर नमस्कार किया और बिना कुछ पूछे गछे उन्हें बैठक में लाया और आप जनाने में जाकर अपनी मां को बुला लाया। इस समय कमरे में पांच आदमी हैं-रविदत्त, सोमदत्त, रुक्मणी, श्यामा और मनोरमा।

रविदत्त ने नमस्कार करके पूछा—"माई तूने कैसे कृपा की ?"

श्यामा—"मैं आप से धाम में मिली थी। आपको याद होगा। फिर मिलने का अवसर नहीं मिला। सोमदत्तजी मुझसे कई बार मिलते जुलते रहे इन्हें इस बात के जानने की प्रबल इच्छा थी कि हम दोनों किस जाति की हैं। पहिले तो मुझे इन बातों से चिढ़ थी। मैं सबसे अलग थलग रहना ही पसन्द करती थी। इन्होंने पूछा। आपने भी वही सवाल किया। मुझे बुरा लगा। किसी को क्या पड़ी है कि हम गरीबों के पीछे पड़े ! इसी लिये हम छतमी छोड़ कर विन्ध्याचल चली आईं। यह बहूं भी हमसे मिले। मैंने इनकी बातें सुनी। दिल में इज्जत पैदा हुई। इसी लिए आज यहां आना हुआ।"

रविदत्त—"इस आने की कोई गरज भी ?"

श्यामा—"अगर और कोई औरत होती तो इस सवाल से शरमा जाती। इस सवाल का जवाब सोमदत्त से लीजिये।"

रविदत्त—"सोमदत्त मुझसे तुम्हारा सारा हाल कह चुका है। उसने कोई बात नहीं छुपाई। तेरा हिन्दी खत भी मुझे दिखाया था।"

श्यामा—'इन्होंने बहुत अच्छा किया। मैं नहीं चाहती

थी कि कोई बात परदे में रखकर की जाय। यह उसूल के पक्के हैं। मैं इनसे खुश हूं।"

रविदत्त—"और भी तुझे कुछ कहना है ?"

श्यामा ने जवाब नहीं दिया। उसके हाथ में एक लम्बा सा कागज हिन्दी में लिखा हुआ था। उसे निकाला, सोमदत्त के हाथ में रख दिया—"बेटे यह सबूत है जिसे तू चाहता था।"

सोमदत्त ने कागज उलट पलट कर देखा। उसमें बहुत आदमियों के दस्तखत थे। वह कैथी हिन्दी नहीं पढ़ सकता था। बाप के हाथ में दिया। उसने बड़े गौर के साथ पढ़ा और पढ़कर कहा—"मुझे इतमीनान हो गया कि तू जाति की ब्राह्मणी है और यों तो मैं समझ गया कि तू जन्म और कर्म दोनों की दृष्टि से सच्ची ब्राह्मणी है। मुझे कोई सन्देह नहीं रहा। सोमदत्त ! लो अब तुमको भी विश्वास होना चाहिये। तुम्हारा ख्याल ठीक निकला। यह उसी का सबूत है जो श्यामा लाई है। अब तो तुम खुश हो गए। तुम्हारा खब्त ठौर ठिकाने लगा।"

सोमदत्त—"तकलीफ तो होगी लेकिन इसे पढ़ कर सुना दीजिये। मैं भी सुन लूँ और माता जी भी सुन लें !"

रविदत्त ने शुरू से आखिर तक वह कागज पढ़कर सुनाया। मां बेटे दोनों चकित हो गये।

रुक्मिणी ने कहा—"यह दुनिया विचित्र जगह है। जो न चाहे वह हो जाये। यहां किसी बात का ठिकाना नहीं है।"

रविदत्त—"इन्हीं पाखंडों में फंसकर हिन्दुओं ने सब कुछ खो दिया। अब भी इनको सुधार की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। बड़े ही अफसोस की बात है !"

सोमदत्त—"यह जन्म कर्म स्वभाव की विचित्र कहानी है

इससे सिद्ध होता है कि जन्म के ब्राह्मण ब्राह्मण ही होते हैं। अब कम से कम मैं तो इस सिद्धान्त को अच्छी तरह से मान गया।"

तीनों अपनी अपनी बात कह कर चुप होगये। श्यामा भी चुप रही और मनोरमा तो लड़की ही थी। उसने जुबान तक नहीं हिलाई। उसे बोलने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

रविदत्त ने पूछा—"माई! यह सब तो होगया। इसके सिवा तेरी और भी कोई गरज है?"

श्यामा—"महाराज! मेरी जाती गरज कोई नहीं है न मैं गरज वाली हूँ। आपने खुद ही मदद देने का वादा किया था। मैंने आपसे मदद नहीं मांगी। आपके बहुत कहने पर मैंने इतना कहा था कि रुपया पैसा मैं किसी से लेती नहीं और न लूंगी। इसकी मुझे जरूरत भी नहीं है। जिस दृष्टि से आपने सहायता देने का बचन दिया था वह आप खुद समझ सकते हैं। मुझे अब आप से कुछ कहना सुनना नहीं है।"

रविदत्त—"अब तू कहां रहेगी।"

श्यामा—"हवा से पूछो कहां रहेगी। जो वह जवाब दे वही मेरा जवाब समझो। पानी से पूछो वह कहां ठहरेगा। वह जो कहे वही मेरा कहना होगा। यहां ठहराव की कोई सूरत नहीं है। जैसे काल के चक्र में सब तत्व सूर्य्य चांद सितारे घूमते रहते हैं वैसे ही आदमी का भी हाल है। आदमी भी तो तत्व है। जब तक वह चक्र चलता रहता है तब तक सब चक्कर काटते रहते हैं।"

रविदत्त—"तू आदमी को तत्व कहती है।"

श्याम—"तत्व नहीं तो क्या है! यह भी सृष्टि का एक तत्व ही है।

रविदत्त—"तत्व तो अलग अलग होते हैं। आदमी तो तत्वों के मेल से बना हुआ है।"

श्यामा—"मैं आपके साथ शास्त्रार्थ करने नहीं आई हूँ। अगर आकाश, वायु को अलग अलग तत्व मानते हो तो फिर आदमी को ऐसा मानने में क्या हर्ज है। आकाश, वायु, जल, पृथ्वी कोई भी बिना मिलौनी के नहीं हैं। जितना भी चाहो छान बीन करते चलो। जब आकाश की हद में पहुँचोगे तब पता लगेगा। यही दशा सब की है।"

रविदत्त—"यह एक दम नई बात है। आज तक किसी ने ऐसी बात नहीं कही। तू आकाश तक को मिला हुआ तत्व बतला रही है।"

श्यामा—"आकाश, वायु अग्नि, जल और पृथ्वी सबके सब स्थूल तत्व हैं और जब यह स्थूल हुये तो इनके सूक्ष्म रूप का पता लगाइये और फिर उनके बीज की छान बीन कीजिये जो कारण है। फिर यहां पहुंच कर सोचना पड़ेगा कि वह क्या हैं? उस समय सम्भव है असलियत का कुछ पता लगे।"

रविदत्त—"तू विचित्र स्त्री है।"

श्यामा—"आप भी विचित्र पुरुष हैं जो औरों की बावत तो पूछते फिरते हैं लेकिन अपनी ओर दृष्टि नहीं जाती।

आप आप को आप पिछाने।
कहा किसी का कभी न माने॥
अपने आप की समझ जो आवे।
तब निज तत्व भेद कुछ पाये॥
अपना नहिं औरन का ज्ञान।
कहिये उसे भरम अज्ञान॥

रविदत्त—"मैं समझ गया। तू ने बड़ी अच्छी समझ

पाई है ।"

श्यामा- "भगवन ! यहां सब तत्व ही तत्व हैं। आदि से अन्त तक सब मिले जुले हैं। बिना मिलौनी का तत्व केवल आत्मा, रूह या सुरत है वरन् शब्द, ज्योति, ब्रह्म, परब्रह्म, ईश्वर जीव, बुद्धि, मन, आकाश मिट्टी सबके सब तत्व ही हैं। अब आप समझ गये होंगे कि आत्म तत्व ही बिना मिलौनी का है और सब के सब मिलौनी से बने हुये हैं।"

रविदत्त—'माई ! यह बातें तू ने कहां और किस से सीखीं ?"

श्यामा—"धाम के सत्संग में ! गुरुकी दया से !"

रविदत्त—"क्या तू सत्संगिनी है ?"

श्यामा—"हां ! मैं और मनोरमा दोनों ही सत्संगिनी हैं।'

रविदत्त—"कुछ पढ़ी लिखी भी है ?"

श्यामा—"मैंने तीर्थ यात्रा के समय कुछ हिन्दी संस्कृत पढ़ी लिखी थी। मनोरमा भी हिन्दी संस्कृत जानती है। अहीरों के भेष में रहते हुये हम दोनों ने गवारों का स्वांग बना रक्खा था जिसमें कोई छेड़ छाड़ न करे।"

रविदत्त—"मुझे तेरी और तेरी लड़की मनोरमा के ब्राह्मण होने का पूरा-पूरा सबूत मिल गया। मैं जानता हूँ सोमदत्त को भी अब विश्वास होगया होगा।"

सोमदत्त—"तहकीकात खतम होगई।"

रविदत्त—"माई अगर तू मेरे घर में ठहरे तो रात को मैं और बात चीत करूंगा।"

श्यामा—"यह मेरे उसूल के खिलाफ है। हम धाम में भी रात के सत्संग में कभी नहीं जाती थीं। अब विन्ध्याचल वापस जाती हूं। सोमदत्त को मैंने मुंह बोला धर्म का

बेटा कहा था इसलिये यह सबूत देना जरूरी था और इसीलिये मैं अकोढ़ी गई थी।

—: (०) :—

पांचवा अध्याय

मां-बाप-बेटा

इसके कहने की जरूरत ही नहीं है कि श्यामा और मनोरमा के मिलने से रुक्मिणी, रविदत्त और सोमदत्त तीनोंखुश हुये। श्यामा और मनोरमा की हालत और तरह की थी। दोनों बेगरज थीं। न इन्हें दुख था न सुख था। मनोरमा लड़की थी लेकिन श्यामा की संगत और शिक्षा ने उसे साधवी बना रक्खा था।

जब रात में सब लोग खाना खा चुके, रविदत्त ने रुक्मिणी और सोमदत्त को खास अपने कमरे में बुला भेजा।

रविदत्त ने लड़के के सामने ही अपनी स्त्री से पूछा—"तू ने श्यामा और मनोरमा को देख लिया। उनसे सम्बन्ध में क्या राय रखती है?"

रुक्मिणी—"दोनों स्वर्गलोक की देवियां और आदमियों में अनमोल रत्न हैं?"

रविदत्त—"तू ठीक कहती है।"

रुक्मिणी—"मैंने ऐसी समझ बूझ वाले आदमी साधुओं में भी नहीं देखे। मैं इनकी दिल से इज्जत करती हूँ। न किसी से लेना न देना! न किसी से कोई गरज न वास्ता! ऐसे लोग दर्शन योग्य होते हैं। यह कहां देखने को मिलते हैं। आंखें इनके दर्शन को तरसती हैं। यह आदमी नहीं साक्षात् देवता हैं।"

रविदत्त—"सोमदत्त ! तुम्हारा क्या विचार है ?"

सोमदत्त—"माता जी ने बहुत ठीक कहा है"

रविदत्त रुक्मिणी से—"पता नहीं श्यामा का मनोरमा के विषय में क्या विचार है। वह उसे ब्रह्मचारिणी रखना चाहती है या गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की आज्ञा देगी।"

रुक्मिणी—"बिना पूछे हुये कुछ कहा नहीं जा सकता।"

रविदत्त—"फिर कौन पूछे ?"

रुक्मिणी ने कुछ जबाब नहीं दिया। वह दोनों का मुँह देखती रही।"

रुक्मिणी—"क्या कहूँ ! जब कहने की बात हो तो कहूँ। शादी बिवाह की बात नाजुक होती है। जब किसी की गरज मालूम हो तो बात भी कही जाय। इस सवाल का न कहीं सर है न पैर हैं। क्या तुम मनोरमा का विवाह किसी से कराना चाहते हो ? यह मालूम हो जाय तो मैं जुबान भी खोलूँ।"

रविदत्त—"हां ! विवाह कराना चाहता हूँ। मैंने श्यामा को मदद देने का वादा किया था।"

रुक्मिणी—"वह कई बार तुम्हारे मुँह पर कह गई है कि उसे किसी मदद की जरूरत नहीं है। वह रुपये पैसे की मुहताज नहीं मालूम होती। विवाह भी कराओगे तो किसके साथ ?"

रविदत्त—"सोमदत्त के साथ।"

रुक्मिणी—"यह क्यों ? वह तो साधवी है और तुमने शिवनन्दन की लड़की की शादी मंजूर करली है। जुबान एक कि दो ?"

रविदत्त—"तू ने आप ही अभी कहा है कि वह अनमोल रत्न है। ऐसा रत्न रोज रोज हाथ नहीं आता। एक जबाब

तो यह है। दूसरा जवाब यह है कि जुबान एक है दो नहीं। मैं शिवनन्दन के साथ निबट लूँगा। इसमें कोई कठिनाई नहीं है।"

रुक्मिणी–'फिर मैं क्या करूँ ?"

रविदत्त—"तू औरत है। कल विन्ध्याचल सोमदत्त को लेकर चली जा। बात बात में श्यामा के साथ इस विवाह को ठीक करले। मैं आप उससे बात चीत नहीं कर सकता।"

रुक्मिणी 'तुमने शादी करने वाले से भी पूछ लिया है या यों ही जबरदस्ती शादी कर दोगे ? सोमदत्त जवान और समझदार हो गया है। वह अपना बुरा भला समझ सकता है। यह जिन्दगी का साथ है। अगर वह छोटा होता तब दूसरी बात थी। मैं नहीं कह सकती वह इस विवाह को पसन्द भी करेगा या नहीं।"

रविदत्त –'ठीक है। सोमदत्त ! कहो तुम्हारी क्या राय है ? शिवनन्दन की लड़की के साथ मैंने बिना तुमसे पूछे हुये नाता मंजूर कर लिया था। सचमुच वह भूल थी। तुम्हारी मां राय दे रही है कि तुम अपने विचार साफ साफ जाहिर करदो। विवाह तो करना ही होगा और वह इसी जेठ में होगा। बोलो ! तुम किसे पसन्द करते हो ?",

सोमदत्त देर तक सर झुकाये हुये बैठा रहा। न 'हाँ' कहा न 'नहीं' किया। वह पसीने पसीने हो रहा था।

रुक्मिणी ने उसके कान में झुककर कहा—"बेटे ! तू बोलता क्यों नहीं ? गूंगा क्यों बना हुआ है। इस समय दो लड़कियां तेरे सामने हैं। अगर चुप रहता है तो यह शिवनन्दन की लड़की से मेरी शादी कर देंगे और अगर तू मनोरमा को पसन्द करता है तो सिर्फ नाम ले दे। यह समझ जायँगे। हम सब तेरी खुशी हर हालत में चाहते हैं।"

सोमदत्त की पेशानी पर शर्म से पसीना आगया। उसने माँ की ओर देखकर दबी जुबान से कहा—"मनोरमा।"

रुक्मिणी खिलखिला कर हँस पड़ी—"हम दोनों की अकल पर पत्थर पड़ गये थे। मनोरमा इसके मन में पहिले ही से बसी हुई थी। तभी तो वह फूस के झोंपड़े के चारों ओर चक्कर लगाया करता था और गुमनाम को इतने परिश्रम से खोज निकाला। लो अब क्या कहते हो! बेटा मनोरमा का प्रेमी है। उसे उसके साथ जिन्दगी बसर करना है। बाप की पहले ही से ऐसी राय और बेटा छुपा हुआ रुस्तम! मां बेचारी न तीन में न तेरह में! तुम दोनों ने पहिले ही से राय कर रक्खी होगी, आज मुझसे यों ही सलाह पूछने लगे थे। जब दोनों राजी हो तो मुझे भी राजी समझो! किसी तरह घर में बहू आये। आल औलाद चले। मुझे पोते पोती खिलाने का सुख मिले। यही मेरे लिये काफी है।"

सोमदत्त इतना लज्जित हुआ कि उस पर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गये।

रुक्मिणी बोली—"अरे नादान! तू शरमाता क्यों है? यह तो तेरी ही भलाई की बात है। जा, सो रह। खाट पर पड़ा हुआ अपनी मनोरमा का स्वप्न देख! मैं कल नहा धोकर तुझे अपने साथ विन्ध्याचल ले चलूंगी। तू वहां न रहना। मैं श्यामा से निबट लूंगी।"

—०—

छटवाँ अध्याय

श्यामा और रुक्मिणी

सुबह हुई। सब ने नहाया धोया। भजन ध्यान से छुट्टी पाकर खाया पीया। रविदत्त तो जमींदारी के काम में लगा।

सोमदत्त और रुक्मिणी मोटर पर बैठकर विन्ध्य चल पहुंचे। दोनों ही खुश थे। श्यामा के घर गये। मां बेटी बैठी हुई ज्ञान ध्यान की चर्चा कर रही थीं। यह उनका नित्य नियम था।

सोमदत्त और रुक्मिणी ने दरवाजे पर दस्तक दी। श्यामा ने दरवाजा खोला। दोनों को अन्दर लेगई। मकान में फर्श का नाम तक नहीं था। दो खजूर की चटाइयां बिछी हुई थीं। एक श्यामा के बैठने के लिये और दूसरी मनोरमा के लिये। बर्तन भांड़े भी उनके मामूली थे।

श्यामा ने रुक्मिणी को मनोरमा की चटाई पर बिठाया और सोमदत्त को अपनी चटाई पर बैठने को कहा। इसने बहाना किया—'मुझे कुछ काम करना है। तुम अम्मा के साथ बातचीत करो। मैं दो घण्टे पीछे आकर इनको लिवा जाऊँगा।" यह कह कर वह चला गया। श्यामा ने कुण्डी बन्द की और रुक्मिणी के पास आ बैठी—"आज हमारे भाग्य कैसे उदय हुए कि तुम यहां आई हो।"

रुक्मिणी—"मैं सीधी साधी औरत हूँ। बहुत बात चीत करना नहीं जानती। तुम मनोरमा की मां हो। मैं सोमदत्त की माता हूं। माताओं को अपनी औलाद की भलाई का सब से ज्यादा खयाल रहता है। यह तुमको मालूम है।"

श्यामा समझदार औरत थी। यह उड़ती चड़िया पहिचानती थी। यह तो रुक्मिणी के आते ही समझ गई कि उसके आने का क्या कारण है और अब तो कोई बात भेद की रह नहीं गई। रुक्मिणी ने आते ही अपने दिल की गिरह को खोल दिया।

श्यामा ने कहा—'तुम सच कहती हो। ऐसा ही होता है। शब्दों के परदे में मतलब की रूह छुपी हुई है।"

रुक्मिणी—"तुम जान बूझ कर अनजान बनती हो। मैंने

तो साफ साफ जो कहन था कह चुकी। अब क्या पूछती हो ! नहीं मानती हो तो सुनो—मनोरमा मेरे लड़के सोमदत्त के मन में रम गई। इसके बिना उसे चैन नहीं है। वह बावलों की तरह फिरा करता है। लड़के के बाप ने मुझे भेजा है कि तुम इसका विवाह मेरे लड़के के साथ कर दो। मैं इसीलिये यहां आई हूँ !"

श्यामा—"मैं कंगाल हूँ। तुम धनवान हो। मेल कैसे मिले ! अनमिल बे जोड़ नाता किस काम का !"

रुक्मिणी— 'कंगाल मैं, धनवान तुम ! क्या कहीं ताना तो नहीं दे रही हो। औरतें ताने खूब दिया करती हैं। मैं तुम्हारे घर धन मांगने को आई हूँ। मनोरमा मेरी दृष्टि में लक्ष्मी है। जो मांगने आये वह कंगाल और जो दान दे वह धनवान !"

श्यामा—"बहिन सुनो ! तुम पढ़ी लिखी और पढ़े लिखों की संगत में रहती हो। बात चीत में मैं तुमसे नहीं जीत सकती। यह समझलो सोमदत्त का पालन पोषण लाड़ प्यार में हुआ है और मनोरमा गरीबों की लड़की की तरह पली है। इस पर तुम सोच लो !"

रुक्मिणी—"यह औरतों के चोचले जाने दो। मतलब की बात करो। तुम हमारे घर धाम में दूध पहुँचाया करती थीं। उसी दूध की अब इच्छा है। वहाँ दूध तो दे चुकी हो। अब यहां भी दूध पूत दो। मेरी यही प्रार्थना है।"

श्यामा—"पूत तो तुम्हारा है जो तुमको मिला हुआ है। मनोरमा पुत्री है। पुत्री मांगती तो कुछ ठीक भी होता।"

रुक्मिणी—"वाह बहिन वाह ! तुम तो दिन दहाड़े डाके मारती हो। मैंने अपने जीवन में तुम्हारे जैसा किसी डाकू का हाल भी नहीं सुना। इन्दौर में तांतिया भील जबरदस्त

डाके मारा करता था। वह तो धन दौलत का लुटेरा था। तुम लड़के बालों को लूटती हो। सोमदत्त मेरे पेट का जाया लड़का है। तुमने उसे कैसे मुँह बोला लड़का, धर्म का बेटा बना लिया! तुमको इसका अधिकार कब था! मां की गोद खाली करके बातें बनाती हो। अच्छा! जो होना था वह तो हो चुका। मैं तुम्हारी लूट को भूल गई। अब ब्राह्मण भिखारिनी की सूरत में तुम से भिक्षा मांगने आई हूँ कि मेरा बेटा मुझे लौटा दो और उसके साथ ही अपनी बेटी भी मुझे दे दो। ब्राह्मण का धर्म भिक्षा मांगना है। मुझे तुमसे भिक्षा मांगते हुए लज्जा नहीं आती। यह तो हमारा पेशा ठहरा। मैं हाथ बांधकर तुमसे कहती हूँ—ऐ जबरदस्त डाकू! ब्राह्मणी के लड़के को इस तरह न छीनले। वह तेरा ही लड़का सही। अपनी बेटी उसे ब्याह दे। दोनों सुखी रह कर खुश रहें। उन्हें सुखी देखकर मेरी आंखें ठण्डी हों और इस पुण्य के लिये दाता तेरा कल्याण करे!"

श्यामा खिलखिला कर हँसी—"बावरी ब्राह्मणी! तू तो सरस्वती बन कर आई है।"

रुक्मिणी भी हँसी—"सरस्वती की लक्ष्मी के बिना कहीं भी इज्जत नहीं होती। जब दोनों साथ साथ हों तब सुरन्दरता और आनन्द है।"

श्यामा—"सोच भी लिया है या यों ही कह रही हो?

रुक्मिणी—"खूब सोच लिया है। कई महीने से इस पर बिचार होता रहा है।"

श्यामा—"फिर सोमदत्त की शादी दूसरी जगह कैसे ठहराई?"

रुक्मिणी—"बात का बतंगड़ा क्यों करती हो? दूसरी जगह शादी कैसी! जो चीज जहां की है वहां ही है। नाम

रूप का भेद है। इस पर और बहस मत करो। अगर और कुछ पूछना हो है तो सोमदत्त के बाप तुम्हारी तसल्ली कर देंगे।"

श्यामा अपने मन में कुछ देर तक सोचती रही—"जिसका जहां का संस्कार होता है वह वहां ही मिलता है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। अब मैं तुम से अपना हाल कहती हूँ। मैं अस्ल में ब्रह्मचारणी हूँ। विवाह होने को तो बचपन ही में हुआ लेकिन पति का मुँह नहीं देखा कि वह मर गये। तब से मैं जप तप का जीवन व्यतीत करने लगी। भाग्यवश यह लड़की मुझे मिली। मैंने इसे पाला पोसा, पढ़ाया लिखाया। दुनया मुसीबतों की जगह है! इसे मैंने ऐसी शिक्षा दी कि यह भी ब्रह्मचारिणी बने। अब तक मैंने इसके खयाल में कोई तबदीली नहीं देखी! तुमने ऐसी जल्दी में यह बात कही है कि सोचने का कोई समय ही नहीं मिला। क्या तुम सब्र नहीं कर सकतीं! मुझे समय मिलना चाहिये।"

रुक्मिणी— 'सोनार सोनार में अदल बदल नहीं होता। यह तुम जानती हो। तुम भी औरत हो और मैं भी औरत हूँ। इसे तुम मानती हो। मरदों को तो औरतें धोखा देसकती हैं लेकिन औरत को औरत बहुत कम धोखा दे सकती है। यह कुछ उनकी प्रकृति है। तुम महीनों से इस पर विचार कर रही हो। अपने मुँह बोले धर्म के बेटे से यही सवाल एक बार तुमने किया था। मेरा भोला भाला बच्चा! वह क्या समझ सकता था। लज्जित होकर चला गया और आज तुम मेरे सामने बात बना रही हो मैं सोमदत्त के बाप से वादा कर आई हूँ कि सारी बातें आज ही तै करके आऊँगी।

श्यामा—"तुम बड़ी जबरदस्त हो।"

रुक्मणी—' जबरदस्त तुम हो जो दूसरों की औलाद पर

हाथ साफ करती हो। इधर किसी की लड़की ली। उधर किसी का लड़का लिया। किसका पाऊं अपना बनाऊँ। यह तो तुम्हारी दशा है और मुझे जबरदस्त बताती हो। उलटा चोर कोतवाल को डांटे। यह कहावत तुम्हारे ऊपर सच आती है।"

श्यामा—"मैं तो चोर ठहरी और तुम क्या ठहरीं?"

रुक्मिणी—"चोर के घर में ढिंढौर पैठा। तुम चोर मैं ढिंढोर। तुम एक एक करके लेती हो और मैं एक साथ हाथ साफ करना चाहती हूँ।"

इस पर श्यामा खिलखिला कर हँसी। रुक्मिणी भी हँसी। मनोरमा अपनी हँसी रोकने पर भी अपने आपको न सँभाल सकी।"

श्यामा—"तुमने सोमदत्त से पूछ देखा है?"

रुक्मिणी—"पूछे न होती तो यहां कैसे आती! और वह आप मुझे लाकर पहुंचा कैसे जाता! ईश्वर को न देखा तो अक्ल से पहिचाना!"

श्यामा—"तो मुझे भी मनोरमा से पूछ देखने दो।"

रुक्मिणी—"नहीं! एक दम नहीं! तुमने मेरे बेटे को छीनते समय क्या मुझसे राय ली थी? जैसा सलूक तुमने छुपे चोरी मेरे साथ किया है वैसा ही मैं भी तुम्हारे साथ करूंगी। मैं मनोरमा को भी वैसे ही तुमसे छीनूंगी जैसे सोमदत्त मेरी गोद से छीना गया है।"

श्यामा इस पर मुसकराई—"अच्छा भाई! मैं हारी तुम जीतीं। तुम आप मनोरमा से पूछ देखो। इसमें तो कई हर्ज नहीं है।

रुक्मिणी मनोरमा से बोली—"बेटी! तेरी मां ने मेरे बेटे को जबरदस्ती मेरी गोद से छीन लिया। मैं उससे बदला लेने आई हूं और बिना बदला लिये हुए नहीं जाऊंगी। तू

साफ साफ कहदे। सोच विचार की जरूरत नहीं है। मैं तुझे आज से बेटी बनाती हूँ और मां की जितनी ममता होती है तुझ पर न्यौछावर कर रही हूँ। बता दे मेरी मुंह बोली बेटी, धर्म की बेटी, कर्म की बेटी और इस तरह की सच्ची बेटी बनने के लिये तैयार है या नहीं? या अगर मैं तुझे बेटी कहूं तो तू मुझे माई न कहेगी?"

मनोरमा बोल उठी—"मैं भी माई कहूंगी।"

रुक्मिणी—"कहो श्यामा बहिन! अब क्या कहते हो? फैसला होगया या नहीं?"

श्यामा समझ गई कि मनोरमा आखिरी सवाल के धोखे में आगई और उसका जवाब बिना सोचे समझे मुंह से निकल गया। वह हँस कर कहने लगी—"मियां बीबी राजी तो क्या करे शहर का काजी। क्यों मनोरमा! इतने दिनों तक तुझे पाला पोसा और तू ऐसी निठुर बन गई कि मुझसे सलाह तक नहीं पूछे। लोग सच कहते हैं बेटी की जाति मतलबी होती है।"

मनोरमा शरमाई—"माई! इन्होंने बेटी कहा। मैंने माई कहा। इसमें मैंने क्या दोष किया?"

श्यामा हँसी—"लो बहिन तुमको मुंह मांगी मुराद मिल गई! मुझे तुमने हर तरह से लाजवाब कर दिया। मनोरमा को जब चाहो ले जाओ। यह आज से तुम्हारी अमानत है। अब इस पर मेरा कोई अधिकार नहीं है।"

रुक्मिणी—"दानी का भला हो! दाता का कल्याण हो! जिस तरह तुमने मेरी लाज रक्खी उसी तरह मालिक तुम्हारी लाज रक्खे।"

मनोरमा शर्म से पानी पानी होगई! समझती बूझती सब थी लेकिन भोली भाली थी। श्यामा ने उसे अपनी गोद से

चिमटाकर दोनों हाथों से उठाया और रुक्मिणी की गोद में बिठाकर कहा—'लो इसे ले जाओ। अपना बेटा भी ले जाओ मेरी बेटी को भी ले जाओ। आज मुझे इसके पालने का फल मिल गया। इसमें ईश्वर का हाथ है। न मैंने कुछ किया न तुममें से किसी ने कुछ किया। कर्ता धर्ता कोई और ही है और उसकी इच्छा पूरी हो।"

दोनों औरतें देर तक हँसी दिल्लगी करती रहीं! मनोरमा चुप थी। इसमें दो घण्टे लग गये। इतने में सोमदत्त भी लौट कर आगया!

रुक्मिणी ने कहा—"ले बेटे! हुजूर दातादयाल ने तेरी मुराद पूरी की। जो देवी तेरे मन में रमी हुई थी आज उसने प्रकट होकर दर्शन दे दिया। अब तू सिद्ध होगया। जा खुशी से रह। मालिक तुम दोनों को सुखी रक्खे और तुम्हें फूलता फलता देखकर हम लोग भी सुखी हों। आज से इसे पाकर तू धनवान हुआ है। इसकी कद्र कर। ऐसा धन सबको नहीं मिलता। तुझ पर मालिक की बड़ी दया है।"

रुक्मिणी श्यामा और मनोरमा से गले मिल कर मोटर पर बैठी और मिरजापुर चली आई। मनोरमा और श्यामा को हैरानी हुई कि दम के दम में क्या होगया।

—:०:—

सातवां अध्याय

विवाह

बैसाख का महिना बीत गया! श्यामा और रुक्मिणी कई बार मिलीं। जिस दिन से श्यामा ने मनोरमा को रुक्मिणी

की गोद में बिठाया। उसी दिन से रविदत्त के घर जाना छोड़ दिया। समधिन समधिन के घर नहीं जातीं। यह हिन्दुओं में पुराना रस्म है जो हजारों साल से चला आ रहा है। रुक्मिणी आप ही विन्ध्याचल जाकर ससे मिल जाती थी।

रुक्मिणी चाहती थी कि विवाह विन्ध्याचल में हो और बरात मिरजापुर से आये। रविदत्त की भी यही इच्छा थी लेकिन श्यामा ने अपनी गरीबी बेबसी और लाचारी दिखलाई। उसने सलाह दी कि शादी धाम में करदी जाय जिसमें उसे अपनी गरीबी से शर्म न उठानी पड़े और रविदत्त का भी रुपया फजूल दिखावे के कामों में खर्च न हो। इसकी सलाह अच्छी थी। रविदत्त समझदार आदमी था। वह दोनों ओर के खर्च का बोझ अपने सर पर लेना चाहता था लेकिन श्यामा इसमें भी अपनी हँसी और बदनामी समझती थी। इस लिये घराती बराती दोनों राधास्वामी धाम में आये। दिखावे और जलूस में जो हजारों रुपये खर्च होते उनकी बचत हो गई। लाला मातबदल लाल दद्दा ने दो ही चार दिन में शादी का सारा स'मान इकट्ठा कर दिया। बाबू मोतीलाल मैनेजर राधास्वामी धाम, बाबू राम बुझारत लाल, मास्टर ज्ञानचन्द, बाबा रामसहाय हकीम चुन्नू सिंह, तारादेवी, सोना बाई, सुशीला देवी, श्यामा बाई और लक्ष्मी देवी और धाम के सब लोगों ने मदद की और जेठ चढ़ते ही शादी हो गई।

गांव के रहने वाले पुराने खयाल के होते हैं! इन्होंने भी दांतों उङ्गली दबाई और महीनों काना फुन्सी करते रहे।

एक आदमी दद्दा से मिलकर कहने लगा—"धाम के ब्राह्मण ने अहीरनी ब्याही है! यह कैसा गया गुजरा आदमी है! क्या इसे ब्राह्मण की लड़की नहीं मिलती थी।

रुपया दे दे कर तो साठ साठ साल के बूढ़े अपना ब्याह यहां कर ही लेते हैं। यह तो अभी कल का लड़का है। अङ्गरेजी पढ़ा लिखा बी०ए० पास ! ईश्वर ने इसकी मति क्यों मार दी है ! दद्दा ने कितना समझाया कि श्यामा और मनोरमा दोनों ब्राह्मणी थीं, किसी को मालूम नहीं था। वह हँसा—"मैं समझ गया। तुम लोगों ने उसकी शुद्धि की है और अहीरनियों को नई तरह की ब्राह्मणी बना लिया।"

दूसरा बोला—"घोर कलियुग आ गया। कलियुग में वर्णाश्रम धर्म नहीं रहता। वर्ण संकर औलाद पैदा होती है। इसी लिये तो शास्त्र के विरुद्ध कानून पास करा दिया गया कि चाहे जिस जाति की स्त्री हो विवाह कर लेने पर उसकी औलाद जायदाद की कानूनी वारिस होगी।"

तीसरे ने कहा—"भाई चाहे जो कुछ हो धाम वाले सनातनी नहीं हैं। आर्य्य समाजी हैं। इनसे बचकर रहना चाहिये। यह हिन्दू धर्म को भ्रष्ट करने लग गये हैं।"

जितने मुँह उतनी बातें ! आखिर शिवनायक कोयरी ने अपने यहां दस बीस आदमियों को बुलाकर समझाया—"धाम वालों की निन्दा और बुराई न करो नहीं तो पाप चढ़ेगा। श्यामा और मनोरमा दोनों ब्राह्मणी हैं और अकोढ़ी के रहने वाले शिवनन्दन महाराज की बहिन और भतीजी हैं। मैं भी वहां पंचाइत में बुलाया गया था। धाम वाले बड़े धर्मात्मा लोग हैं। यह गरीबों और अनाथों की मदद करते हैं। यह न होते तो बेचारी श्यामा को कौन पूछने वाला था। उसके भाई ने उसकी जायदाद लेकर जबरदस्ती घर से निकाल दिया था। धाम वालों ने मदद की। न मुकदमा बाजी हुई न अदालत हुई। सब को समझा बुझाकर राजी कर लिया।"

शिवनायक बूढ़ा आदमी था। उसकी बात का सब ने

विश्वास कर लिया। फिर यह शिकायत जाती रही।

मनोरमा और सोमदत्त स्त्री पुरुष बन गये! रविदत्त और रुक्मिणी को लक्ष्मी जैसी बहू मिलने से जो खुशी हुई वह लिखने में नहीं आसकती। श्यामा के सर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया। मनोरमा ठौर ठिकाने लगी और वह नई गायें खरीद कर फिर उसी तरह दूध दही बेचने का काम करने लगी। मनोरमा के साथ न रहने से अब वह रात के सत्संग में भी बराबर हाजिर होने लगी।

शादी के पीछे रविदत्त मिरजापुर चला गया। उसके मुख्तार आम ने मिलते ही यह खबर दी कि अकोढ़ी वाले शिवनन्दन ने मिरजापुर की अदालत में उस पर नालिश दायर कर दी है। अदालत से सम्मन भी जारी हो गया है जिसे उसने दस्तखत करके ले लिया है।"

रविदत्त हँसा—नालिश किस बुनियाद पर हुई है?"

उमाशंकर मुख्तार आम ने कहा—"नालिश में बिनाय मुखासमत् यह दिखलाई गई है कि रविदत्त ने शिवनन्दन के साथ इकरार किया था कि सोमदत्त की शादी उसकी लड़की से करेगा। यह मुआहदा (इकरार) तोड़ दिया गया। उसने पांच हजार रुपये का दावा किया है।"

रविदत्त मुसकराया—"अच्छा है। जो होगा देख लिया जायगा। घबराने कोई बात नहीं है।"

छटवाँ भाग

पहिला अध्याय

मुकद्दमा

जेठ चलते ही शिवनन्दन का पुरोहित रविदत्त के घर आया! आने का कारण यह था कि विवाह की तारीख जल्द नियत की जाय और वह बरात ले जाने की तैयारी करे। महल्ले वालों से पता लगा कि रविदत्त लड़के की शादी करने दूसरी जगह गया हुआ है उसके होश उड़े क्योंकि रविदत्त मोटा आसामी था। उसे उससे बहुत कुछ माल हाथ आने की आशा थी। उसने जिस वक्त अकोढ़ी में जाकर खबर दी, शिव नन्दन के तलावों में आग लग गई। इसमें उसने अपनी हँसी और बदनामी समझी। वह कई दिनों पीछे आप मिरजापुर आया। बासलीगंज में रहने वाले कचहरी के अमले उसके जान पहिचानी थे। धाम मिरजापुर से सात कोस पर है। जब वह मुहल्ले में जाकर पूछने लगा, लोग उसके साथ हँसी करने लगे "महाराज। आप किस खयाल में हैं! सोमदत्त का विवाह तो हो गया। अब कहीं और जगह जाकर लड़की के लिये बर ढूंढ़िये।" उसके परेशान करने के लिये यह खबर काफी थी। मुकद्दमाबाजी उसकी घुट्टी में पड़ी थी! आव देखा न ताव वकीलों से मिला नालिश करने की राय ली। फिर क्या था अर्जी दावा दाखिल हुआ और उसी दिन सम्मन जारी कराया गया।

रविदत्त ने सम्मन को देखा। अपने वकील बाबू भगवान

परसाद बी. ए. को बुला भेजा। उन से सारा हाल कह सुनाया। यह मिरजापुर के बहुत मशहूर वकीलों में से थे। सुन कर चकित हुये और यह सलाह दी कि शिवनन्दन को बुलाकर समझा दिया जाय क्योंकि ऐसी बातों के लिये अदालत में जाना दोनों फरीकों की बेआबरूई करना है। उन्होंने शिवनन्दन के वकील को भी बुलाकर समझाया। उसने उसे बुलाया लेकिन वह राजी नहीं हुआ। यही कहता रहा कि चाहे जो कुछ हो रविदत्त को सजा जरूर मिलनी चाहिये। मजबूरी बुरी होती है। लाचार होकर बाबू भगवानदास वकील ने वकालत नामे पर दस्तखत कर दिये और मुकदमा की पैरवी के लिये तैयारी करने लगे।

पहिली पेशी के दिन बयान तहरीरी दाखिल हुई। दूसरी पेशी के दिन अदालत ने फरीकैन का बयान लेकर तनकीह कायमकी—"आया रविदत्त ने शिवनन्दन के साथ यह मुआहिदा किया था या नहीं कि वह अपने लड़के सोमदत्त की शादी उसकी लड़की से करेगा।"

बाबू भगवान परसाद ने इकरार किया कि ऐसा मुआहिदा (करार) हुआ था और इसी जेठ में शादी करने का वाइदा भी कर लिया गया था।

यही एक तनकीह काफी थी। मिस्टर रुस्तम जी पारसी मिरजापुर के सब जज थे। उन्होंने भी फरीकन को यही सलाह दी कि आपस में सुलह कर ली जाय। लेकिन शिवनन्दन कब मनाने वाला था! रविदत्त को मुआहदे से इन्कार तो था नहीं। वह समझ बैठा था कि जब मुआहदे को तसलीम कर लिया गया है तो फिर उसकी जीत में क्या सन्देह है! वह राजी नहीं हुआ।

अदालत के काम में बड़ी तवालत होती है। कई पेशियां

हुई। कोई बात ठीक नहीं हुई! आखरी पेशी में बाबू भगवान परसाद ने जिरह के लिये शिवनन्दन के असालतन हाजिर होने की दरख्वास्त दी। वह हाजिर हुआ। खुशी से फूला नहीं समाता था। जब मुकदमा इजलास में पेश हुआ वकील ने सवाल करने शुरू किये।

—०—

दूसरा अध्याय

वकील की जिरह

बाबू भगवान परसाद वकील - "जो बात पूछी जाती है सच सच कहोगे?"

शिवनन्दन—"अदालत ने पहिले ही कानून के मुताबिक मुझ से हलफ ले लिया है। मैं झूठ न कहूँगा।"

वकील—"तुम कहते हो मेरे मौक्किल ने तुम्हारे साथ यह मुआहदा किया है कि अपने लड़के सोमदत्त के साथ तुम्हारी लड़की की शादी करे।"

शिवनन्दन—"ऐसा ही करार हुआ था और जेठ में शादी होने वाली थी।"

वकील - "यह मुआहदा जुबानी था या तहरीरी था?"

शिवनन्दन—"जुबानी और तहरीरी दोनों हो था। रविदत्त का खत अर्जीदावा के साथ पेश कर दिया गया है।"

वकील—"तुम ने अपनी लड़की का नाम रविदत्त को बताया था?"

शिवनन्दन—"नहीं! लड़की के नाम बताने का दस्तूर नहीं है।"

वकील—"तुम ने यह नालिश क्यों की ?"

शिवनन्दन—"रविदत्त ने मुआहदे को तोड़ दिया।"

वकील—"किस तरह ?"

शिवनन्दन—'रविदत्त ने और किसी की लड़की के साथ शादी कर ली।"

वकील—"इसका सबूत क्या है ?"

शिवनन्दन—मुहल्ले वालों की गवाही, पुरोहित नाई का बयान।"

वकील—"तुम अपनी लड़की को पहिचानने दो ?"

शिवनन्दन हँसा—"क्यों नहीं पहिचानता ! मेरी लड़की और मैं न पहचानूँ। कैसे हो सकता है !"

वकील—"क्या लड़की अदालत में तलब की जाय।"

शिबनन्दन—"नहीं ! यह नहीं मंजूर है।"

वकील—"लड़की का अदालत में आना जरूरी है।"

शिवनन्दन ने अदालत से कहा—"हुजूर ! यह जबरदस्ती है। परदानशीन लड़की अदालत में नहीं आसकती, ऐसे सवालों से मेरी बेइज्जती की जा रही है।"

सबजज—"वकील साहेब ! अदालत ऐसी इजाजत नहीं दे सकती।"

वकील—'अदालत को ऐसी इजाजत देनी पड़ेगी। यह मेरे मौक्किल की दरख्वास्त है।

सबजज—"कभी नहीं। इसकी जरूरत नहीं है !"

वकील—"जरूरत है और सख्त जरूरत है।"

सबजज—"किस तरह ?"

वकील—"मेरे मौक्किल ने अपने लड़के की शादी मुद्दई की लड़की से की और वह शादी इसी जेठ में हुई है। मेरे मौक्किल ने खर्चा देकर बहुत से गवाह तलब कराये हैं। वह

समय पर हाजिर कर दिये जायेंगे। यह मुद्दई की जबरदस्ती है कि वह शादी से इन्कार कर रहा है। ऐसी हालत में लड़की आप आकर क्यों न गवाही दे !"

अदालत हैरान ! सुनने वाले दंग ! मुद्दई के वकील ने दांतों उङ्गली दबाई। सब लोगों ने समझा कि बाबू भगवान परशाद वकील बावले हो गये हैं। उनकी अक्ल ठिकाने नहीं है।"

अदालत ने मुद्दई से पूछा—"मुद्दालेह के लड़के के साथ तुम्हारी लड़की की शादी हुई या नहीं ?"

शिवनन्दन—"नहीं खुदाबन्द ! नहीं, शादी नहीं हुई। यह सरासर झूठ है। बाबू भगवान परशाद मुझे बदनाम और जलील करना चाहते हैं।"

सबजज—"बाबू भगवान परशाद ! क्या आपका मौक्किल अदालत में हाजिर है ?"

वकील - 'जी हां ! हाजिर है।"

सबजज—"उसे बुलाइये।"

रविदत्त हाजिर किया गया।

सबजज—"क्यों रविदत्त ! तुम ने अपने लड़के की शादी शिवनन्दन की लड़की के साथ की ?"

रविदत्त—"जो हुजूर ! शादी शिवनन्दन की लड़की ही के साथ की गई है।"

रविदत्त बहुत बड़ा रईस, इलाकेदार और मशहूर आदमी था। अदालत भी उसे जानती थी। अदालत को पूरा पूरा विश्वास था कि रविदत्त कभी झूठ न बोलेगा।"

सबजज - 'आज जिरह ने अदालत का बहुत वक्त ले लिया कल फिर यही मुकदमा पेश होगा। फरीकैन के गवाह अगर हाजिर हैं तो कल पेश किये जांय, यह अजीब मुकदमा है।"

तीसरा अध्याय

वकील की जिरह

दूसरे दिन फिर मुकदमा पेश हुआ। फरीकैन हाजिर हुये। शिवनन्दन के गवाह तो नहीं आये। उसने उन्हें उस दिन पेश करना मुनासिब नहीं समझा। रविदत्त के गवाह सबके सब हाजिर थे लेकिन जानबूझ कर वहां से दूर हटा दिये गये। शिवनन्दन फिर विटनैस बौक्स (Witness Box) में आया। वकील ने जिरह शुरू की।

वकील—"शिवनन्दन! तुम शादी से इन्कार करते हो। मेरा मौक्किल इकरार कर रहा है। बात क्या है?"

शिवनन्दन—"वह झूठ बोलता है।"

वकील—"तुम्हारी स्त्री तुम्हारी लड़की को पहिचानती है?"

शिवनन्दन—'यह कैसा सवाल किया जा रहा है?"

वकील—'सवाल तो ठीक है जवाब में गोल माल किया जा रहा है। तुम्हारी बीवी को भी अदालत में गवाही के लिये मुझे तलब कराना पड़ेगा।"

शिवनन्दन—"कभी नहीं।"

वकील—"मामला बहुत नाजुक है। अदालत पर साबित कैसे होगा कि तुम झूठा मुकदमा चला रहे हो?"

सबजज—"बाबू भगवान परशाद! फरीकैन इज्जतदार आदमी हैं। औरतों के तलब करने की क्या जरूरत है?"

वकील—"मेरा मौक्किल फजूल ही परेशान और बदनाम किया जा रहा है। उसकी तरफ अदालत की नजर होनी चाहिये।"

सबजज "क्या रविदत्त को मजूर है कि उसके बेटे की बहू अदालत में पेश हो ?"

वकील—"अगर अदालत हुक्म दे तो उसे कभी इन्कार न होगा।"

सबजज—"शिवनन्दन ! फिर तुमको क्यों इन्कार है ?"

शिवनन्दन गहरे सोच विचार में पड़ गया। अन्त में उसे कहना ही पड़ा कि अदालत का हुक्म होगा तो वह हाजिर हो जायगी !"

वकील—'तुम्हारी बीबी इस समय यहां मौजूद है ?"

शिवनन्दन—"अदालत में मेरी स्त्री का क्या काम ! वह विन्ध्याचल दर्शन करने आई थी। वासलीगंज में मेरे डेरे पर है।"

वकील—"लड़की भी यहीं है ?"

शिवनन्दन—"वह भी अपनी मां के साथ आई हुई है।"

वकील—"फिर तलब क्यों न की जाय ?"

सबजज साहब नहीं चाहते थे कि बड़े घरों की बहू बेटियां अदालत में तलब की जाँय। पारसी था तो क्या हुआ ! हिन्दुस्तानी तो था। परदे के रस्म को समझता था और जब रविदत्त को इन्कार नहीं था तो फिर उसकी समझ में शिवनन्दन को क्यों इन्कार होना चाहिये। उसने थोड़ी देर के लिये मुकदमा मुलतवी कर दिया। शिवनन्दन की स्त्री और रविदत्त के बेटे की बहू की तलबी का हुक्म खास तौर पर दिया गया। थोड़ी देर के लिये दूसरा मुकदमा पेश किया गया।

अदालत की कोठी से वासलीगंज दूर नहीं था। आदमी गये औरत और लड़की दोनों चली आईं। इधर से रविदत्त की पुत्र बधू (मनोरमा) स्त्री और श्यामा मोटर पर सवार होकर आगईं। अदालत ने सुना फिर यही मुकदमा पेश किया गया।

औरतों के लिये अदालत को खास इन्तजाम करना पड़ा।

अदालत के हुक्म से शिवनन्दन की स्त्री और रविदत्त की बहू दोनों पेश हुईं। श्यामा भी साथ साथ आई। मनोरमा इजलास के सामने आई।

वकील (बाबू भगवान परशाद) ने शिवनन्दन से पूछा 'पहिचानो! यह तुम्हारी लड़की है या किसी दूसरे की है?"

शिवनन्दन ने गहरी दृष्टि से देखा। सूरत शक्ल उसकी स्त्री से बहुत कुछ मिलती जुलती थी और बड़े मजे की बात यह थी कि उस समय अदालत के कमरे में तीन औरतें (शिवनन्दन की स्त्री, उसकी कुआरी लड़की कमला और मनोरमा) करीब करीब हम शक्ल थीं।

शिवनन्दन ने कहा—'हुजूर! यह मेरी लड़की नहीं है। मेरी लड़की वह है जो मेरी स्त्री के साथ खड़ी हुई है।"

वकील—"अब शिवनन्दन की स्त्री पहिचाने जिसमें अदालत को दूध का दूध और पानी का पानी अभी अभी मालूम होजाय। शिव नन्दन हलफ लेने पर भी अदालत के सामने झूठ बोल रहा है।"

सुलोचना (शिवनन्दन की स्त्री) ने मनोरमा के साथ श्यामा को खड़ी हुई देखा। उसके दिल में तरह तरह के ख्याल उमड़ने लगे। वह अपने आपको सँभाल न सकी। अदालत का भी उसे ध्यान नहीं रहा। वह एक दम झपटी और मनोरमा के गले से चिपट गई—"हाय मेरी बेटी! मैं तेरे लिये सालों से तड़प रही हूँ।"

मां बेटी दोनों जोर के साथ रो उठीं। रुस्तम जी की आंखों में भी पानी भर आया! शिवनन्दन दिल का कड़ा तो था लेकिन वह भी न सँभल सका। उसे पूरा पूरा विश्वास होगया

कि वह उसीकी लड़की है। अदालत को अब शक सुबहा करने की गुनजाइश नहीं रही।

रुस्तम जी—"इस मुकदमे में बहुत बड़ी पेचीदगी है। जब तक अदालत को सारा हाल न मालूम हो जाय तब तक रहम का वादा नहीं किया जा सकता!"

अब तो उलटे लेने के देने पड़े। वह इजलास ही पर रविदत्त के पांव पर पड़ा—'मेरा इज्जत आपके हाथ है।" उसने कहा—"घबराओ नहीं!" और वकील को आंखों से इशारा किया।

बाबू भगवान परशाद वकील को सब जज साहेब ने पास बुलाया और धीरे से पूछा—'बात क्या है?"

वकील ने एक कागज जेब से निकालकर पेश किया। वह वहीं अकोढ़ी वालों का महजर नामा (Memorial) था जो श्यामा हिन्दी में आदमियों के दस्तखत कराकर लाई थी और उसे चुपके चुपके दबी जुबान में पढ़ कर सुनाया। रुस्तम जी की तसल्ली होगई।

अदालत ने शिवनन्दन से कहा—"तुमने कई जुर्म बहुत सख्त सख्त किये हैं जो सैशन के सुपुर्द किये जा सकते हैं। तुम्हारा भलाई इसी में है कि श्यामा और रविदत्त के साथ झटपट सुलह करलो! उसे देख सुन कर तब मैं फैसला सुनाऊँगा। अगर तुमने ऐसा न किया तो देखते देखते इज्जत आबरू में बट्टा लग जायगा।"

शिवनन्दन ने इकरार किया। अदालत ने तीसरे दिन के वादे पर फैसला को टाल दिया और इजलास बरखास्त हुआ।

—:o:—

चौथा अध्याय

सुलहनामा

शिवनन्दन अपनी चौकड़ी भूल गया। वह बालबच्चों को गाड़ी पर सवार करके सीधा रविदत्त के घर पहुँचा। श्यामा और रविदत्त कचहरी से बाबू भगवान परशाद के साथ पहिले ही घर आगये थे। शिवनन्दन ने औरतों को तो बिना बुलाये हुये रविदत्त की हवेली के अन्दर जनानखाने में भेज दिया। आप फिर रविदत्त के पांव पर गिरा—"मुझ पर कृपा करो। मैं तुम्हारा मुजरिम हूँ! मेरा कसूर माफ होने के लायक नहीं है फिर भी ब्राह्मण हूँ! क्षमाकर दो।"

रविदत्त—"भाई साहब तुम मेरे समधी हो। मैं कभी तुम्हारी बेइज्जती देख नहीं सकता। क्या करूँ! तुम बुरी तरह से झकड़ गये थे वरन अदालत में जाने की नौबत ही क्यों आती!"

शिवनन्दन (श्यामा के पांव पड़ कर)—"बहिन! मेरी बदसलूकी को भूल जा! मेरी सिफारिस कर दे।"

श्यामा—"भाई! मैं तुम्हारी बुराई कभी नहीं चाहती! तुम ही मेरे बाप के खानदान के वारिस रह गये हो। मैं तो तुमको समझाने के लिये आई थी। तुमने तो एक भी नहीं सुनी।"

शिवनन्दन—"मेरी आंखों में परदा पड़ा था। मैं अहंकार में चूर हो रहा था। जन्म जन्म का पाप मेरे सर पर सवार था। समझता भी तो कैसे समझता! तू ने आखिर मुझे समझा ही दिया और बुरी तरह से समझाया।"

श्यामा—'मजबूरी थी! जब सीधी उंगुली से घी नहीं

निकलता तो उँगली टेढ़ी करनी पड़ती है। मैं इसके लिये कभी तैयार नहीं था, क्या करूं तुमने मुकदमा दायर करके आप बखेड़ा खड़ा कर दिया।"

शिवनन्दन—"तेरा कहना ठीक है। अब मेरी संभालकर, नहीं तो मैं कहीं का नहीं रहा। अब दुनिया को क्या मुंह दिखलाऊंगा।"

रविदत्त—"घबराने की कोई जरूरत नहीं है। हाकिम नेक और रहम दिल है। वह फौजदारी सुपुर्द न करेगा। जो कुछ करना धरना है आज ही हो जाय। श्यामा के साथ सुलह और सफाई हो जानी चाहिये।"

शिवनन्दन ने उसी वक्त अपने वकील को बुला भेजा। राजीनामा लिखा गया। श्यामा को जायदाद बिना किसी शर्त के उसे वापिस दी गई। दूसरे दिन सब रजिस्टरार के दफ्तर में रजिस्टरी भी हो गई। तीसरे दिन बाबू भगवान परशाद वकील रुस्तमजी से कोठी पर मिले। सारी बातों को सुन कर वह कहने लगे—"ऐसा मुकदमा तो आज तक न देखने में आया न सुनने में। यह अपने ढंग का पहिला ही मुकदमा है।"

चौथे दिन अदालत ने फैसला सुनाया। शिवनन्दन बरी होगया और अब उसकी जान में जान आई।

—:०:—

पाँचवा अध्याय

अदालत का फैसला

अदालत सबजज साहेब दह दुर मुकाम व जिला मिरजापुर

बइजलास मिस्टर रुस्तमजी साहेब सबजज मिरजापुर

मुकदमा नं० ..... सन् १९.. ...

शिवनन्दन दूबे मुद्दई

बनाम

रविदत्त मिश्र मुद्दालेह

मुद्दई और मुद्दालेह ने आपस में मुआहदा किया था कि मुद्दालेह जेठ के महीने में अपने लड़के सोमदत्त की शादी मुद्दई की लड़की के साथ करे। मुद्दई की दो लड़कियां थीं। उसने मुद्दालेह को लड़की का नाम नहीं बताया था। वह बड़ी लड़की को सोमदत्त के साथ ब्याहना चाहता था। मुद्दालेह ने उसकी छोटी लड़की से सोमदत्त की शादी करदी। यह शादी जेठ के शुरू में राधास्वामीधाम राज बनारस में की गई जिसका पता मुद्दई को नहीं था। उसी जगह उसकी छोटी लड़की को श्यामा ने पाला पोसा था जिसका पता उसे नहीं था। श्यामा शिवनन्दन की चचेरी बहिन है। मुद्दई को खयाल था कि उसकी छोटी लड़की मनोरमा मर चुकी है। जब उसने सुना कि सोमदत्त का विवाह होगया वह अपने आपे से जाता रहा। श्यामा ने उसे समझना चाहा लेकिन उसने उसकी एक बात नहीं सुनी। उसे घर से निकाल दिया और रविदत्त के ऊपर पांच हजार की नालिश मेरी अदालत में दायर कर दी। तनकीह सिर्फ मुआहदा और उसके टूटने की बाबत हुई। मुद्दालेह ने मुआहदे को तसलीम किया और शादी कर देने का भी इकरार किया। मुद्दई गुस्से की हालत में अपने होश में नहीं था। बाबू भगवान परशाद वकील की जिरह और शिवनन्दन की बीवी की गवाही से यह साबित होगया कि मनोरमा मुद्दई की हकीकी और असली लड़की है। जब मुद्दई की समझ में यह बात आगई उसने इजलास पर मुद्दालेह के पांव पर गिरकर माफी मांगी।

शिवनन्दन ने इस मुकदमे का अनसमझी से चलाया था। उसी का कसूर था। इसलिये फैसला किया जाता है कि दावा मुद्दई डिसमिस हो। मुद्दई मुद्दालेह का खर्चा अदा करे। गलत और झूठे मुकदमे से मुद्दालेह को बदनामी के सिवा सख्त तकलीफ हुई इसलिये मुद्दई पांच हजार रुपये बतौर हरजा रविदत्त को अदा करे। इसका आधा हिस्सा मनोरमा को मिलेगा। परदा नशीन औरतों का अदालत में बुलाया जाना मुझे पसन्द नहीं था लेकिन ऐसा न करने से इनसाफ का खून हो जाता, इसलिये इन्हें तलब करना पड़ा।

दस्तखत रुस्तम जी
सब जज
ता.....मई सन् १६.....

दः हरनन्दन परशाद वकील मुद्दई
दः भगवान परशाद वकील मुद्दालेह

—:o:—

सातवाँ भाग

पहला अध्याय

महजरनामा

पढ़ने वालों को विश्वास तो होगया कि मनोरमा शिवनन्दन की लड़की है लेकिन अबतक यह बात साफ साफ नहीं मालूम हुई कि यह क्या रहस्य था। इसलिये श्यामा के महजरनामे (memorial) की नकल यहां करदी जाती है। इससे सारी बातें खुल जायेंगी।

नकल महजरनामा
(memorial)

ता०···माह ····सन् १६ को शिवनन्दन के घर लड़की पैदा हुई जिसका नाम मनोरमा था। ज्योतिषियों ने लग्न और जन्मपत्र देखकर शिवनन्दन को समझाया कि लड़की बड़ी बुरी साइत में पैदा हुई है . अगर यही जीती रही तो सारा खानदान नाश होजायगा। शिवनन्दन चाहता था कि लड़की को किसी तरह मार डाले लेकिन उसकी स्त्री उसे छुपाये छुपाये फिरती थी श्यामाने सुना, दौड़ी आई और शिवनन्दन से कहने लगी—"मेरी कोई औलाद नहीं है। अपनी छोटी लड़की मुझे दे दो। मैं इसे पाल पोस कर अपनी लड़की की तरह रक्खूंगी।" वह सोच विचार में पड़ गया। श्यामा ने ... उसे समझा बुझा कर राजी करके लड़की लेली ... के बहाने अकोढ़ी चली आई। जाते वक्त ...ज यदाद शिवनन्दन को सपुर्द करदा। ... को पूरा पूरा पता है। शिवनन्दन ने

का विवाह किसी ब्राह्मण से करा दिया जाय और यह लड़का श्यामा की सारी जायदाद का मालिक बने। शिवनन्दन ने श्यामा के साथ बदसलूकी की। वह उसका मुंह तक देखना पसन्द नहीं करता था। आने पर श्यामा शिवनन्दन से मिली लेकिन उसने उसे अपने घर में ठहरने तक नहीं दिया न उसे खाने पीने के लिये पूछा। शिवनन्दन की नीयत ठीक होती तो ऐसा कभी न करता। श्यामा रामनाथ ब्राह्मण की लड़की है। बड़ी ही नेक, सुशील और धर्मात्मा है। बचपन से लेकर आजतक किसी के साथ उसकी अनबन नहीं हुई!

यह सारी बातें हम लोग पंचाइत करके लिख देते हैं कि अगर जरूरत हुई तो हम सब श्यामा और मनोरमा की मदद हर तरह से करेंगे। श्यामा ने एक लड़की की जान ब... परोपकार का काम किया है। शिवनन्दन ... उसे मार ही चुका था।

ता०... माह...मन् ...

दूसरा अध्याय

परिणाम

जब फैसला हो चुका रविदत्त के ... आया और पांच हजार की रकम ... इन्कार था। शिवनन्दन ने उसे ... का दस्तावेज श्यामा के पांव ...

श्यामा ने कहा—"भाई ... तुम इसे ले जाओ। मेरे ... मुझे मनोरमा का ध्यान ... लालच नहीं है। मालि... ठिकाने लग गई। जा... थी और न अब बनूँगी ..."

शिवनन्दन—"...

श्यामा—"... में जाकर रहूँगी ..."

शिवनन्दन— ...

श्यामा—" ... दे दो। मेरा ..."

सुलोचना ... शिवनन्दन की बड़ी ल... कमला सब की सब यहां इकट्ठी होगई थीं। लड़की के मां बाप उसकी ससुराल में नहीं जाते लेकिन संयोग वश यहां इसका निर्वाह नहीं हो सका। सब के सब श्यामा की उदारता देखकर दंग रह गये और उनकी आंखों में पानी भर आया।

सुलोचना कह उठी—"जीजी! तुम इस दुनियां की नहीं

किसी तीर्थ ...
और तीर्थ यात्री ...
उसने अपनी सारी ...
इसका हम सब लोगों ...
समझा कि परदेस और तीर्थयात्रा से यह भी ...
बचेगी और उसने बदनीयती से यह भी जायदाद ...
बहाने से उसे श्यामा की सारी जायदाद ...
जायगा। वह मनोरमा को लेकर चली गई। ...
जायदाद पर पटवारी को रिश्वत देकर अपने ...
लिया। इसे भी हम लोग जानते हैं। श्यामा ने ...
धाम के पास छनमी में रहकर मनोरमा को पा...
इसका पता हम लोगों को बराबर मिलता रहा। हम
सब बातों की गवाही देने के लिये बराबर तैयार हैं।
मनोरमा सयानी होगई। उसे लेकर श्यामा तेरा...
साल पीछे फिर अकोढ़ा में आई। वह चाहती थी कि मन...

हो ! तुम अनमोल रत्न हो। मैं तुमको सदैव से देवी समझती हूँ।"

श्यामा—"मैं अनमोल रत्न हूँ या नहीं हूँ, इसका पता नहीं लेकिन मनोरमा कीमती मोती है जो तुमको वापिस मिली है। इसके गुण अब खुलेंगे।"

रुक्मिणी मनोरमा को गोद से चिमटाकर बोली—"अब तो यह मेरा दलदार मोती है। यह मेरे नथ का मोती बनेगी। सलोचना देवी का इस पर कोई अधिकार नहीं है और न मेरे जीते जी कोई यह भूषण मुझसे छीन सकता है।"

सब लोग मिलकर खुश होगये। सास ने मनोरमा को दलदार मोती कहा था इसलिये ग्रंथकार ने भी उसका नाम दलदार मोती ही रखना पसन्द किया।

रविदत्त का घर इस पृथ्वी पर स्वर्ग धाम बना हुआ है और सब लोग हँसी खशी से जिन्दगी बसर कर रहे हैं। राधास्वामी धाम में सालाना भण्डारे के उत्सव पर जो २५ दिसम्बर को होता है यह लोग एक बार जरूर ही आते हैं और महीने दो महीने रहकर सत्संग का लाभ उठाते हैं।

—.०:—